कर्नाटक सरकार

समाज विज्ञान

हिंदी माध्यम

SOCIAL SCIENCE

Hindi Medium

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

6

छठी कक्षा

भाग - 2

कर्नाटक पाठ्यपुस्तक संघ (रजि.)
6 वा क्रॉस, मल्लेश्वरम्,
बेंगळूरु - 560 003.

अनुक्रमणिका

Z4P2P1

अध्याय क्रमांक	इतिहास	पृष्ठ संख्या
12	उत्तर भारत के कुछ राजवंश	01
13	दिल्ली के सुल्तान	33
14	विजयनगर साम्राज्य और बहमनी राज्य	43
15	मुगल और मराठा	60
16	भारतीय वैचारिकता तथा भक्ति पंथ	74
	नागरिक शास्त्र	
17	प्रजातंत्र	86
18	राज्य निर्देशक तत्व	92
19	मानव अधिकार एवं कर्तव्य	98
20	राष्ट्रीय भावैक्य	109
21	राष्ट्रीय चिह्न	114
	भूगोल विज्ञान	
22	एशिया	123
23	यूरोप	145
24	अफ्रिका	164

© CTBS NOT TO BE REPUBLISHED

इतिहास

अध्याय 12 | उत्तर भारत के कुछ राजवंश

P1B8Q7

पाठ परिचय :

मौर्य साम्राज्य भारत का पहला ऐतिहासिक साम्राज्य था और विभिन्न क्षेत्रों में इसका योगदान बहुत बड़ा था। चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक इस वंश के प्रसिद्ध सम्राट हैं। उनके जीवन और उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। कुषाण वंश के प्रसिद्ध शासक कनिष्क के योगदान का भी स्मरण किया गया है। बाद में गुप्तों में सबसे महान समुद्रगुप्त के दिग्विजय और चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में हुई शांनदार प्रगति का वर्णन किया गया है। मुसीबत के समय में हर्षवर्धन ने कैसे राज्य को बचाया और बौद्ध धर्म की समृद्धि में उनके योगदान का परिचय दिया गया है। 650 से 1200 की अवधि में कार्कोट, राजपूत और अहोम राजवंशी भारत के इतिहास में बहुत प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इस पाठ में वास्तुशिल्प और साहित्य के क्षेत्रों के लिए उनकी देन, उस काल के आर्थिक और सामाजिक जीवन का वर्णन है। वैसे ही यह राजपूत वंश के प्रमुख राजघराने जैसे गुर्जर, प्रतिहार,पाल, चौहान और गुहिलों के बारे में वर्णन करता है।

सामर्थ्य :

1. चंद्रगुप्त मौर्य, मौर्य साम्राज्य के संस्थापक और उनके गुरु चाणक्य के बारे में जानना।
2. अशोक के जीवन और उपलब्धियों को जानना।
3. मौर्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था को समझना।
4. कुषाण वंश के प्रसिद्ध शासक कनिष्क की उपलब्धियों को जानना।
5. मह ऑन गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय की उपलब्धियों को जानना।
6. उन कारकों को जानना जिनके कारण गुप्त काल को स्वर्ण युग कहा गया।
7. फ़ाहियान और ह्वेन त्सांग द्वारा देखी गई भारत की छवि को याद करना।
8. हर्षवर्धन की उपलब्धि और योगदान को समझना।
9. कर्कोटा राजवंश की उपलब्धियों को जानना।
10. प्रमुख राजपूत राजवंशों के वास्तुशिल्प और साहित्य क्षेत्रों के लिए दिये अमूल्य भेंट की प्रशंसा करना ।
11. मौर्य, कुषाण, गुप्त और वर्धन की तत्कालीन कला, साहित्य, विज्ञान, वास्तुकला जैसे क्षेत्रों में किए गए योगदान को पहचानना।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

12. अहोम वंश के शासकों की उपलब्धियों की सराहना करने के साथ-साथ कला में उनके योगदान को भी जानना।

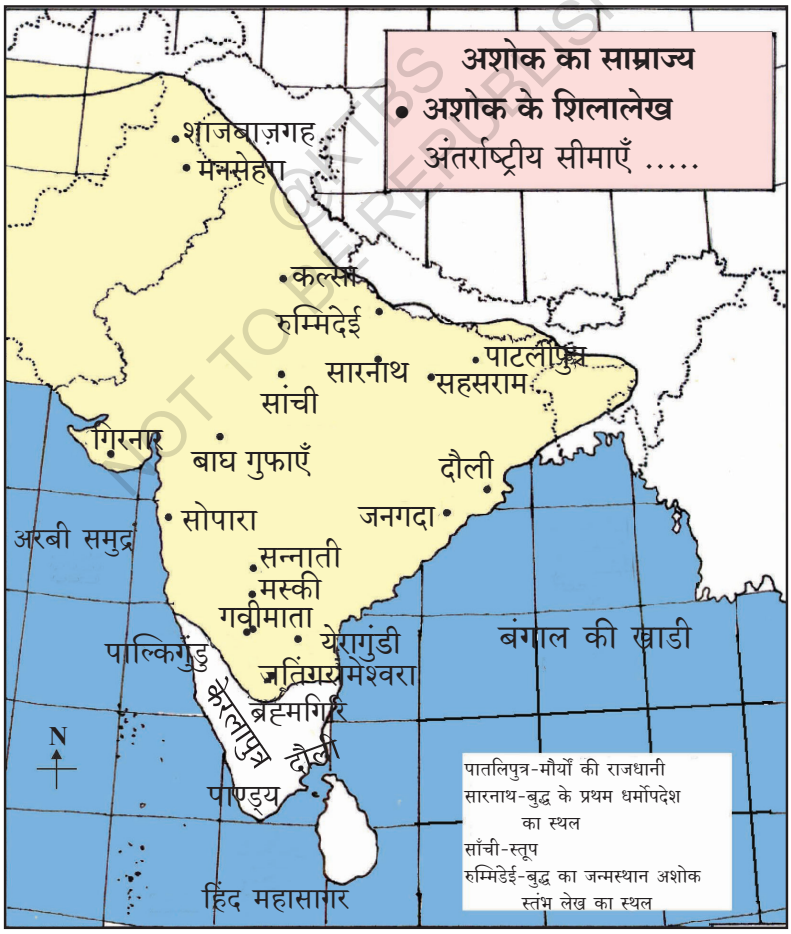
मौर्य



राष्ट्रध्वज

बच्चों, हमारे राष्ट्रीय ध्वज के बीच में एक चक्र है। क्या आप इसका नाम जानते हैं? वही अशोक चक्र । प्रगति के प्रतीक के रूप में हमारे राष्ट्रीय ध्वज में यह शामिल है। यह अशोक कौन है? वह किस परिवार से है? उस परिवार का इतिहास क्या है? अशोक का योगदान क्या था? इसकी जानकारी प्राप्त करेंगे।

भारत में पहला साम्राज्य मौर्य साम्राज्य था। इस साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था।



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

चन्द्रगुप्त मौर्य

चन्द्रगुप्त मौर्य एक साहसी युवक था। तक्षशिला के विष्णुगुप्त को नंद वंश के राजा धनानंद ने अपमान किया था। विष्णुगुप्त, जो चाणाक्ष और कुटिल चालों में माहिर थे, उनके नाम चाणक्य और कौटिल्य भी थें। उन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य को एक सैनिक और योद्धा के रूप में प्रशिक्षित किया और सेना को सुसज्जित करने में उनकी मदद की। इस समय तक धनानंद ने प्रजा का विश्वास खो दिया था और चंद्रगुप्त मौर्य उन्हें आसानी से गद्दी से हटाने में सक्षम था। इस प्रकार चंद्रगुप्त मौर्य ने 2300 वर्ष पूर्व मौर्य साम्राज्य की स्थापना की और पाटलिपुत्र (वर्तमान बिहार की राजधानी पटना) को अपनी राजधानी बनायी।

तदुपरांत चन्द्रगुप्त मौर्य ने एक विशाल सेना संगठित की और उत्तर पश्चिम भारत की ओर प्रस्थान किया। मेसेडोनिया के सिकंदर के कब्जे वाले क्षेत्रों की देखभाल उसका प्रतिनिधि सेल्यूकस करता था। चंद्रगुप्त मौर्य की सेना द्वारा पराजित होने के बाद सेल्यूकस ने उससे समझौता कर लिया। उसने न केवल अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और सिंधु के पश्चिमी क्षेत्र चंद्रगुप्त मौर्य को दिए बल्कि अपनी बेटी से विवाह भी किया। बदले में, चंद्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस को 500 हाथी भेंट के रूप में दिए। सेल्यूकस ने मेगस्थनीज नामक राजदूत को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा। मेगस्थनीज ने यहाँ के अनुभवों को अपनी कृति 'इंडिका' में दर्ज किया है।

विष्णुगुप्त या कौटिल्य, चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधान मंत्री थे। उनके द्वारा लिखित कृति 'अर्थशास्त्र' राजनीति से जुड़े कई तथ्य बताती है। यह विश्व प्रसिद्ध कृति सबसे पहले मैसूर के ओरिएंटल लाइब्रेरी के संग्रह में हस्तप्रति मिली थी। शामाशास्त्री नामक विद्वान ने इसकी खोज की थी।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। अपने अंतिम दिनों में उन्होंने अपने पुत्र बिंदुसार को राजगद्दी सौंप दी और जैन यति के साथ कर्नाटक आ गये। बिंदुसार ने वर्तमान हासन जिले के श्रवणबेलगोला में सल्लेखन नामक कठिन व्रत लेकर देहत्याग किया। बिंदुसार ने लगभग 25 वर्षों तक शासन किया।

© KTES NOT TO BE REPUBLISHED

सम्राट अशोक

बिन्दुसार का उत्तराधिकारी उसका पुत्र अशोक बना। विश्व के इतिहास में उनका अद्वितीय स्थान है। वह पहला शासक था जिसने सारी प्रजा मेरी संतान के समान है कहकर शासन को प्राथमिकता दी।

अशोक के शिलालेख : अशोक के सैकड़ों शिलालेख पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैले हुए हैं। ये शिलालेख मुख्यतः ब्राह्मी लिपि और प्राकृत भाषा में पाए जाते हैं। कर्नाटक में नौ स्थानों पर अशोक के 17 शिलालेख मिले हैं। इनमें रायचूर जिले का मस्की शिलालेख सबसे महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसी शिलालेख में अशोक का नाम पहली बार आता है। उस समय तक के शिलालेखों में केवल 'देवानामप्रिय, प्रियदर्शी' ही था। मस्की शिलालेख में लिखा है 'देवानामप्रिय प्रियदर्शी अशोक'। इसके कारण अशोक स्वयं', 'देवानामप्रिय प्रियदर्शी' कहलाये। अशोक के शिला-लेखों से हम उसके जीवन, उपलब्धियों और उसके साम्राज्य के विस्तार के बारे में जान सकते हैं।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



अशोक का उभार शिल्प, कनगनहल्ली



अशोक का शासन, सन्नति

ज्ञात रहे :

आज से 180 साल पहले जेम्स प्रिंसेप नाम के एक ब्रिटिश अधिकारी ने पहली बार अशोक के शिलालेख पढ़े थे। इसे पहले किसी ने नहीं पढ़ा था। छठीं शताब्दी के पहले, दिल्ली के सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुगलक ने अशोक के शिलालेखों को पढ़ने की असफल कोशिश की थी।

कलिंग युद्ध : अशोक ने अपने राज्यारोहण के आठवें वर्ष में कलिंग साम्राज्य पर युद्ध की घोषणा की। यह उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना थी। कलिंग राज्य, जो वर्तमान ओडिशा राज्य का हिस्सा है, पर अशोक ने युद्ध किया था। युद्ध में हजारों लोगों की जान चली गयी और एक लाख लोग घायल हो गये। डेढ़ लाख शत्रु सैनिक पकड़ लिये गये। युद्ध के मैदान में मृत्यु और पीड़ा के भीषण दृश्यों को देखकर अशोक द्रवित हो गये। इससे व्यथित होकर अशोक ने उसी क्षण से युद्ध न करने का निर्णय लिया। विश्व के इतिहास में ऐसा कोई सम्राट नहीं हुआ जिसने इस प्रकार अपना मन बदला हो। युद्ध के मार्ग को छोड़कर धर्म के मार्ग पर चलने वाले सम्राट अशोक को महाशय कहकर सम्मानित किया जा रहा है।



राहतों में युद्ध के दृश्य (कनगनहल्ली)

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

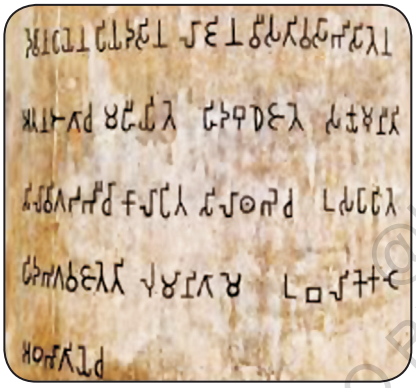
गतिविधि : कर्नाटक में अशोक के शिलालेख पाए गए स्थानों की सूची बनाइए।

धर्म प्रसार: अशोक बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुआ और उसने इसे अपना लिया। उसने लोगों को धर्म का संदेश दिया। गुरु, बड़ों और माता-पिता का आज्ञाकारी होना चाहिए । करुणा, उदारता और सच्चाई से भरा होना चाहिए। हिंसा, क्रोध और लालच का त्याग करना चाहिए। अशोक ने पाटलिपुत्र में तीसरा बौद्ध सम्मेलन आयोजित किया। उसने बौद्ध स्तूपों का निर्माण करवाया। उसने बुद्ध के संदेशों को फैलाने के लिए विदेश में राजदूत भेजे।

मौर्य प्रशासन प्रणाली : राजा प्रशासनिक व्यवस्था का प्रमुख होता था। सारे अधिकार उसके हाथों में होते थे और राजा को सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद थी। प्रशासन के विभागों की देखभाल के लिए उच्च अधिकारी होते थे। इनमें विशेष अधिकारी होते

हैं जिन्हें 'धर्म महामात्र' कहा जाता है जो लोगों के बीच अच्छी नीति रखते हैं। वे आचरण को बढ़ावा देते थे। अनाथ व विधवाओं और बुजुर्गों के कल्याण के लिए भी जिम्मेदार थे। प्रशासन की सुविधा के लिए विशाल साम्राज्य को कई प्रांतों में विभाजित किया गया था। गाँवों में 'ग्रामिका' वहाँ के बुजुर्गों की सहायता से शासन करता था। गाँवों को भरपूर ताकत दी गई। गाँव के विवादों का निपटारा ग्रामसभा द्वारा किया जाता था। मौर्य शासन का प्रभाव उसके बाद के कई राजवंशों पर पड़ा।

वास्तुकला और मूर्तिकला : अशोक काल की कुछ वास्तुकला और मूर्तियाँ आज भी देखी जा सकती हैं। इनमें स्तूप एवं स्तंभ प्रमुख हैं। इनमें मध्य प्रदेश के साँची स्तूप और सारनाथ स्तंभ प्रसिद्ध हैं। सारनाथ स्तंभ पर चार सिरों वाला सिंह बोधि हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है।



अशोक का शिलालेख



सांची स्तूप (मध्य प्रदेश)



सारनाथ स्तंभ

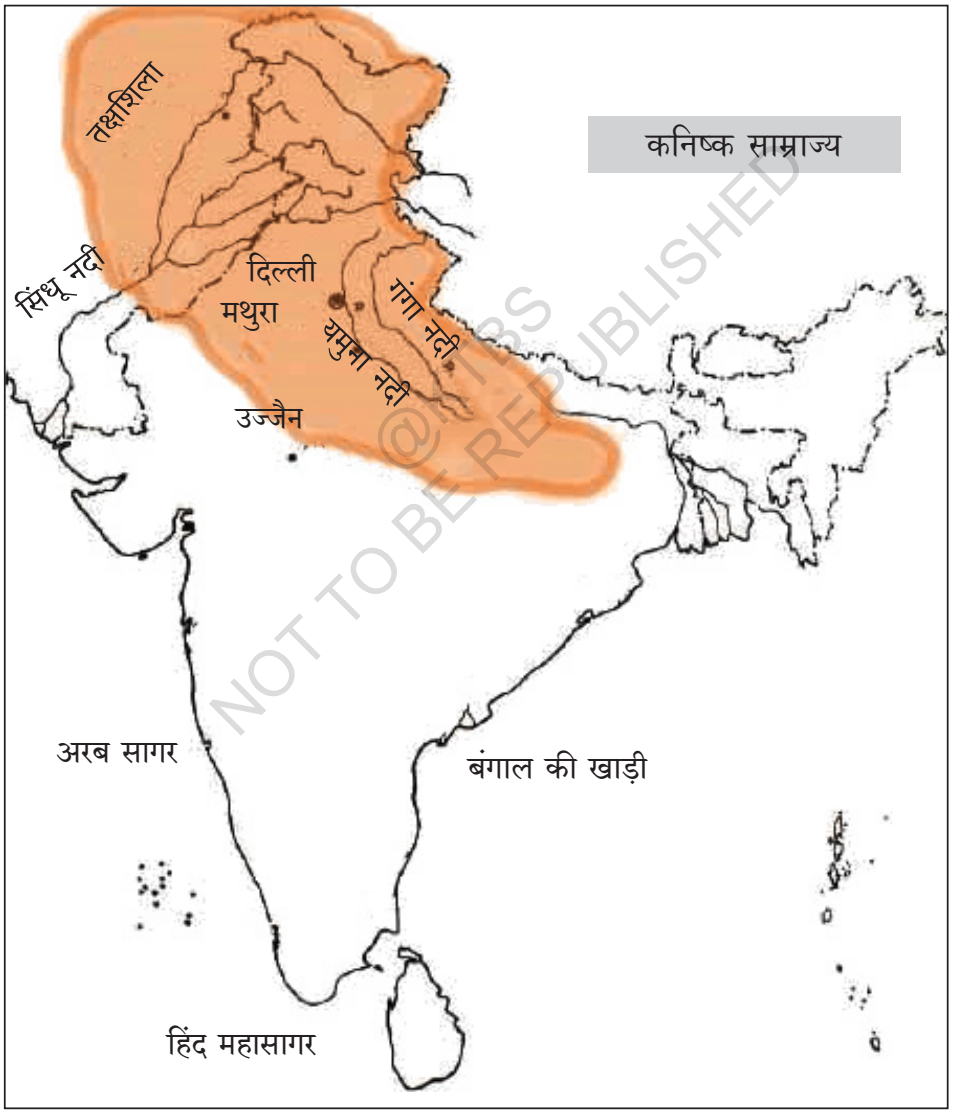


राष्ट्रीय प्रतीक

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

कुषाण

लगभग 2000 साल पहले, कुषाण राजवंश ने गांधार (अब अफगानिस्तान) क्षेत्र पर शासन किया था। समय के साथ भारत के कुछ हिस्सों पर कुषाणों ने कब्ज़ा कर लिया। कुषाणों में कनिष्क सबसे प्रसिद्ध राजा था। उसने दीर्घकाल तक युद्ध किया और अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उत्तर भारत में उसका साम्राज्य अफगानिस्तान से लेकर बिहार तक फैला हुआ था।



कनिष्क साम्राज्य का मानचित्र

@NIOS NOT TO BE REPUBLISHED

कनिष्क : बौद्ध धर्म के अनुयायी कनिष्क ने भी सम्राट अशोक की तरह कई स्तूप बनवाये। उसने बौद्ध प्रचारकों को विदेश भेजा। इसके अलावा, उन्होंने कश्मीर में चौथी बौद्ध महासभा का आयोजन किया। कनिष्क ने अपने सत्ता में आने के उपलक्ष्य में शक (शालिवाहन शक) वर्ष की शुरुआत की। आज भारत सरकार का आधिकारिक कैलेंडर वर्ष है।

वास्तुकला एवं मूर्तिकला: कनिष्क ने अनेक स्तूपों का निर्माण करवाया। उन्होंने पुरुषपुर (वर्तमान पेशावर) में जो स्तूप बनवाया, उसमें तेरह मंजिला मीनार थी। मीनार 400 फुट ऊँचा था और उस समय का एक अद्भुत था।



गांधार शैली की बुद्ध प्रतिमा, पेशावर



कनिष्क के पत्थर की मूर्ति का सिर नष्ट कर दिया गया है

© KTBS TO BE REPUBLISHED

कनिष्क एक कला संरक्षक थे। उन्होंने विभिन्न देशों से कलाकारों को आमंत्रित किया। परिणामस्वरूप विभिन्न कला शैलियों का मिश्रण हुआ और गांधार तथा मथुरा नामक नई शैलियों का जन्म हुआ।

कनिष्क के एक पत्थर की मूर्ति तो मथुरा में मिली है। इसका सिर नष्ट हो गया है और नीचे कनिष्क का नाम खुदा हुआ है। अनेक कुषाणकालीन सिक्के मिले हैं। वह भारत में सोने के सिक्के प्रचलन में लाने वाले पहले व्यक्ति थे।

साहित्य : कनिष्क ने विद्वानों और साहित्यकारों को आश्रय दिया था जिनमें अश्वघोष प्रमुख थे। उन्होंने संस्कृत में 'बुद्ध चरित' नामक ग्रंथ की रचना की है।

कनिष्क के दरबार में नागार्जुन एक महान दार्शनिक और वैज्ञानिक थे। वसुमित्र एक विद्वान और कश्मीर में आयोजित चौथी बौद्ध महासभा के अध्यक्ष थे। कहा जाता है कि चरक , कनिष्क के समकालीन चिकित्सक थे। उन्होंने चरक संहिता नामक ग्रंथ लिखा।

नये शब्द:

राजदूत	एक देश से दूसरे देश में भेजा गया राजदूत या प्रतिनिधि।
साम्राज्य	एक विशाल राज्य
जासूस	एक गुप्त खोजकर्ता
शिलालेख	चट्टानों पर खुदे लेख
स्तूप	बुद्ध के शरीर के अवशेष (दांत, हड्डी आदि) को एक कलश में रखें। कलश के चारों ओर एक अर्धगोलाकार संरचना बनी हुई है।

NOT TO BE REPUBLISHED © KTBS

ज्ञात रहे :

- अशोक ने न केवल विभिन्न राज्यों में बल्कि बर्मा (म्यांमार), श्रीलंका, मिस्र, पश्चिम एशिया और पूर्वी यूरोप में भी बौद्ध राजदूत भेजे। अशोक के पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा श्रीलंका गये। महादेव नामक एक धर्म प्रचारक कर्नाटक के मैसूर (तब के महिषमंडल) में आए और रक्षित उत्तर कन्नड़ जिले के बनवासी में आए।

- वास्तुकला भवन निर्माण की कला है। मूर्तिशिल्प मूर्तियाँ बनाने की कला है। अशोक के शासनकाल के दौरान, वास्तुशिल्प निर्माण के लिए लकड़ी और ईंटों के बजाय पत्थरों का उपयोग किया गया था। यही कारण है कि मौर्यकालीन वास्तुशिल्प और मूर्तियाँ आज तक जीवित हैं।
- कर्नाटक के रायचूर, कोप्पला, चित्रदुर्ग,बल्लारी और गुलबर्गा जिले में अशोक के शिलालेख हैं। मस्कि (रायचूर जिला) शिलालेख में अशोक को देव-ानामप्रिय' एवं 'प्रियदर्शी' कहा गया है।
- 2300 वर्ष से भी अधिक पुरानी मौर्य शासन प्रणाली की झलक भारत की वर्तमान शासन व्यवस्था में देखी जा सकती है। प्रशासन के वर्तमान स्तर हैं: केंद्र, राज्य, विभाग, जिले, तालुका, कस्बा और गाँव।
- आयुर्वेद प्रणाली, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई, आज भी सबसे लोकप्रिय चिकित्सा प्रणाली है। संयुक्त राष्ट्र ने इसे मान्यता दी है। इस प्रणाली का उपयोग अन्य देशों में भी बढ़ रहा है।

@KTDS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उचित शब्दों से भरिए :-

1. सेल्यूकस द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा गया एक राजदूत । _____
2. सारी प्रजा अपनी संतान के समान है, कहने वाला सम्राट । _____
3. हमारा राष्ट्रीय चिह्न । _____
4. कनिष्क के सत्ता में आने का स्मरणोत्सव वर्ष की शुरुआत की। _____

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-

5. मौर्य साम्राज्य का संस्थापक कौन था?
6. मौर्यों की राजधानी कौन सी थी?

7. कौटिल्य ने कौन सी पुस्तक लिखी थी?

8. मेगस्थनीज द्वारा लिखित ग्रंथ का नाम क्या है?

9. धर्म महामात्रों की गतिविधियाँ क्या थीं?

10. कनिष्क ने बौद्ध महासभा का संचालन कहाँ किया था?

III. समूह में चर्चा करें और उत्तर दें :-

11. कलिंग युद्ध के महत्व के बारे में लिखिए।

IV. सूची 'अ' और सूची 'ब' की विचारों का मिलान करें और लिखें।

अ	ब
1. अशोक	(अ) मणिपुर
2. कनिष्क	(आ) बुद्धचरित
3. अश्वघोष	(इ) कलाकेंद्र
4. गांधार	(ई) देवानाम्प्रिय

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

गतिविधियाँ

* मौर्यकालीन वास्तुकला और मूर्तियों के चित्र जानकारी सहित एकत्रित करें। एक एलबम बनाइए।
* कर्नाटक में उन स्थानों की सूची बनाएँ जहाँ अशोक के शिलालेख पाए जाते हैं।

गुप्त

मौर्यों के बाद गुप्तों ने साम्राज्य का निर्माण किया। गुप्त वंश भारत का एक महत्वपूर्ण राजवंश है। गुप्तों की राजधानी पाटलिपुत्र थी। समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय इस वंश के प्रसिद्ध शासक हैं।

समुद्रगुप्त

समुद्रगुप्त महा पराक्रमी था। अलहाबाद स्तंभ पर एक शिलालेख समुद्रगुप्त की महान जीत का विवरण देता है। इस शिलालेख की रचना समुद्रगुप्त का दरबारी कवि हरिसेन ने की थी। तदनुसार समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत के नौ राजाओं को हराया। उसकी अद्भुत सैन्य शक्ति को महसूस कर वहाँ के अन्य राजाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया। सुदूर अफगानिस्तान के कुशाण शासकों और गुजरात के सत्रप (शकों) ने समुद्रगुप्त की सर्वोच्चता स्वीकार कर ली।

बाद में, समुद्रगुप्त, जो दक्षिणी भारत के लिए एक अभियान पर निकले, उन्होंने दक्षिण के बारह राजाओं को हराया। उनमें से एक, काँची के राजा भी एक थे। उसने इस अभियान की स्मृति में अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया।

© SCERT NOT TO BE REPUBLISHED



समुद्रगुप्त काल के सिक्के

समुद्रगुप्त एक शिक्षापोषक थे। वह स्वयं एक कवि और संगीतकार थे, उन्होंने 'कविराज' की उपाधि धारण की थी। सिक्के मिले हैं जिनमें उन्हें वीणा बजाते हुए दर्शाया गया है। वसुबन्धु नामक वरिष्ठ बौद्ध विद्वान उनके मंत्री थे। समुद्रगुप्त के सोने के सिक्के गुप्त साम्राज्य की शक्ति, संपत्ति और वैभव को दर्शाते हैं।

चन्द्रगुप्त द्वितीय

समुद्रगुप्त का पुत्र और उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त द्वितीय युद्ध कला में निपुण था। चंद्रगुप्त ने उन सत्रपों (शकों) को हराया जिन्होंने तीन शताब्दियों से अधिक समय तक गुजरात पर शासन किया था। यह उनकी मुख्य सैन्य उपलब्धि थी। उसे 'विक्रमादित्य' की उपाधि प्राप्त थी। चन्दगुप्त ने नये प्रकार के सोने के सिक्के जारी किये। उनके दरबार में महान कवि कालिदास और अन्य प्रतिष्ठित विद्वान थे।



चन्द्रगुप्त द्वितीय के सिक्के (चित्र)

साम्राज्य आर्थिक क्षेत्र में बहुत समृद्ध था। साहित्य, मूर्तिकला, वास्तुकला, चित्रकला, विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हुईं।

फाहियान : फाहियान चीन के एक बौद्ध भिक्षु थे। वह बौद्ध धर्म का जन्मस्थल देखने की लालसा से भारत आये। यह चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान था। फ़ाहियान ने भारत के अनुभवों को अपनी कृति 'घो-को-की' में दर्ज किया है। उनके अनुसार गुप्त साम्राज्य में अपराध दुर्लभ थे। प्रशासन जनपक्षधर था। देश का यातायात सुचारू रहा।

फ़ाहियान ने कई वर्षों तक भारत में बौद्ध स्थलों का दौरा किया। वह अनेक बौद्ध धर्मग्रंथों के साथ अपने देश लौट गया। उसने उनका चीनी भाषा में अनुवाद किया।

© MTBS NOT TO BE REPUBLISHED

गुप्तों का योगदान

संस्कृत साहित्य : गुप्त काल के दौरान राजाश्रय में संस्कृत साहित्य समृद्ध हुआ । कालिदास गुप्तों के समय का महाकवि था। यह विश्व के श्रेष्ठ नाटककारों में से एक थे। वह चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार की शोभा बढ़ाने वाले नौ 'नवरत्नों' में से एक थे।इसने चार काव्यों और मौलिक नाटकों की रचना की। 'अभिज्ञान शकुंतलम' उनका श्रेष्ठ नाटक है। उन्हें 'कविकुल गुरु' के नाम से जाना जाता है।

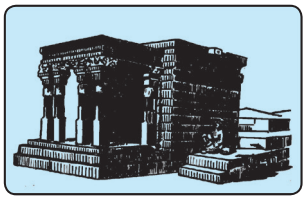
शूद्रक जिन्होंने 'मृचकटिका' लिखी और विशाखदत्त जिन्होंने 'मुद्राराक्षस' लिखी, इसी काल के हैं। विष्णु शर्मा द्वारा रचित पंचतंत्र नामक कथा संकलन इसी समय का है। अमरसिंह का शब्दकोष 'अमरकोष' एक दुर्लभ कृति है। यह आज भी प्रयोग में है।

मंदिर वास्तुशिला: हमारे देश में मंदिर का निर्माण का वास्तु गुप्त काल में शुरू हुआ ।मध्य प्रदेश का सांची का मंदिर भारत का सबसे पुराना मंदिर है। अन्य गुप्त मंदिर मध्य प्रदेश के बितरगाँव और देवगढ़ में हैं। देवगढ़ के दशावतार मंदिर में भगवान विष्णु की मूर्ति सुंदर है।

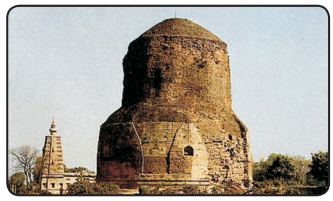
स्तूप और चैत्यालय : सारनाथ में 128 फूट ऊँचा धमेख स्तूप गुप्त काल की एक अनूठी इमारत है।

चित्रकारी :

अजंता और एलोरा में गुप्त-युग के शिलाओं को उखेर कर बनाए गए बौद्ध विहार और गुफाएँ हैं। अजंता की गुफाओं की दीवारों और छतों पर बनी चित्रकारी विश्व प्रसिद्ध है।



सांची मंदिर



धमेख स्तूप



अजंता गुफा

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान :



आर्यभट

गुप्त काल के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने जबरदस्त प्रगति की। पाटलिपुत्र के आर्यभट्ट गुप्त काल के महान गणितज्ञ थे और उनका ग्रंथ 'आर्यभटीय' है। ग्रहणों के कारण की खोज के अलावा, आर्यभट्ट ने बीजगणित और त्रिकोणमिति में महान योगदान दिया। जब वह केवल तेईस वर्ष के थे, तब उन्होंने बहुत कुछ हासिल किया। ब्रह्मगुप्त उस समय के दूसरे गणितज्ञ थे, जबकि महान खगोलशास्त्री वराहमिहिर भी उसी काल के थे।

लोह विज्ञान :



महरौली लौह स्तंभ

गुप्तकाल में लोह विज्ञान ने काफ़ी प्रगति की थी। इसका उदाहरण दिल्ली में कुतुब मीनार के निकट महरौली लौह स्तंभ है। हालांकि यह स्तंभ 1500 साल पुराना है, लेकिन इसमें जंग नहीं लगी है और यह बिल्कुल भी क्षर नहीं हुआ है। इसी काल की तांबे की बुद्ध की 8 फुट ऊँची मूर्ति नालन्दा में है।

आयुर्वेद :

गुप्त काल के वाग्भट ने 'चरक संहिता' का सार तैयार किया, वह है 'अष्टांग हृदय संहिता'। यह आयुर्वेद का एक महत्वपूर्ण शास्त्रग्रंथ है। प्राचीन भारत में शस्त्रचिकित्सा भी बहुत उन्नत थी। शस्त्र चिकित्सक 127 प्रकार के शस्त्र चिकित्सक उपकरणों का उपयोग करते थे। वे शरीर से लोहा और पत्थर निकाल लेते थे। पारे को पहली बार औषधीय उपयोग में लाने का श्रेय एक भारतीय चिकित्सक को दिया जाता है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

नए शब्द:–

खगोल विज्ञान : वह विज्ञान है जो ग्रहों और तारों जैसे आकाश कायों का अध्ययन करता है।

आपको ज्ञात रहे :

- गुप्त राजवंश की स्थापना लगभग 1600 वर्ष पहले हुई थी और इसने दो शताब्दियों से अधिक समय तक शासन किया।
- कालिदास के नाटक – अभिज्ञान शाकुंतलम, मालविकाग्निमित्र और विक्रमोर्वशीय; काव्य – रघुवंश, कुमारसंभव, ऋतुसंहार और मेघदूत।
- गुप्त काल का मंदिर शुरू में एक वर्गाकार आधार पर बनाया गया था और इसमें केवल गर्भगृह और बरामदे थे।
- भीत का अर्थ है दीवार। भित्ति चित्र दीवारों पर लिखे गए चित्र हैं। ये चित्र अजंता की बौद्ध गुफाओं में हैं। चित्रों को साधारण कुंजी से स्थानीय रूप से उपलब्ध रंगों से चित्रित किया गया था। कई शताब्दियों तक ये गुफाएँ दृश्य से छिपी रहीं। इनकी खोज 1819 में हुई थी।
- महरौली लौह स्तंभ का वजन छह टन है और इसकी ऊंचाई 23 फीट है। 19वीं सदी की शुरुआत तक यूरोप में कोई भी कुशल लोहार इस तरह का खंभा नहीं बना सका था।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास

I. रिक्त स्थान को उपयुक्त शब्द से भरिए :-

1. गुप्तों की राजधानी ..... है।
2. 'कविराज' उपाधि वाला एक गुप्त राजा ..... था।
3. मुद्राराक्षस कृति के रचयिता .....
4. महाकवि जिन्हें 'कविकुलगुरु' की उपाधि प्राप्त थी .....

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

5. इलाहबाद स्तंभलेख में किस सम्राट का विवरण मिलता है?
6. गुप्त काल में भारत की यात्रा करने वाला चीनी तीर्थयात्री कौन था?
7. कालिदास द्वारा रचित किसी एक नाटक का नाम लिखिए ।
8. 'मृचकटिका' किसके द्वारा रचित कृति है?
9. अमरसिंह द्वारा रचित शब्दकोष कौन-सा है?
10. गुप्त काल के प्रसिद्ध गणितज्ञ का नाम क्या था?

III. समूह में चर्चा करें और उत्तर दें :

11. समुद्रगुप्त की उपलब्धि का वर्णन कीजिए।
12. संस्कृत साहित्य में गुप्तों के योगदान का वर्णन किजिए।

IV. नीचे सूची 'ए' और सूची 'बी' की सामग्री का मिलान करें और लिखें :

अ	आ
1. कविराजा	(अ) घो-को-कि
2. विक्रमादित्य	(आ) खगोलशास्त्री
3. फ़ाहियान	(ई) समुद्रगुप्त
4. महरौली	(उ) द्वितीय चन्द्रगुप्त
5. वराहमिहिर	(सी) लौह स्तंभ

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

गतिविधियाँ

* भारत की प्राचीन वास्तुकला और मूर्तिकला के चित्र जानकारी सहित एकत्रित करें।
* समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य, कालिदास, आर्यभट्ट, वराहमिहिर और वाग्भट्ट की जीवनियाँ पढ़ें।

वर्धन

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत में कई स्वतंत्र राजवंशों का उदय हुआ। पुष्यभूति वंश इसमें प्रमुख था। इस वंश में शासन करने वाले राजाओं में प्रभाकर वर्धन, राजवर्धन और हर्षवर्धन प्रमुख थे। आइए हर्ष वर्धन के बारे में कुछ विचार जानेंगे ।

हर्ष वर्धन

जब हर्षवर्द्धन सिंहासन पर बैठा तब वह सोलह वर्ष का युवक था। इस समय तक उनके जीवन में कई त्रासद घटनाएँ घट चुकी थीं। हर्षवर्द्धन के पिता प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के बाद उनके बड़े भाई राजवर्धन सत्ता में आये। छोटी बहन राजश्री का विवाह कनौज में मौखरी परिवार के गृहवर्मा के साथ किया गया। मालवा के एक दुष्ट राजा ने गृहवर्मा की हत्या कर दी और राजश्री को कन्नौज में बंदी बनाकर रखा । तब राज्यवर्धन ने आक्रमण किया और मालव की सेना को हरा दिया, लेकिन गौड़ देश के शशांक ने उसे मार डाला। ऐसे कठिन समय में हर्षवर्धन सत्ता में आये।



@KSEEB NOT TO BE REPUBLISHED

अब तक बंधन से रिहा होकर उसकी बहन राज्यश्री को विंध्यपर्वत के जंगल में पाया। बाद में अपने बहनोई गृहवर्मा के मौखरी राज्य भी हर्षवर्धन के शासन में शामिल हुआ और उसे अपनी राजधानी बनाया । इसके बाद अपने भाई राज्यवर्धन की मृत्यु का जिम्मेदार शशांक पर युद्ध किया । इसके उपरांत सेना का आयोजन किया और कश्मीर तथा सिंध क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। दक्षिण भारत पर भी आक्रमण किया । दक्षिण में नर्मदा नदी तट तक आये हर्षवर्धन को कन्नड का राजा चालुक्य राजवंश के द्वितीय पुलकेशी ने हराया। कुल मिलाकर उत्तर भारत पर प्रभुत्व रखने वाले हर्षवर्धन ने करीब 40 सालों तक शासन किया चीन का यात्री ह्यूयन त्सांग हर्षवर्धन का मित्र था।

साहित्य : हर्षवर्धन न केवल योद्धा था बल्कि कवि भी था । स्वयं हर्षवर्धन ने संस्कृत में प्रियदर्शीका, रत्नावली और नागानंद नामक तीन नाटकों की रचना की। उन्होंने बाणभट्ट जैसे कवियों को भी आश्रय दिया। बाणभट्ट ने हर्षवर्धन पर 'हर्षचरित' नामक ग्रन्थ लिखा। हर्षवर्धन, जो एक शिक्षाविद् भी थे, प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय को उदारता से दान दिया।

धर्म: हर्षवर्धन सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु थे। अर्थात वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे। मूल रूप से शैव थे लेकिन बौद्ध धर्म को अपार मान्यता दिया । एकनौज और प्रयाग में सम्मेलन का आयोजन किया ।

© TBS NOT TO BE REPUBLISHED

डुएन त्सांग

डुएन त्सांग (ह्वेन त्सांग) एक प्रसिद्ध चीनी यात्री था। वह लगभग 1400 वर्ष पूर्व भारत आये थे। उन्होंने पंद्रह वर्षों तक भारत की यात्रा की और बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने नालन्दा विश्वविद्यालय में भी अध्ययन किया। वह कई वर्षों तक हर्षवर्धन के दरबार में रहा। भारत के अनुभवों को 'सी-यू-की' (पश्चिमी साम्राज्य का रिकॉर्ड) नमक यात्रा वृतांत में दर्ज किया है।



डुएन त्सांग

नालंदा विश्वविद्यालय

वर्तमान बिहार राज्य में स्थित नालंदा विश्वविद्यालय गुप्त काल से छह शताब्दियों से अधिक समय तक विश्व प्रसिद्ध था। यह प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। जापान, चीन जैसे विदेशों से हजारों छात्र यहाँ पढ़ने आते थे। यहाँ आठ बड़े शिक्षण विद्यालय और तीन विशाल पुस्तकालय थे। हालाँकि बौद्ध धर्म यहाँ अध्ययन का मुख्य विषय था, वेद, योग, वैद्य और अन्य विषय भी पढ़ाये जाते थे। कालांतर में कई हमलों के कारण विश्वविद्यालय की किताबें जला दी गईं। महापंडित चल बसे। इन सभी कारणों से नालन्दा विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा धूमिल हो गयी। हुयान त्सांग ने इस विश्वविद्यालय में कई वर्ष बिताए।



नालंदा विश्वविद्यालय

आपको ज्ञात रहे

नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा, भोजन और आवास के लिए कोई शुल्क नहीं था। इन सभी खर्चों को पूरा करने के लिए सौ गाँवों का राजस्व निर्धारित किया गया था। सम्राट हर्षवर्धन इस विश्वविद्यालय के संरक्षकों में से एक थे। विद्यार्थी जीवन कठोर था। महान विद्वान अध्यापन वर्ग में थे।

अभ्यास

I. रिक्त स्थान को उपयुक्त शब्द से भरिए :-

1. एक चीनी यात्री जो हर्ष वर्धन का घनिष्ठ मित्र था _____ .
2. डुएन त्सांग के यात्रा वृतांत का नाम _____ है ।
3. नालंदा विश्वविद्यालय वर्तमान के _____ राज्य में है ।
4. कन्नड़ शासक जिसने नर्मदा नदी के तट पर हर्षवर्द्धन को हराया था _____ ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

5. हर्षवर्धन का बड़ा भाई और छोटी बहन का नाम लिखिए।
6. हर्ष वर्धन की राजधानी कौन – सी थी?
7. 'हर्षचरित' ग्रंथ किसने लिखा ?
8. हर्षवर्धन द्वारा रचित नाटकों के नाम बताइये।
9. प्राचीन भारत का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय कौन–सा और कहाँ है?

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

कश्मीर का कार्कोट साम्राज्य :



ललितादित्य

विश्व को विस्मित करने वाले शासक, आदर्श राज्य निम र्ण कर्ता असंभव को संभव बनाने वाले भारत के राजवंशों में कश्मीर का कार्कोट घराना एक है। सा. श 625 में राजा दुर्लभवर्धन द्वारा स्थापित कार्कोट घराना उस काल का भारत के बलिष्ठ संस्थानों में से एक था। कार्कोट साम्राज्य 230 वर्ष (सा. श 625 से सा. श 855 तक) अस्तित्व में था। जो हिमालय और उसके आसपास के प्रदेशों में अपना आधिपत्य का प्रभाव डालने के साथ ही मध्य एशिया तक विस्तृत था। पारस्पोर अथवा परिहासपुर को राजधानी बनानेवाले कार्कोट सूर्य उपासक थे। कश्मीर के गत वैभव की याद दिलाने वाला प्रसिद्ध मार्तंड सूर्य देवालय इनकी देन है ।

कार्कोट वंश में अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने वाला तथा अत्यंत प्रभावी राजा ललितादित्य है। जो सा. श. 724 में सिंहासन पर आसीन हुआ। उसके 36 वर्ष तक के शासनकाल में साम्राज्य आज के उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड और बिहार तक फैला हुआ था। इसके युग को कार्कोट वंश का स्वर्ण युग माना जाता है। क्योंकि ललितादित्य ने कला, संस्कृति को अत्यधिक प्रोत्साहित किया था।

कार्कोट काल को कश्मीर के शैव सिद्धांत का अत्यंत महत्वपूर्ण काल भी कहा जाता है। वसुगुप्त ने शैवसूत्र नामक ग्रंथ की रचना की। प्रसिद्ध दार्शनिक, कवि अभिनव गुप्ता कर्कोट काल का था। शैवसूत्र के त्रिक और कौल संप्रदाय इस अवधि में उच्च स्थिति पर थे। प्रसिद्ध कवि कल्हण ललितादित्य की राजसभा में था।

© KSTB NOT TO BE REPUBLISHED

राजपूत

राजपूत, साहस और पराक्रम के लिए प्रसिद्ध थे ।वे अपने आप को क्षत्रिय और सूर्यवंशी तथा चंद्रवंशी मानते हैं। राजपूत वंश, उत्तर भारत में करीब 500 वर्ष तक शासन किया था। यह एक भव्य काल था।आक्रमणकारी के रूप में भारत आए अरब, तुर्की, अफगान और मुगलों का सामना करके, उनके विरुद्ध बहुत हिम्मत से लड़नेवाले यही थे।

राजपूतों की विशेषताएँ

भारत के इतिहास में राजपूतों का विशिष्ट स्थान है। ये गाय, अनाथ, दुर्बलों और स्त्रियों की रक्षा करना अपना धर्म समझते थे। शरणागत लोगों की रक्षा करते थे। अपने पूर्वजों के पराक्रम को गाकर प्रेरणा पाते थे।

राजपूत स्त्रियाँ बहुत धैर्यशाली थीं। यदि उनके अपने पति युद्ध में मर जाए तो अपमानित होकर जीने से मरना ही श्रेष्ठ समझती थी। इसलिए वे सामूहिक आत्मसमर्पण करती थीं। इस पद्धति को 'जौहर' कहते हैं।

कला और वास्तुशिल्प:

राजपूत काल के वास्तुशिल्प साहित्य और कला के लिए समृद्ध थे। उनके काल में निर्मित कलात्मक देवालयों को, सुंदर राज-महलों को और मजबूत किलों को आज देख सकते हैं। वैसे अनेक वास्तु कृतियाँ यहाँ पर हैं।

खजुराहो (मध्य प्रदेश) : खजुराहो में विश्वविख्यात खंडराय महादेव मंदिर है। यहाँ पर 85 मंदिर थे। उसमें आज 22 मंदिर बचे हैं।

दिलवारा (राजस्थान) : आबू पर्वत के ऊपर दिलवारा में स्थित संगमरमर मंदिर में सूक्ष्म उकेर की मूर्तियाँ जगत प्रसिद्ध है।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



खंडराय महादेव मंदिर खजुराहो (मध्य प्रदेश)



दिलवारा मंदिर आबू पर्वत

कोणार्क (उडीसा) : कोणार्क में अपूर्व सूर्य देवालय, सूर्य के रथ के समान सुशोभित है। यह देवालय भारत के भव्य और बृहद् देवालयों में से एक है। इस रथ में 24 चक्र सुंदर रूप से उकरे गए हैं।

भुवनेश्वर (उडीसा) : भुवनेश्वर में लिंगराज देवालय एक हजार वर्षों से भी अधिक पुराना है। इसका शिखर 180 फुट ऊँचा है।



सूर्य मंदिर, कोणार्क



भुवनेश्वर, लिंगराज देवालय

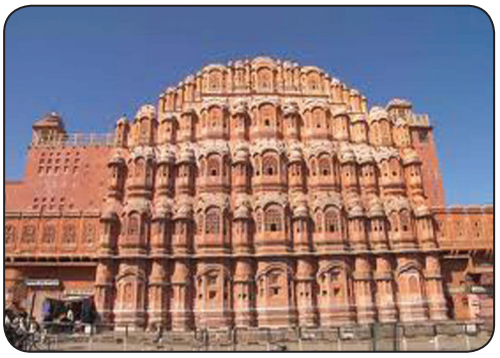
ग्वालियर (मध्य प्रदेश): बृहदाकार ग्वालियर किले को भारत के दुर्गों का कंठहार का मोती कहा जाता है। यहाँ पर राजा मानसिंह ने अपनी प्रिय रानी मृगनैना के लिए दु-मंजिला राजमहल निर्माण किया है। इसके बाहर पत्थर की दीवारों में उकेरी गई अनेक मूर्तियों में जैनमत के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की (आदिनाथ) मूर्ति बहुत ऊँची है।

जयपुर (राजस्थान) : जयपुर को गुलाबी नगर कहा जाता हैं। क्योंकि यहाँ की ईमारत का रंग गुलाबी है। जयपुर दुनिया के सुंदर नगरों में से एक है। यह प्रशंसा का पात्र है। पाँच मंजिलों का हवामहल जयपुर की आकर्षक इमारत है।

NOT TO BE REPUBLISHED



ग्वालियर का दुर्ग



हवामहल, जयपुर

उदयपुर (राजस्थान) : भारत का रमणीय नगर उदयपुर में स्थित राजमहल राजस्थान में ही बहुत बड़ा है।

चिकिणी चित्र: राजपूतों ने भित्ति और चिकिणी वर्णचित्रों को प्रोत्साहित किया। (चिकिणी चित्र का अर्थ मृदु रुप से चित्रित लघु चित्र) कलाकारों ने देवालय, राजमहल, दीवारों और पुस्तकों में अलंकारिक चित्रों को चित्रित किया है।

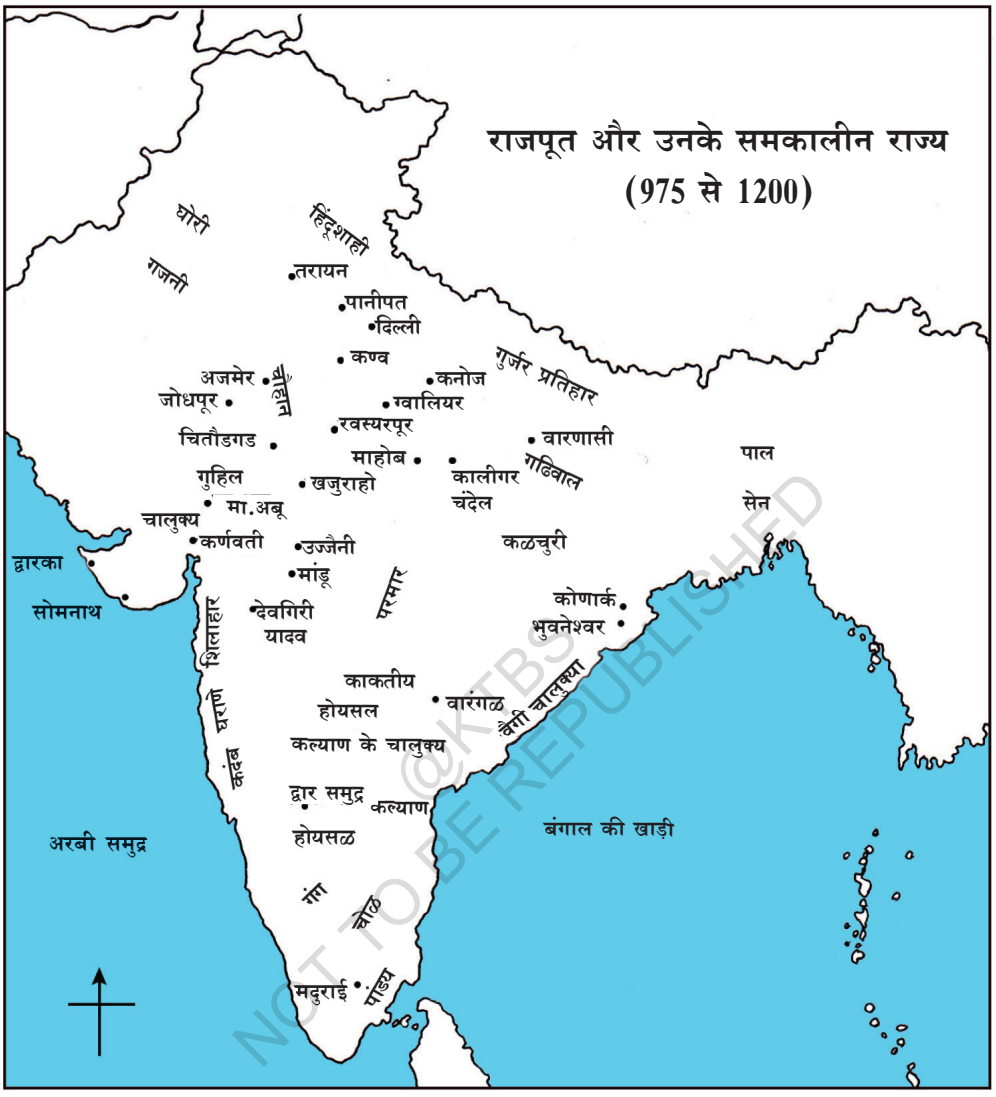


उदयपुर का राजमहल



राजपूत चिकिणी चित्र

साहित्य : राजपूतों के काल में संस्कृत साहित्य समृद्ध हुआ। गुजराती, हिंदी, राजस्थानी भाषाओं की प्रगति हुई। चंदबरदाई का पृथ्वीराजरासो इस काल की प्रसिद्ध कृति है। राजपूत राजाओं में स्वयं विद्वान थे। कवियों के आश्रयदाता थे। 'गीत गोविंद' का कर्ता जयदेव कवि सेनावंश के दरबार में थे। राजपूतों ने नलंदा, काशी, विक्रमशिला, उज्जैनी-आदि प्राचीन विद्या केंद्रों को प्रोत्साहित किया था।



@KSEBS NOT TO BE REPUBLISHED

कार्यकलाप : भारत का प्राचीन विद्या केंद्रों के बारे में अधिक जानकारी अंतर्जाल से संग्रहीत करके एक व्यौरा तैयार कीजिए।

राजपूत घराने

भारत के इतिहास में कई राजपूत घरानों की प्रमुख भूमिका है। उनमें से (1) गुर्जर प्रतिहार, (2) पाल, (3) चौहान (4) गुहिलों की उपलब्धियों को यहाँ वर्णन किया गया है।

गुर्जर प्रतिहार : गुर्जर प्रतिहार राजा मध्य प्रदेश के आवंती (उज्जैनी) से शासन करते थे। नागभाट इस वंश का प्रसिद्ध राजा था। अरबों के आक्रमण से भारत की रक्षा करने का श्रेय इसको मिलता है। इसने विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

भोज नामक राजा इस वंश के सर्वश्रेष्ठ राजा और विद्वान थे। इस काल में भारत के प्रतिष्ठित नगर कन्नौज को अपने वश में कर लिया था। बंगाल के पालों को इसने परास्त किया । इसके राज्य में आए अरब प्रवासी सुलेमान ने इसको एक प्रतिभावान राजा, अरबों का शत्रु और अच्छी अश्व सेना का निर्माता कहा है।

पाल : पाल राजवंश ने करीब 4 शताब्दी तक शासन किया था। धर्मपाल,पाल राजवंश का श्रेष्ठ राजा था। इसके काल में पाल राज्य उत्तर भारत के महान राज्यों में एक था। प्रसिद्ध नगर कन्नौज पर विजय प्राप्त करना इसकी विशेष उपलब्धि है। कर्नाटक की विजय सेना नामक राजा पाल वंश के शासन को समाप्त करके सेन वंश का शासन प्रारंभ किया।

पाल वंश बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। वे हिंदू धर्म को भी प्रोत्साहन देते थे। विद्या प्रसार कार्य में विशेष अभिरुचि दिखायी थी। उद्धंडपुर, विक्रमशिला, विद्या केंद्र इनके काल में स्थापित हुए।

चौहान : चौहानों में तीसरा पृथ्वीराज अत्यधिक प्रसिद्ध राजा था। इसकी राजधानी दिल्ली थी।

पृथ्वीराज चौहान कन्नौज के राजा जयचंद की पुत्री संयुक्ता दोनों का विवाह एक रोचक घटना है। इस घटना का उल्लेख कई ग्रंथों में विस्तार रूप से मिलता है। संयुक्ता बहुत सुंदर थी। जयचंद्र और पृथ्वीराज के बीच द्वेष की भावना थी इसलिए जयचंद्र ने अपनी पुत्री के स्वयंवर में पृथ्वीराज चौहान को आमंत्रित नहीं किया था। उसे अपमानित करने हेतु उसकी प्रतिमा बनवाकर द्वार-पालक की तरह द्वार पर खड़ा कर दिया।

© KSEEB NOT TO BE REPUBLISHED

संयुक्ता पृथ्वीराज चौहान से अनुरक्त थी। अपने स्वयंवर में आए हुए, राजपुत्रों को छोड़कर पृथ्वीराज चौहान की प्रतिमा पर हार चढ़ाया। वहीं पर छिपा बैठा पृथ्वीराज, संयुक्ता को अपने अश्व पर बिठा कर अपने राजमहल ले आया और उससे विवाह किया। इस घटना से इन दोनों घराने बीच के द्वेष और भी भडक उठा।

मोहम्मद गोरी के आक्रमणों का पृथ्वीराज चौहान ने विरोध किया। राजपूत राजावंश को एकत्रित किया। पर कन्नौज के राजा जयचंद ने पृथ्वीराज के साथ मिलने से इन्कार किया। पृथ्वीराज ने मोहम्मद गोरी को युद्ध में हराकर उसे जीवनदान दिया। अगले वर्ष इन दोनों के बीच युद्ध हुआ। उस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान हार गया। इस विपत्ति के समय में पृथ्वीराज घोड़े पर बैठकर वहां से अपने आप को बचाना चाहते थे पर शत्रुओं के सभी सैनिकों ने उसे चारों ओर से घेर कर उसको बंदी बना लिया। मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को मार दिया। दिल्ली मोहम्मद गोरी के वश में आया। इस तरह दिल्ली सुल्तान का शासन इस घटना से प्रारंभ हुआ।

पृथ्वीराज शौर्य और वीरता के लिए प्रसिद्ध था। पृथ्वीराज रासो नामक हिंदी महाकाव्य में चंदबरदाई नामक कवि ने इसके पराक्रम का वर्णन किया है।



विजय स्तंभ, चितौड़गढ़

गुहिल : राजपूत में गुहिल वीर परंपरा वंश के थे। इस वंश के राजा खोम्मण ने अरब के आक्रमण से अपने राज्य की रक्षा करके बप्पारावल नामक उपाधि धारण की थी। इस घराने के राणा कुंभ दिल्ली के सुल्तानों के विरुद्ध युद्ध लड़ कर अपने राज्य की रक्षा करने वाला पराक्रमी था। उसने अपने राज्य की सुरक्षा हेतु 32 दुर्गों का निर्माण किया। चित्तौड़गढ़ का विजय स्तंभ इसकी रचना है।

राणा संग या राणा संग्राम सिंह गोहिल वंश के और एक ख्यात राजा है। सौ युद्धों का वीर था। इसके देह पर 80 घावों के निशान थे। दिल्ली के सुल्तानों के विरुद्ध निरंतर लड़ा।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

आर्थिक स्थिति:

- गुप्त काल से सरकार में सेवा करने वालों को जमीन भेंट के रूप में दी जाती थी। यह जमीनदारी पद्धति के रूप में परिवर्तित हो गया। यह पद्धति सामान्य किसानों के लिए मुसीबत का कारण बना।
- शहरों में व्यापारी गण कुशल कर्मी बसते थे। वैश्य, व्यापार और आर्थिक व्यवहार में लीन थे ।
- विदेशी व्यापार चलता था ज्यादातर अरब व्यापारी भारत से व्यापार का संबंध रखते थे। मसालेदार पदार्थ, रेशमी वस्त्र, सुगंध द्रव्य और हीरे आदि भारत से निर्यात होते थे। घोड़े, मध्य एशिया और अरब से आयात होते थे।
- राजपूत राजस्व से प्राप्त अधिक पैसों को दुर्ग, देवालय के निर्माण में खर्च करते थे जिससे लोगों को रोजगार मिलता था।

सामाजिक स्थिति:

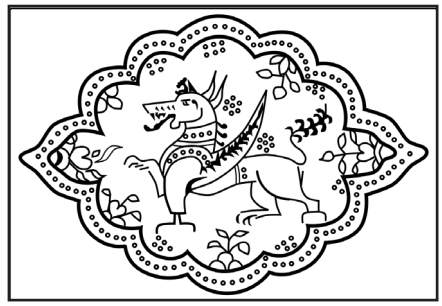
- राजपूत काल में पेशे के अनुसार ही विविध वर्ग थे।
- समाज में स्त्रियों को गौरव का स्थान था। स्त्रियाँ साहित्य, संगीत, चित्रकला, कसूती कलाओं में निपुण थीं।
- राजपूत पुण्य क्षेत्रों में स्नान करना पवित्र मानते थे। ब्रह्म का आवास कहलाने वाले पुष्कर प्रमुख यात्रा स्थल था और यहाँ का वाले बड़ा मेला आज भी विश्व विख्यात है।



ऊँट मेला पुष्कर

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अहोम राजवंश



अहोम राज प्रतीक

अहोम राजवंश ने भारत का वर्तमान असम प्रदेश में करीब 598 वर्ष तक शासन किया। (सा. श. 1228-1826) इस घराने के शासन को प्रारंभ करने वाला शान राजकुमार सुकपा था। इसके पूर्वज पट्काय पहाड़ों को पार करके असम भाग में आकर स्थित हुए। राजा को असम राजा और प्रजा को कवोफ कहते थे। राजा को मंत्री मंडल (मंत्रिमंडल के विविध बुर्हगोहेन, बोर्गोहेन, बोर्बरुवा, बोर्फुकान, और बोर्पाट्रोगोहेन) की अनुमति से नियुक्त करते थे। मंत्रिमंडल राजा को पद से निकालने का अधिकार रखता था।



सुपात्फा

अहोम शासन के 600 वर्ष की अवधि में प्रमुख 3 राजाओं को पहचाना गया था। सुकापा अहोम राज्य का स्थापक और सुहुंगमुंग-राज्य को विस्तार करने वाला और सुपात्फा राज्य को उन्नति पर ले जानेवाला इनके अलावा अहोम साम्राज्य का प्रसिद्ध सेना नायक लसित बोर्फुकान पराक्रमी माना जाता था।

अहोम की रानियाँ: अहोम के राजाओं की तरह उनकी रानियाँ भी राज्य कार्य में प्रमुख भूमिका अदा करती थीं। महारानी को बोर कुँवरी, अन्य रानियों को पार्वतीया कुवरी, राजदंगी कुवरी, तमुली कुवरी कहते थे। सामान्य रूप में रानियाँ अहोम कुलीन घरानेवाली थी। राजा की मृत्यु के बाद रानियाँ भी राज्य का कार्यभार संभालने की जिम्मेदारी लेती थीं। सिक्के के दोनों पहलूओं पर अनुक्रम रूप में राजा और रानियों के नामों को मुद्रित करते थे।

NOT TO BE REPUBLISHED © KTBS

मुगलों के साथ संघर्ष:

भारत में मुगल प्रबल होते हुए भी पूर्वोत्तर भाग में अपना अधिकार स्थापित ना कर सके थे। इसके लिए अहोम राजघराना कारण था। मुगलों ने सा. श. 1615 से 1682 तक कई बार अहोम राज्य पर आक्रमण किया था। कुछ भागों को अपने वश में कर लिया था। राजा चक्रध्वज सिंघ ने लसित बोर्फुकान के नेतृत्व में मुगलों पर आक्रमण करके, मुगलों को हराकर गुवाहाटी को फिर अपने राज्य में शामिल कर लिया।

अहोम की नौ सेना : अहोमों ने युद्ध में अपनी नौ सेना को ब्रह्मपुत्र नदी की पश्चिम दिशा में रखकर शत्रुओं को हरा कर उनको भगाया।वे नदी नौका युद्ध में अप्रतिम थे। युद्ध नौकाओं के निर्माण में माहिर थे। गेरिल्ला युद्ध तंत्रो को अच्छी तरह से जानते थे। इसलिए मुगल राजाओं को इनको आसानी से जीतना असंभव था।

कालगणना :

कार्कोट राजवंश	-	सा. श. 625 से 855
राजपूत को काल	-	सा. श. 650 से 1200
अहोम राजवंश	-	सा. श. 1228 से 1826

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास :-

I. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1. कार्कोट साम्राज्य का प्रसिद्ध राजा ——————।
2. 'गीतागोविंद' कृति के रचयिता ——————।
3. अहोम राजवंश ने ——————— प्रदेश में शासन किया ।
4. गुर्जर प्रतिहारों का राजा भोज के दरबार में आया हुआ ————।

II. समूह में चर्चा कीजिए और उत्तर लिखिए:

5. राजपूतों की विशेषता क्या है?
6. राजपूतों के तीन प्रसिद्ध वास्तुशिल्पों के नाम लिखिए और कहाँ पर है?
7. पृथ्वीराज चौहान पर टिप्पणी लिखिए।
8. बप्पारावल कौन था?
9. राणा संग्राम के बारे में टिप्पणि लिखिए।
10. राजपूत काल की सामाजिक स्थिति के बारे में टिप्पणि लिखिए।

गतिविधियाँ :

1. राजपूतों के द्वारा निर्मित देवालय, राजमहल और दुर्गों के चित्रों को विवरण सहित संग्रहीत कीजिए।
2. राजपूत युग के प्रसिद्ध वास्तुशिल्प केंद्रों को मानचित्र में पहचानिए।
3. प्राचीन कश्मीर के कवि, विद्वान और उनकी कृतियों की तालिका तैयार कीजिए।
4. लसीत बोर्फुखाँ का जीवन चरित्र पढ़िए।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय 13 दिल्ली के सुल्तान

Q5N4V8

पाठ परिचय:

11 -12 वीं शताब्दी में भारत पर लगातार हो रहे टर्की के सैनिक आक्रमण ने अंत में दिल्ली सुल्तानों के शासन के कारण बने (1206 - 1526)। इस पाठ में दिल्ली सुल्तानों की मनोवृति, शासन, तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक दशा-दिशा और वास्तुशिल्प साहित्यों की देन को चित्रित किया गया है।

सामर्थ्य :

1. 11- 12 वीं शताब्दी में हुए ऐतिहासिक गतिविधियाँ दिल्ली सुल्तानों को अधिकार दिलाने में कैसे सहायक हुईं, इसे समझना।
2. सुल्तानों के मनोभाव तथा शासन के ढंग, भारतीय समाज, आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में पर प्रभाव जातता।
3. दिल्ली सुल्तानों के काल के ऐतिहासिक स्थलों को मानचित्र में पहचानना।

NOT TO BE REPUBLISHED @KTRS

आठवीं शताब्दी से हमारे देश पर लगातार विदेशी आक्रमण हुए। आक्रम णकारी देश की उत्तर - पश्चिमी सीमा से आए थे। संपत्ति की लूट, साम्राज्य का विस्तार करना और इस्लाम धर्म का प्रसार, आक्रमणों के प्रधान उद्देश्य थे।

- **अरबों का आक्रमण :** भारत पर हुआ पहला आक्रमण अरबों का था। अरब की सेना ने सा. श. 712 ई. में सिंध तथा मुल्तान प्रांतों को अपने वश में किया। इसके साथ इन प्रदेशों में इस्लाम धर्म का बीज वपन हुआ। परंतु अल्प समय में ही अरब का अतिक्रमण कम हुआ ।

- **तुर्कों का आक्रमण :** इस घटना के 3 सदियों के बाद टर्की मूल के मोहम्मद गजनी ने भारत पर आक्रमण किया। अफ़ग़ानिस्तान के गजनी नामक छोटे राज्य के राजा गजनी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया। इसके फलस्वरूप भारत के कई समृद्ध नगर लूटे गए। धार्मिक केंद्रों का नाश हुआ। उनमें मथुरा का कृष्ण मंदिर तथा गुजरात का सोमनाथ मंदिर शामिल हैं।



गजनी महम्मद

देश की स्वतंत्रता के बाद भग्न हुए सोमनाथ मंदिर को शान के साथ पुनर्निर्माण किया गया। (1951) इसका उद्घाटन भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने किया था।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



सोमनाथ मंदिर, गुजरात

महमद गोरी : 12 वीं शताब्दी के अंत में महमद गोरी ने भारत पर आक्रमण करके सिंध तथा पंजाब प्रांतों को वश में लिया। जब आक्रमण जारी थे दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गोरी को पहले तरैन युद्ध में हराया। अगले ही साल इन दोनों के बीच हुई लड़ाई में पृथ्वीराज हार गया। मोहम्मद गोरी ने उसकी हत्या कर दी। दिल्ली मोहम्मद के वश में आ गया। मोहम्मद गोरी ने भारत में जीते गए प्रदेशों को अपने सेनानी (गुलाम/सेवक) कुतुबुद्दीन ऐबक को दे दिया। यहाँ से कुतुबुद्दीन ने दिल्ली का सुल्तान बनकर शासन प्रारंभ किया।



गोरी महमद

गुलामी वंश

गोरी ने जीते हुए प्रदेश अपने सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंप दिया । गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली के सुल्तान के रूप में अपना स्वतंत्र शासन शुरू किया । दिल्ली पर 5 राजवंशों का शासन था।

वे हैं :

- गुलामी राजवंश
- खिल्जी राजवंश
- तुग़लक राजवंश
- सैय्यद राजवंश
- लोदी राजवंश

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

कुतुबुद्दीन ऐबक : कुतुबुद्दीन प्रारंभ से ही महमद गोरी के गुलाम (सेवक) था। इसी कारण इस वंश का नाम 'गुलामी वंश' पड़ा। इसने अपने शत्रुओं को जीतकर तुर्कों का अधिकार मज़बूत बनाया। अपनी जीत की याद में दिल्ली के पास महरौली में "कुतुब मीनार" का कार्य प्रारंभ किया। इल्तुमिश के जमाने में यह कार्य पूर्ण हुआ।



कुतुबुद्दीन ऐबक



सुल्ताना रज़िया

दिल्ली सुल्तानों के काल में अधिकार का सूत्र पकड़ने वाली पहली एकैक महिला थी - सुल्ताना रजिया । यह वीर स्त्री दरबार में न्याय देती थी। मर्दों का वस्त्र पहनकर युद्ध के मैदान में कूदती थी। दरबार के सरदारों ने एक महिला के शासन को सहन नहीं कर सके और उसका वध कर डाला।

@KTDS NOT TO BE REPUBLISHED



कुतुब मीनार, दिल्ली

खिलजी वंश



अल्लाउद्दीन खिलजी

गुलामी वंश के बाद खिलजी वंश का शासन शुरू हुआ। खिल्जियों में अल्लाउद्दीन खिलजी दिल्ली के सुल्तानों में ही बलवान राजा था। इसका शासन सैनिक शासन था।

रीतियाँ : अल्लाउद्दीन ने शासन, सैनिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में बहुत सुधार किया। जरूरी वस्तुओं के सौदे पर नियंत्रण रखा। मादक पदार्थ सेवन, जुआ खेलना-आदि को निषेध किया। अपराधियों को बहुत कठोर सज़ा दी।

दिग्विजय यात्रा : संपूर्ण भारत को जीतना अल्लाउद्दीन की महत्वाकांक्षा थी। शुरुआत में अपने सैनिक बल से उत्तर भारत को जीत लिया। दक्षिण भारत को जीतने के लिए अपने सेवक "मल्लिकाफर" नामक सेनानी को भारी सेना के साथ भेज दिया। मल्लिकाफर ने दक्षिण भारत के 4 राज्यों की राजधानियों को लूटा।

मल्लिकाफर द्वारा आक्रमित राज्य हैं : महाराष्ट्र की यादव (राजधानी देवगिरी), आंध्र का काकती (राजधानी वारंगल्) कर्नाटक के होयसल (द्वार समुद्र) तथा तमिलनाडू के पांड्या (मधुरै)।

इसके बाद मल्लिक काफर ने आक्रमण को रामेश्वर तक आगे बढ़ाया। वहाँ कई मंदिरों को लूट लिया। अपार मात्रा में संपत्ति को लूटकर ले गया। दक्षिण भारत से दिल्ली को इतनी संपत्ति पहले कभी नहीं मिली थी।

अलाउद्दीन ने अमीर खुसरो, अमीर हसन-आदि फारसी कवियों को प्रोत्साहन दिया। दिल्ली में 'सिरि' नामक किले का निर्माण कराया। 'अलाई दरवाजा' अल्लाउद्दीन की ही भव्य रचना है।



अलाई दरवाजा, दिल्ली

अल्लाउद्दीन का अंतिम काल बहुत दुखदाई था। राजमहल में विद्रोह हुए। अंत में मल्लिकाफर ने अधिकार के लिए अल्लाउद्दीन की हत्या की तथा गद्दी पर बैठ गया। परंतु उसकी भी हत्या हुई। कुछ ही काल में खिल्जियों का शासन अंत होकर तुगलक वंश अधिकार में आया।

© TSTBS NOT TO BE REPUBLISHED

तुघलक वंश

तुगलक वंश के राजाओं में मोहमद बिन तुगलक प्रमुख राजा था। यह विद्वान था। परंतु जल्दबाजी, गुस्सा, व्यवहार कौशल की कमी और अजीब स्वभाव का व्यक्ति था।



मोहमद बिन तुगलक

प्रशासनिक प्रयोग : शासन में सुधार लाने के लिए महमद बीन तुधलक ने कई प्रयोग भी किए। उनमें प्रमुख हैं राजधानी का बदलाव। उसका विश्वास था कि दिल्ली के बदले भारत के बीच में स्थित देवगिरी राजधानी बनी तो वह साम्राज्य का केंद्र स्थान होगा। अगर दक्षिण प्रदेश में राजधानी का निर्माण करें तो दक्षिण के राज्यों पर आक्रमण करना आसान होगा। इसके हिसाब से उसने राजधानी को बदला। दिल्ली से 700 मील दूर पर स्थित देवगिरी का नाम 'दौलताबाद' रख दिया। दिल्ली के लोगों को देवगिरी जाने की आज्ञा दी । निर्वासित लोगों ने बहुत कष्ट उठाया। वह समझ गया कि मैंने गलती की है। दुखित होकर फ़िर से लोगों को देवगिरी से दिल्ली जाने की आज्ञा दी। मगर बहुत कम लोग ही देवगिरि से दिल्ली लौटे।

महमद का दूसरा प्रशासनिक प्रयोग था- चाँदी के सिक्कों के बदले उसी मूल्य के तांबे के सिक्कों को चलाना। परंतु उसने राजाज्ञा नहीं दी कि तांबे के सिक्कों को मुद्रित करने का अधिकार केवल सरकार का है। परिणाम स्वरूप जो चाहे तांबे के सिक्कों के बना डाले। तांबे के सिक्कों के आगे चाँदी के सिक्कों का वितरण असाध्य हुआ। गलती को समझकर फिर से पुराने सिक्कों को ही इस्तेमाल करने की आज्ञा दी। इन प्रयोगों से सरकार की आर्थिक स्थिति खराब हो गई।

महमद के शासन से तंग होकर लोग दंगा करने लगे। सिंध प्रांत में हुए दंगे को दबाते समय तीव्र ज्वर से इसकी मौत हुई।

गुलामी वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश तथा लोदी वंश थोड़े ही समय तक दिल्ली में शासन कर सके। लोदी वंश के राजा इब्राहिम लोदी के मुगल का राजा बाबर ने पानीपत युद्ध में हराया। इससे मुगल साम्राज्य की नींव डाली।

© KTS NOT TO BE REPUBLISHED

दिल्ली सुल्तानों के काल की परिस्थितियाँ :

दिल्ली सुल्तानों के शासनकाल में हिंदू बहु संख्या मे तो थे परंतु शासन तुर्कों के अनुसार चलता था। सेना शक्ति ही राज्य की रीढ़ थी। राजा निरंकुश प्रवृत्ति के थे। बल्बन ने घोषणा की कि 'वह अल्लाह का प्रतिनिधि है। वह अल्लाह के बिना किसी के प्रति ज़िम्मेदार नहीं है।' दिल्ली के सुल्तानों को स्थानीथ राजाओं के प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा। अधिकार गवाने का डर इन शासकों में बहुत था।

आर्थिक स्थिति : किसानों के ऊपर भू-कर का अधिक बोझ था। मोहमद बिन तुगलक ने भू-कर को और बढ़ा दिया। साथ - साथ जबरदस्ती से वसूल भी करता था। इसके फलस्वरूप किसान हर जगह विद्रोह करने लगे।

बुनाई उस समय का मुख्य उद्योग था। नगर प्रदेशों में भवन निर्माण कार्य जोरों पर था। इससे लोगों को रोज़गार मिला।

सुल्तान खासकर युद्ध के घोड़ों का आयात किया करते थे।

अल्लाउद्दीन खिलजी ने गुलामों का दाम भी स्पष्ट कर दिया था। सेवक या गुलामों को खुलेआम बाजार में बेचा जाता था। सुल्तानों के अधीन बहुत सारे गुलाम थे। अलाउद्दीन के अधीन में 50,000 तथा फ़िरोजशाह तुगलक के अधीन में 1,80,000 सेवक (गुलाम) थे।

वास्तुशिल्प तथा साहित्य : दिल्ली सुल्तानों के समय की प्रमुख वास्तुकला थी - 'क़ुतुब मीनार' (71 मीटर लंबा), 'अलाई दरवाजा' नामक सुंदर द्वार, 'कुव्वत् उल्ल - इस्लामिक मस्जिद' तथा "सिरि किला"।

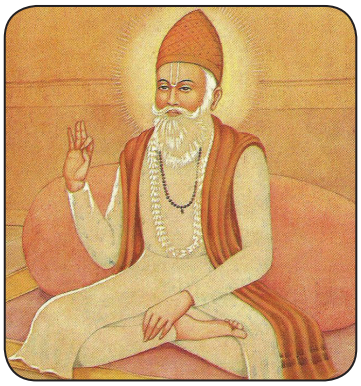
इसी समय में उर्दू भाषा पैदा हुई। अमीर खुसरो और अमीर हसन फ़ारसी भाषा के प्रसिद्ध कवि थे। अमीर खुसरो संगीतकार थे। उसने तबला, सितार- आदि वाद्यों का निर्माण भी किया।



अमीर खुसरो

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

जायसी नामक कवि ने उर्दू में "पद्मावत" नामक सूफ़ी काव्य की रचना की। रमानंद, कबीर, रैदास, मीरा इसी काल के थे।



कबीर दास



मीराबाई

कालगणना :

सिंध प्रांत पर अरबों का आक्रमण	-	712
मोहमद गजनी के आक्रमण	-	1000 -1026
तरैन युद्ध (महमद गोरी और पृथ्वीराज चौहाण के बीच)	-	1191-1192
दिल्ली सुल्तानों का शासन काल	-	1206-1526
कुतुबुद्दीन ऐबक	-	1206-1210
रजिया सुल्ताना	-	1236-1240
अलाउद्दीन खिलजी	-	1296-1316
महमद बिन तुगलक	-	1325-1351
पानीपत युद्ध और मुगलों का शासन प्रारंभ	-	1526

नया शब्द :

मीनार - ऊँचा स्तंभ

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास :-

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्द से भरिए :

1. प्रथम तराइन युद्ध में पृथ्वीराज चौहान द्वारा ———— हार गया।
2. अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में ———— किला बनवाया ।
3. इब्राहीम लोदी को पानीपत की पहली लड़ाई ———— ने हराया ।
4. गुलामी राजवंश के संस्थापक ———— था।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें :

5. मुहम्मद गोरी ने तराइन का दूसरा युद्ध किसके विरुद्ध जीता था?
6. कुतुब मीनार का निर्माण किसने करवाया था?
7. दिल्ली सल्तनत के दौरान शासन करने वाली एकमात्र महिला कौन थी?
8. दक्षिण भारत पर आक्रमण करने वाले अलाउद्दीन खिल्जी का सेनापति कौन था?
9. मुहम्मद बिन तुग़लक के राजधानी को कहाँ से कहाँ स्थानांतरित किया?
10. दिल्ली का वह सुलतान कौन था जो 'ईश्वर का प्रतिनिधि' होने का दावा करता था?

III. समूह में चर्चा कीजिए :

11. मोहमद गजनी के आक्रमण के परिणाम क्या है?
12. कुतुबुद्दीन ऐबक की उपलब्धियों को बताइए।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

13. अलाउद्दीन खिलजी की मनोवृत्तियाँ तथा उनके परिणामों को बताइए।

14. मोहमद बिन तुगलक की सारे मनोवृतियाँ क्यों विफल हुई?

15. दिल्ली सुल्तानों के काल में राज्य की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति कैसी थी?

16. वास्तुशिल्प तथा साहित्य के क्षेत्र में दिल्ली सुल्तानों की क्या देन है?

IV. सूची अ और सूची ब की विचारों का मिलान कीजिए ।

अ	ब
1. जायसी	अ) अर्लेदरवाजा
2. दौलताबाद	आ) सितार
3. अल्लाउद्दीन खिल्जी	इ) पद्मावत
4. अमीर खुसरो	ई) देवगिरी

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

कार्यकलाप :

1. दिल्ली सुल्तानों के काल के वास्तुशिल्पों के चित्रों को विवरण के साथ संग्रहीत कीजिए।
2. मानचित्र पर दिल्ली सुल्तानों के काल के ऐतिहासिक स्थानों को पहचानिए।

अध्याय 14	विजयनगर साम्राज्य और बहमनी राज्य

Y9W8N1

विजयनगर साम्राज्य

पाठ परिचय

दिल्ली सल्तनत की सैनिक कार्यवाई के कारण दक्षिण भारत के सेवुण (महाराष्ट्र), होयसल (कर्नाटक), काकतीय आंध्रप्रदेश और पांड्य (तमिलनाडू) राज्यों का पतन हुआ। एक प्रबल राजसत्ता के बिना जनजीवन, और संस्कृति अधीर हो गये। ऐसी कठिन परिस्थिति में दक्षिण भारत की रक्षा के लिए विजयनगर साम्राज्य का उदय हुआ, हिंदू धर्म और संस्कृति की रक्षा और इसको पालन-पोषण किया। यह साम्राज्य लगभग तीन शताब्दी तक (1336-1646) वैभव पूर्ण था।

इस पाठ में विजयनगर के प्रमुख राजाओं की उपलब्धियाँ और इस साम्राज्य की अवनती के कारणीभूत रक्कसतंगडी युद्ध (1565) और उसके परिणामों का विवरण है। साथ ही साहित्य का और कला क्षेत्र को सामाज्य के योगदान का विवरण है।

विजयनगर की स्थापना के (1336) बाद शीघ्र ही बहुमनी राज्य (1347) का उदय हुआ। कृष्णा नदी इन दोनों साम्राज्यों की समान सीमा थी। कृष्ण नदी के उत्तर में बहमनी साम्राज्य और दक्षिण में विजयनगर साम्राज्य था। उत्तर में कृष्णा और दक्षिण में तुगंभद्रा नदी के बीच के प्रदेश की उपजाऊ भूमि, रायचूर का दो आब प्रदेश था। इसी दो आब्ब प्रदेश के लिए दोनों साम्राज्य में लगातार युद्ध होते रहे। बहमनी राज्य, राजसत्ता के लिए आपसी लड़ाई के कारण विभाजित हुआ (1489)। इसी प्रदेश में पाँच शाही घरानों का उदय हुआ। इनमें से विजयपुर के 'आदिलशाही' प्रमुख है।

इस पाठ में बहमनी राज्य के सुल्तान फिरोज़शाह और उनके प्रसिद्ध मंत्री मुहम्मद गवान की उपलब्धियों का विवरण दिया गया है। इसके साथ बहमनी राज्य और आदिलशाहियों के अविस्मरणीय उपलब्धियों का वर्णन किया गया है ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

सामर्थ्य:

1. विजयनगर साम्राज्य के राजा महाराजाओं की उपलब्धियों को समझना।
2. विजयनगर काल के साहित्य कृति, संगीत, वास्तु, शिल्प शिल्पकला की महानता की प्रशंसा करने के साथ, उनकी रक्षा करने में हाथ बढाना।
3. विजयनगर द्वारा धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए किये गए महत्वपूर्ण कार्यों की प्रशंसा करना।
4. मानचित्र में साम्राज्य के प्रमुख स्थानों को पहचानना।
5. फिरोज शाह और मुहम्मद गवान की देन की जानकारी प्राप्त करना।
6. बहमनी और विजयपुर के सुल्तानों के साहित्य, कला तथा वास्तुशिल्प को दी गयी देनों की प्रशंसा करना।
7. मानचित्र में बहमनी राज्य से संबंधित मुख्य ऐतिहासिक स्थानों को पहचानना।



विजयनगर साम्राज्य का प्रतीक - वराह

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

विजयनगर साम्राज्य के मानचित्र देखिए। यह साम्राज्य कितना विशाल है न? विजयनगर साम्राज्य, उस समय दुनिया के बड़े साम्राज्यों में से एक था।

दिल्ली सुल्तान के आक्रमणों के परिणाम से दक्षिण भारत के प्रमुख राज्यों का अंत हो गया। यहाँ के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन अंत हो गये। ऐसे संकट के समय में विजय नगर साम्राज्य की स्थापना हुई। हिंदू धर्म और संस्कृति को प्रोत्साहन दिया। सर्वधर्म समन्वय तत्व के आधार पर लगभग तीन सदियों तक शासन किया। बल्लारी जिला के हम्पी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी। यह 1336 में तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर स्थापित हुआ ।



©KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

हरिहर और बुक्का

संगम के पुत्रों ने तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर विजयनगर साम्राज्य की नींव डाली ।

हरिहर बुक्का कंपणा, मारप्पा, मुद्दप्पा ये संगम के सगे भाई थे। इस साम्राज्य पर संगम, सालुवा, तुलुवा, अरवीडू नामक चार राजवंशों ने शासन किया। वराह विजयनगर के राजलाछन था। इनके कुलदेव भगवान विरुपाक्ष थे। 'हिंदूराय सुरत्राण' सम्राटों की उपाधि थी ।

हरिहर और बुक्का विजयनगर साम्राज्य के प्रथम राजा थे।

हरिहर ने हम्पी में नई राजधानी का निर्माण कार्य शुरु किया। हरिहर के शासन काल में बहमनी राज्य की स्थापना हुई तब से विजयनगर साम्राज्य और. बहमनी राज्य के बीच कभी-कभी युद्ध होते रहे।

प्रौढदेवराय (द्वितीय देवराय) (1424-1446)

संगम वंश के प्रख्यात राजा प्रौढ़देवराय का काल, विजय नगर साम्राज्य का महत्वपूर्ण शासन काल है। साम्राज्य की कीर्ति चारों ओर फैल गई। आंतरिक शांति और समृद्धि बनी रही। व्यापार और वाणिज्य फला - फूला ।

प्रौढ़देवराय ने आस - पास के राजाओं का विद्रोह दबा दिया। उसने सुल्तानों के खिलाफ युद्ध किया और साम्राज्य का विस्तार किया। उसने अश्वारोही मुहमदीयों को सेना में भर्ती कराया। फारस के राजदूत अब्दुल रजाक ने कहा है पूरे भारत में देवराय के समान कोई राजा नहीं हैं। इसके साथ ही कहा कि ''राजा की सेना लाखों की संख्या में है।''

प्रौढदेवराय एक समर्थ प्रशासक, वीर योद्धा और विद्वान था। हम्पी में इन्होंने मनमोहक हजारा रामस्वामी देवालय का निर्माण करवाया। परधर्म सहिष्णुता देवराय की धार्मिक नीति थी। इसनें राजधानी में एक मस्जिद का निर्माण किया। इन्होंने शासन काल में जैन और वैष्णव मंदिरों का निर्माण भी कराया । वीरशैव संप्रदाय की उन्नति हुई। कन्नड एवं संस्कृत में विपुल मात्रा में साहित्य रचना हुई ।

© KSTBC NOT TO BE REPUBLISHED

सालुवा राजवंश (सा.श. 1485-1505)

सा.श. 1485 में सत्ता में आये, सालुवा नरसिम्हा एक कमज़ोर संगम राजवंश के तीसरे विरुपाक्ष से राजधानी पर कब्जा कर लिया और 6 वर्षों तक शासन किया ।

तुलुवा राजवंश (सा.श. 1505-1567)

साल्वा नरसिम्हा के बच्चे अप्राप्त होने के कारण सेनानी तुलुवा नरसानायक का वश हुआ। 1509 में उनकी मृत्यु के बाद उनके भाई कृष्ण देवराय सत्ता में आये ।

कृष्ण देवराय (1509-1529)

तुलुवा वंश के कृष्णदेवराय एक महान साम्राट तथा बहादूर सैनिक थे। इनके शासन काल में साम्राज्य की सीमाएँ उत्तर में कृष्णा नदी तक और पूर्व, पश्चिम, दक्षिण में समुद्र तट तक फैली थीं।



पत्नियों के साथ कृष्णदेवराय, काँसे की मूर्ती

उपलब्धियाँ : कृष्णदेवराय एक समर्थ प्रशासक थे। सरकार की आय का एक चौथाई हिस्सा दान, -धर्म और समाज कल्याण पर उपयोग करते थे। उनके समय में कृषि और व्यापार समृद्ध हुए। वस्तुओं के दाम बहुत सस्ते थे ।

कृष्णदेवराय संस्कृत और तेलुगू दोनों भाषाओं के विद्वान थे। उन्होंने तेलुगू में आमुक्त मौल्यदा और संस्कृत में 'जांबवती कल्याण' नामक कृतियों की रचना की। ''कन्नड राज्यरमारमण'' इनकी उपाधि थी।

रामराय : कृष्णदेवराय के वैभवपूर्ण शासन काल के बाद विजय नगर साम्राज्य बहुत दुर्बल हो गया। लेकिन विजयनगर की शान को फिर से लौटाने का श्रेय कृष्ण देवराय के दामाद रामराय को मिलता है। वह एक समर्थ सेनानी और उत्तम प्रशासक था।

© TRS NOT TO BE REPUBLISHED

रक्कसतंगड़ी युद्ध

कारण: बहमनी साम्राज्य दुर्बल होकर पाँच राज्यों में विभाजित हुआ। इस राज्य के सुल्तानों ने आपसी युद्ध में भाग लेने के लिए रामराय को आमंत्रित किया। इससे लाभ उठाकर रामराय ने साम्राज्य का विस्तार कृष्णानदी के उत्तरी भाग तक फैलाया। जिसने युद्ध को उकसाया। साथ ही विजयनगर साम्राज्य की समृद्धि देखकर ईर्ष्यालु शाही सुल्तान अपना राजनीतिक भेदभाव भूलकर एक हो गए। संगठितों ने, सुल्तानों ने विजयनगर के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। इस युद्ध को 'रक्कसतंगडी' युद्ध कहा जाता है। यह दक्षिण भारत के इतिहास में सबसे भीषण युद्ध था। यह युद्ध क्षेत्र कृष्णा नदी के तट पर रक्कसगी और तंगाडगी गाँवों के बीच था।

आयु अस्सी वर्ष होने पर भी रामराय ने बहुत आत्मविश्वास से दुश्मनों का सामना किया । युद्ध के आरंभ में विजयनगर की जीत हुई। लेकिन विजयनगर की सेना दुश्मनों की तोप के हमले से विचलित हो गई। इसी बीच रामराज के मुहम्मदीय सेनापतियों ने अपने अधीन सेना दल के साथ दुश्मनों से मिलकर रामराम की हत्या की। विजयनगर सेना युद्ध भूमि से भाग गयी ।

रामराय का छोटा भाई तिरुमला राजधानी से अपार संपत्ति को हाथियों पर लाद कर आंध्र प्रदेश के पेनुगोंडा की ओर चला गया। बिना रक्षक की राजधानी शत्रुओं के वश हुई। सुल्तान की सेना ने विजयनगर की संपत्ति को लूट लिया। पेनुगोंडा, चंद्रगिरी बाद में वेल्लोर को राजधानी बनाकर अरबीडू वंशज का शासन 1646 तक चला।

परिणाम : विजयनगर साम्राज्य की अवनति के बाद दक्षिण भारत में कई प्रकार के महत्वपूर्ण बदलाव हुए। साम्राज्य के उत्तरी भाग-विजयपुर और गोलकोंडा राज्यों के वश में आ गए। कर्नाटक में केलदी, मैसूरू और चित्रदुर्ग -आदि सामंत राजा स्वतंत्र हो गए।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

पर्यटकों द्वारा देखा गया राजधानी वैभव: विजय नगर की राजधानी हम्पी आए हुए कई विदेशी यात्रियों ने यहाँ के वैभव और आर्थिक समृद्धि की प्रशंसा की है।

- राजधानी हम्पी के बारे में पुर्तगाली यात्री डोमिंगो पायेस ने कहा है- हर तरह की वस्तुओं से समृद्ध ऐसा शहर दुनिया में और कहीं नहीं है। उल्लेख किया है कि हर प्रकार के मोती, हीरे, माणिक, पन्ना, नीलम, और महँगे कपड़े यहाँ आसानी से उपलब्ध थे।
- राजधानी में आए फारसी (इरान) राजदूत अब्दुल रजाक ने देवराय की महानता का गुणगान किया है। उन्होंने कहा विजयनगर जैसा शानदार शहर भूमंडल पर मैंने न देखा है न सुना है।

समाज, आर्थिकता और संस्कृति :

समाज : ग्रामसभा में सभी जातियों के सदस्यों को भाग लेने का अवसर था। नगरों में अंजुमन नामक मुसलमानों की संस्था थी। उनके प्रतिनिधियों को नगर के गणमान्य व्यक्तियों की सभा में समान पद मिलता था।

महिलाएँ रानिवास का लेखा - जोखा, निगरानी, राजा-रानियों की सेवा आदि के लिए नियुक्त की जाती थीं। सार्वजनिक प्रदर्शन करनेवाली महिला पहलवान विजयनगर साम्राज्य में थीं। लोकप्रिय नवरात्री उत्सव राजधानी के 'महानवमी टीले' में धूमधाम से मनाया जाता था।

आर्थिकता : कृषि अधिकांश लोगों का मुख्य उद्योग था। विजयनगर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का केंद्र था। दुनिया भर के कई व्यापारी यहाँ आते थे। विदेशी यात्रियों का कथन है-यहाँ की दुकानों पर मोती और रत्नों के ढ़रों का व्यापार होता था। साम्राज्य के पश्चिमी और पूर्वी भागों के बंदरगाहों से वस्तुओं का आयात किया जाता था।

© DTBS NOT TO BE REPUBLISHED

धर्म: सभी मतधर्म सम्राज्य द्वारा दान लेते थे। किसी को भी अपने मत को बिना बाधा के आचरण करने की स्वतंत्रत्रा राजाओं ने दी थी। विजयनगर में मुसलमानों के लिए मस्जिद का निर्माण करवाया गया। उन्हें सेना में भर्ती किया गया। पुर्तगालियों से व्यापार वृद्धि करके विजयनगर के राजाओं ने ईसाई धर्म को भी प्रोत्साहन दिया।

साहित्य : विजयनगर साम्राज्य के समय में कन्नड़, संस्कृत और तेलुगू साहित्य की अभिवृद्धि हुई। कन्नड के महान कवि कुमारव्यास, चामरस और रत्नाकर वर्णी इसी जमाने के कवि थे। विजयनगर काल तेलुगू साहित्य के लिए 'स्वर्णयुग' था।

कुमारव्यास (नारणप्पा) रसावेषपूर्ण कवि थे। 'कर्नाट भारत कथा मंजरी' इनकी कृति है। चामरस की कृति 'प्रभुलिंग लीला' वचनकार अल्लमप्रभू की जीवनी है। यह एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। रत्नाकरवर्णी कृति 'भरतेश वैभव' बहुत मनमोहक शैली में लिखित है।

संगीत : विजयनगर के शासकों ने संगीत, नृत्यकला और चित्रकला को विशेष प्रोत्साहन दिया। उसी समय से 'कर्नाटक संगीत' नाम लोकप्रिय हो गया। संतों ने संगीत के माध्यम से भक्तिमार्ग का उपदेश दिया । इसे दासपंथ कहा जाता है दासों में पुरंदरदास और कनकदास प्रमुख थे।

लाखों कीर्तनों को लिखकर पुरंदरदास 'कर्नाटक संगीत के पितामह' नाम से प्रसिद्ध हुए। कनकदास आम लोगों के कवि हैं। 'मोहनतरंगिणी', 'रामधान्य चरित्र', 'नल चरित्र' और 'हरिभक्तिसार' जैसी प्रमुख कृतियाँ इनकी हैं।

गतिविधि : कर्नाटक के भक्तिपंथ के प्रवर्तक हरिदास के बारे में एक पृष्ठ में निबंध लिखिए ।

शिल्पकला : विजयनगर काल में इमारतों का निर्माण शैल (ग्रेनाईट) से किया गया था। दक्षिण भारत के पुराने देवालयों को ऊँचा रायगोपुर, सुंदर कल्याण मंडप मिला ऐसी सैकडों संरचनाओं से हजारों जगह लोगों को काम मिला।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

हम्पी : हजारा रामस्वामी, विजय विट्ठलस्वामी, कृष्ण स्वामी, अच्चुतराय जैसे सुंदर मंदिर हम्पी में है। विठ्ठलस्वामी मंदिर के लघुस्तंभों को थप-थपाने से उनसे सप्त स्वर निकलता है।



हजारा रामस्वामी देवालय, हम्पी

● श्रृंगेरी के विद्याशंकर मंदिर, हजारा रामस्वामी देवालय, हजारा स्तंभवाली मंडप और मूडबिदरे का हजारा स्तंभोंवाला जैन विहार (त्रिभुवन तिलक चूडामणि) विजयनगर कालीन है।



विद्याशंकर देवालय, शृंगेरी

एकशिला मूर्तियाँ : इस अवधि में बड़े आकार के एकशिला मूर्तियों को उकेरने की प्रथा आई । हम्पी की ऐसी मूतियाँ में, सासिवेकालु गणेश, कडलेकालु गणेश, लक्ष्मीनरसिंह, विट्ठल स्वामी मंदिर के सामने का एक शिला रथ बहुत सुंदर है। यह गरुड़ का मंदिर है। कार्कल और वेणूर में जो बाहुबली की एकशिला प्रतिमा वास्तुशिल्प कौशल का प्रमाण हैं ।

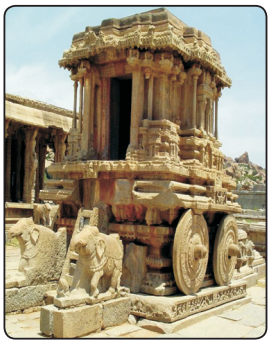
NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS



सासिगेकालु गणेश, हम्पी



लक्ष्मीनरसिंह, हम्पी



शिला रथ, हम्पी

बहमनी राज्य

बीदर नगर कर्नाटक के शीर्ष पर स्थित एक ऐतिहासिक स्थल है। वह करीब एक शताब्दी तक बहमनी सुलतानों की राजधानी थी। उपयुक्त भव्य इमारत को देखिए ।



किला, बीदर

NOT TO BE REPUBLISHED © SCERT TBS

विजयनगर साम्राज्य का समकालीन बहमनी साम्राज्य सा.श. 1347 ई. में स्थापित हुआ। राजधानी कृष्ण नदी राज्य की दक्षिणी सीमा पर कलबुर्गी थी, और बाद में बीदर राजधानी थी। यह अलाउद्दीन हसन गंगू बहुमन शाह है ।

बहमनी राज्य के मानचित्र को देखिए। उसमें आज का कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा आंध्र-प्रदेश के कुछ भाग मौजूद थे। कृष्णा नदी राज्य की दक्षिण सीमा थी। शुरुआत में कलबुर्गी, बाद में बीदर इसकी राजधानी थी।

बहमनी तथा विजयनगर आस-पड़ोस के राज्य थे। इनके बीच लगातार संघर्ष चलता रहता था।

फिरोज शाह

फिरोज शाह बहमनी वंश में ही श्रेष्ठ राजा था। वह न्यायप्रिय, उदारी स्वभाव वाला तथा दैवभक्त था।



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

लेखक तथा बहुभाषी विद्वान होने के साथ-साथ फिरोजशाह रेखागणित तथा धर्मशास्त्रों में परिणत था। इसने दौलताबाद (महाराष्ट्र) में आकाश वीक्षणालय की स्थापना की। इसने राजधानी कलबुर्गी नगर का सौंदर्य बढ़ाने के साथ-साथ भीमा नदी के तट पर फिरोजाबाद नामक एक नगर का निर्माण कराया। इसके काल में राज्य आए सूफ़ी संत बंदेनवाज को कुछ ग्राम भेंट के रूप में दिये गए। उसने बंदरगाहों के विकास के लिए विशेष ध्यान दिया। इससे विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन मिला।

मोहम्मद गवान

बहमनी राज्य के इतिहास में शासित सुल्तानों में अधिक कीर्ति हासिल करने वाला मोहम्मद गवान था । पर्षियन मूल का गवान सुल्तान तीसरे मोहम्मद के प्रधानमंत्री के रूप में निस्वार्थ सेवा रत रहा।

उपलब्धियाँ :

- गवान युद्ध विद्या में निपुण था। अतः उसने साम्राज्य का विस्तार किया।
- शासन इस्लामिक कानून पर आधारित था।
- राजस्व तथा डाक व्यवस्था को बढ़ाया ।
- उपजाऊ भूमि, सिंचाई की व्यवस्था को ध्यान में रखकर भू-कर निर्धारित किया।
- लोगों को कष्ट देने वाले कई करों को रद्द किया।
- स्वयं विद्वान मोहम्मद गवान ने बीदर में मदरसा (महाविद्यालय) की स्थापना की। इससे इस्लाम धर्म और कानून शिक्षा को उत्तेजना मिली।
- यहाँ खगोल शास्त्र, गणित, इतिहास आदि विषयों का भी अध्ययन होता था।
- विद्यार्थियों के लिए निशुल्क शिक्षा तथा छात्रावासों की सुविधा थी।
- मदरसा के ग्रंथालय में करीब 3000 हस्तप्रतियाँ थीं।

कुल मिलाकर बहमनी राज्य की उन्नति के लिए मोहम्मद गवान ने श्रेष्ठ योगदान दिया। इतना होने पर भी राज्य के सरदार गवान की उपलब्धियों से

© KTRS NOT TO BE REPUBLISHED

ईर्ष्यालु होकर षड्यंत्र रचकर उसकी हत्या करवा दी। गवान की समाधि पर लिखा गया है - मुग्ध गवान की हत्या की गई। ऐसा उल्लेखित है।

गवान के बाद अधिकार के लिए घरेलू झगड़े हुए, इससे बहमनी राज्य 5 भागों में विभाजित हुआ।

ये राज्य थे -

- बिजापुर के आदिलशाही।
- बीदर के बरीद शाही।
- गोल्कोंडा के कुतुब शाही
- अहमदनगर के निजामशाही तथा
- बिरार के इमदशाही।

इनमें से पहले दो राज्यों की राजधानी कर्नाटक में थीं।

समाज : बहमनी राज्य में शासन इस्लामिक कानून के अनुसार चलता था। सुल्तान शासन का प्रमुख ही नहीं श्रेष्ठ न्यायाधीश, उच्च सेनाधिकारी और धर्मगुरु था। उसे अल्लाह का प्रतिनिधि भी माना जाता था।

शासन में सारे उच्च पदों पर ज़्यादातर मुसलमानों की ही नियुक्ति होती थी। उन्हें जागीर भी दी जाती थी। परंतु हिंदू जागीरदार बहुत कम थे।

हिंदू परंपराओं के अनुसार उपजाऊ 1/6 भाग कर के रूप में संग्रहीत किया जाता था। चावल, गेहूँ, जौ तथा दाल प्रमुख दैनिक खाद्य पदार्थ थे।

राजघराने के लोग तथा सरदार विलासी जीवन बिताते थे। आम जनता की स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी। जैन तथा ईसाई समुदाय राज्य में थे। सूफ़ी संप्रदाय भी मजबूत था।

सांस्कृतिक देन

साहित्य : बहमनी सुल्तान विदेशी विद्वानों के आश्रयदाता थे। अरबी तथा फ़ारसी साहित्य को इससे प्रोत्साहन मिला। बंदेनवाज़ नामक ख्यात सूफ़ी संत और ग्रंथकार इसी काल के थे। इन लोगों से प्रयुक्त भाषा दखिनी भाषा नाम से प्रसिद्ध हुई। यही भाषा आगे चलकर उर्दू भाषा के विकास का कारण बन गयी।

© SCERT NOT TO BE REPUBLISHED

वास्तुशिल्प : बहमनियों का इतिहास वास्तुशिल्प के लिए प्रसिद्ध है। कलबुर्गी, बीदर तथा अन्य स्थानों की इमारतें इंडो-इस्लामिक शैली की हैं। यह दखिनी शैली नाम से परिचित है। बहमनियों की पहली रचना कलबुर्गी की जामी मस्जिद है। यह मोहम्मद शाह द्वारा निर्मित थी। छोटे-छोटे गुंबजों से युक्त यहाँ का सभा-भवन आकर्षक है। कलबुर्गी के पास सुल्तानों की समाधियाँ हैं। वे बृहदाकार गुंबज युक्त रचनाएँ हैं। बंदेनवाज़ की समाधि कलबुर्गी की एक प्रमुख इमारत है। बीदर का सोलाहस्तंभ मस्जिद तथा किले में स्थित सुंदर राज भवन प्रसिद्ध हैं। यह भवन अलंकार, लकड़ी के महीन कला से युक्त हैं। बीदर के निकट अष्टूर की 12 समाधियाँ देखने लायक हैं। बहमनियों के काल की इमारतों में अत्यंत प्रमुख इमारत गवान द्वारा बनाया गया 'मदरसा' है। यह 76 मीटर (250 फुट) लंबा तथा तीन मंजिलों वाला है। इसके अंदर की मस्जिद आज भी मज़बूत है। पाँच शताब्दियों से पूर्व का मदरसा-भवन अपने गतवैभव का प्रतीक है।



गवान का मदरसा, बीदर

विजयपुर की आदिल शाही

आदिल शाही राज्यों में विजयपुर की आदिलशाही प्रसिद्ध हैं। उन्होंने कर्नाटक में दो शताब्दियों तक शासन किया।

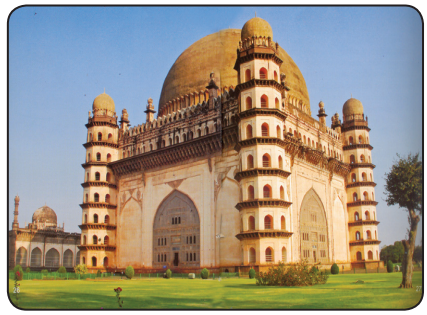
द्वितीय इब्राहिम: ये विजयपुर के श्रेष्ठ सुल्तानों में एक थे। इनके ज़माने में राज्य का विस्तार ही नहीं बल्कि समृद्धि भी हुआ। व्यापार की मात्रा बढ़ी। इब्राहिम धर्म सहिष्णु सुल्तान थे। कई हिंदू विद्वान कवि तथा संगीतकारों के आश्रयदाता थे। अपने महल के किले के अंदर स्थित दत्त मंदिर को पुनर्निर्माण कर पूजा की व्यवस्था



इब्राहिम रोज़ा, विजयपुर

NOT TO BE REPUBLISHED © KSEEB

कराई। हिंदू - मुस्लिम सांस्कृतिक एकता के लिए इब्राहिम ने बहुत मेहनत की। उर्दू में 'किताब-ई-नवरस' नामक किताब लिखकर मुसलमानों में हिंदू संगीत को जनप्रिय कराने का प्रयत्न किया। यह कृति हिंदू देवताओं जैसे सरस्वती, गणपति, भैरव-आदि की स्तुति से प्रारंभ होती है। वे स्वयं अच्छे संगीतकार थे। भव्य वास्तुशिल्प इमारत "इब्राहिम रोज़ा" इनकी ही देन है।



गोलगुंबज, विजयपुर

इब्राहिम के उत्तराधिकारी मुहम्मद ने विजयपुर में अद्भुत इमारत 'गोलगुंबज' का निर्माण कराया। 'असार महल' इनकी एक अन्य भव्य इमारत है।

मुहम्मद के बाद विजयपुर का प्रशासन कमजोर होते गया। दक्षिण भारत में मुगलों का आक्रमण तथा मराठा साम्राज्य की हिंसा के कारण यह दुर्बल हो गया। यह राज्य औरंगजेब के कब्जे के साथ ही आदिल का शासन समाप्त हो गया।

@KSEEB NOT TO BE REPUBLISHED

वास्तुशिल्प :

कर्नाटक के वास्तुशिल्प के इतिहास में आदिल शाहियों की इमारतों का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी रचनाएँ - किले, मस्जिद तथा कब्र हैं।

- 'विजयपुर का किला' बहुत बड़ी रचना है। वह राजमहल 96 छोटे-छोटे गुंबज तथा छः महाद्वार हैं। राजमहल में 'गगन महल' सुंदर है। 'असारामहल' में रंग-बिरंगी तस्वीरों वाले कमरे हैं।
- विजयपुर का 'जुमा मस्जिद' सुंदर है।

आदिल शाहियों की इमारतों में कब्र इमारत बहुत सुंदर हैं। जुड़वा रचना 'इब्राहिम रोजा' में एक इमारत मस्जिद है तो दूसरा कब्र है। रोजा को दखिन का ताजमहल कहा जाता है। रोजा से भी बढ़कर इमारतों की रचना करने के उद्देश्य से मुहम्मद ने 'गोलगुंबद' नामक कब्र का निर्माण कराया। इसके केंद्र भाग में विशाल गुंबज है। गुंबज के अंदर 'फुस- फुसने' वाला बड़ा कमरा है। यहाँ की 'फुसफुसाने' वाली विशेषता वास्तुशिल्पियों को आश्चर्यचकित कर देती है। दुनिया

के बड़े इमारतों में गोलगुंबाज चौथा है। यह भारत में बहुत बड़ा है। यह विश्व के अद्भुत वास्तुशिल्पों में एक है।

कालगणना:

विजयनगर

विजयनगर की स्थापना	-	1336
विजयनगर का शासन काल	-	1336-1646
कृष्णदेव राय का शासनकाल	-	1509-1529
रक्कसतंगड़ी युद्ध	-	जनवरी 23, 1565

बहमनी

बहमनी राज्य का शासन काल	-	1347-1498
बीदर में मदरसे की स्थापना	-	1461
आदिलशाहियों का शासन काल	-	1489-1686
इब्राहिम रोजा की रचना	-	1626
गोल गुंबज की रचना-लगभग	-	1650

नये शब्द :

1. फकीर - महम्मदीय साधु
2. बुनी - किले के ऊपर बनाने वाला गुंबज
3. फारसी - पर्शिया देश की भाषा
4. दखन - दक्षिण भारत का प्रदेश.

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्द से भरिए :

1. विजयनगर साम्राज्य का प्रतीक _____
2. बहमनी सुल्तानों के साम्राज्य का संस्थापक _____ ।
3. _____ को कर्नाटक संगीत का जनक कहा जाता है ।
4. गोल गुम्बज _____ नगर में स्थित है ।

II. समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए :

5. आदिल शाहियों में प्रसिद्ध राजा कौन है?
6. गोलगुंबद क्यों प्रसिद्ध है?
7. विजयनगर के राजाओं में श्रेष्ठ राजा कौन हैं?
8. हंपी के प्रमुख मंदिर कौन से हैं?
9. कुमार व्यास की कृति कौन सी है?
10. कृष्णदेवराय की रचनाओं का नाम बताइए।
11. विजयनगर देखने आए विदेशी प्रवासी कौन - कौन थे?

कार्याकलाप :

1. बहमन् शाही और आदिलशाहियों के वास्तुशिल्प, चित्रों को संग्रहीत करके संग्रह पुस्तक बनाइए।
2. भारत में स्थित हिंदू , ईसाई तथा मुस्लिम संस्कृति के संकेत मंदिर, गिरजाघर, मस्जिदों और अन्य स्मारकों के चित्र संग्रहीत करके एक संग्रह पुस्तक बनाइए।
3. पुरंदरदास तथा कनकदास के एक या दो रचनाएँ तथा ''गदुगिन भारत'' के 4 या 5 पदों का संग्रह करके सामूहिक गायन कीजिए।
4. कर्नाटक के भक्ति पंथ के हरिदास के बारे में विषय संग्रहीत करके उनके बारे में एक पृष्ठ में निबंध लिखिए।
5. विजयनगर साम्राज्य के प्रमुख स्मारकों के चित्रों को विवरण सहित संग्रहीत कीजिए।
6. शैक्षणिक प्रवास के लिए हंपी जाइए । प्रवास से प्राप्त अनुभवों को निबंध के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय 15 मुगल और मराठा

F2J6Y2

मुगल-साम्रज्य का उतार-चढ़ाव

पाठ परिचय :

1526 में बाबर ने भारत पर आक्रमण किया। दिल्ली सुल्तानों का शासन अंत करके मुगल साम्राज्य की स्थापना की। इस पाठ में अकबर और औरंगजेब के शासन के बारे में परिचय दिया है। इसके साथ मुगलों के शासन और सांस्कृतिक देन के बारे में भी चित्रित है। अंत में साम्राज्य की अवनति के कारणों को भी बताया गया है। दो सदियों की अवधि के प्रमुख राजनीतिक शक्ति बनकर साहित्य कला को विशेष देन देनवाले मुगल साम्राज्य का उतार-चढ़ाव चित्रित है।

शिवाजी के बचपन आदर्श, मुगल साम्राज्य और विजयपुर राज्यों को परास्त करते की साहस कथा मराठा राज्य की स्थापना, शासन क्रम का विवरण है।

सामर्थ्य:

1. अकबर की उदार नीति और उपलब्धियों के बारे में जानना।
2. औरंगजेब के संकुचित मनोवृति, देश के विद्रोह और साम्राज्य की अवनति का कारण कैसे बने? यह समझना।
3. साहित्य और कला को मुगल सम्राटों ने किस तरह समृद्ध बनाया इसकी प्रशंसा करना।
4. मुगल काल के ऐतिहासिक स्थानों को मानचित्र में पहचानना।
5. शिवाजी का जीवन, साहस, गुण और उपलब्धियों को समझना।
6. मानचित्र में शिवाजी से संबंधित ऐतिहासिक स्थानों को पहचानना।

© DTBS NOT TO BE REPUBLISHED

आप क्या इस स्मारक को पहचान सकते हैं?



ताजमहल, आगरा

यह विश्वप्रसिद्ध ताजमहल है, संगमरमर से निर्मित यह बृहत वास्तुकृति, मुगलों की श्रेष्ठ देन है।

बाबर जो मुगल राजवंश का संस्थापक था। प्रारंभ में यह अफगानिस्तान के काबुल नामक छोटे से प्रदेश पर प्रशासन करता था। समृद्धशील भारत पर आक्रमण करने के लिए मौका ढूँढ रहा था।

बाबर मुगल के वंश का था। मुगल शब्द का मूल 'मंगोल' है। बाबर ने ही भारत को गुलाब के फूल का परिचय दिया।

दिल्ली के सुल्तान के दुर्बल के होते ही बाबर ने दिल्ली पर आक्रमण करके उनके शासन का अंत किया। लेकिन वह संतृप्त नहीं हुआ क्योंकि यहाँ के राजपूत और आफ़गान बहुत विरोध करते थे। वीर योद्धा बाबर ने शस्त्रों के बल से दुश्मनों को धैर्य के साथ परास्त किया।

बाबर ने दिल्ली, आगरा और आसपास के प्रदेशों को, तीन युद्ध में अपने वश में लेकर साम्राज्य की स्थापना की। लेकिन अल्पायु में उसका निधन हुआ। उसके बाद उसका बेटा हुमायूँ राजगद्दी पर आसीन हुआ।

हुमायूँ: प्रारंभ में हुमायूँ ने शत्रुओं को युद्ध में पराजित किया। लेकिन आफ़गन सरदार शेरशाह सूरी से खुद पराजित हो गया। राज्य खोकर पर्शिया की ओर भाग गया। जहाँ वह 15 साल था। आफ़गन का शासन दुर्बल होता गया। उसे देखकर, भारत पर हमला करके दिल्ली पर कब्जा कर लिया। लेकिन अल्पायु में ही हुमायूँ का निधन हुआ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अकबर

हुमायूँ का बेटा अकबर भारत में साम्राज्य स्थापना करने का बड़ा इच्छुक था। इस दिशा में वीर योद्धा, प्रसिद्ध राजपूत राजाओं को अपनी ओर लेना चाहा। कई राजा लोग अकबर के पक्ष में आए। लेकिन मेवाड़ का राजा राणा प्रताप सिंह अकबर के सामने नहीं झुका। वह स्वाभिमानी और महावीर था। इन दोनों के बीच हल्दीघाटी (राजस्थान) में घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में राणा प्रताप सिंह पराजित हुआ, फिर भी अंत तक अकबर के सामने सिर नहीं झुकाया।



अकबर

चेतक नाम का अपने मनपसंद घोड़े पर सवार होकर युद्धभूमि में लड़ने करने वाला बृहत ताँबे की प्रतिमा हल्दीघाटी में देश को आजादी मिलने के बाद स्थापित की गयी। स्वदेशाभिमानी राणा प्रताप सिंह भारतीयों के लिए आँखों के तारे हैं।



राणा-प्रतापसिंह

© SCERT NOT TO BE REPUBLISHED

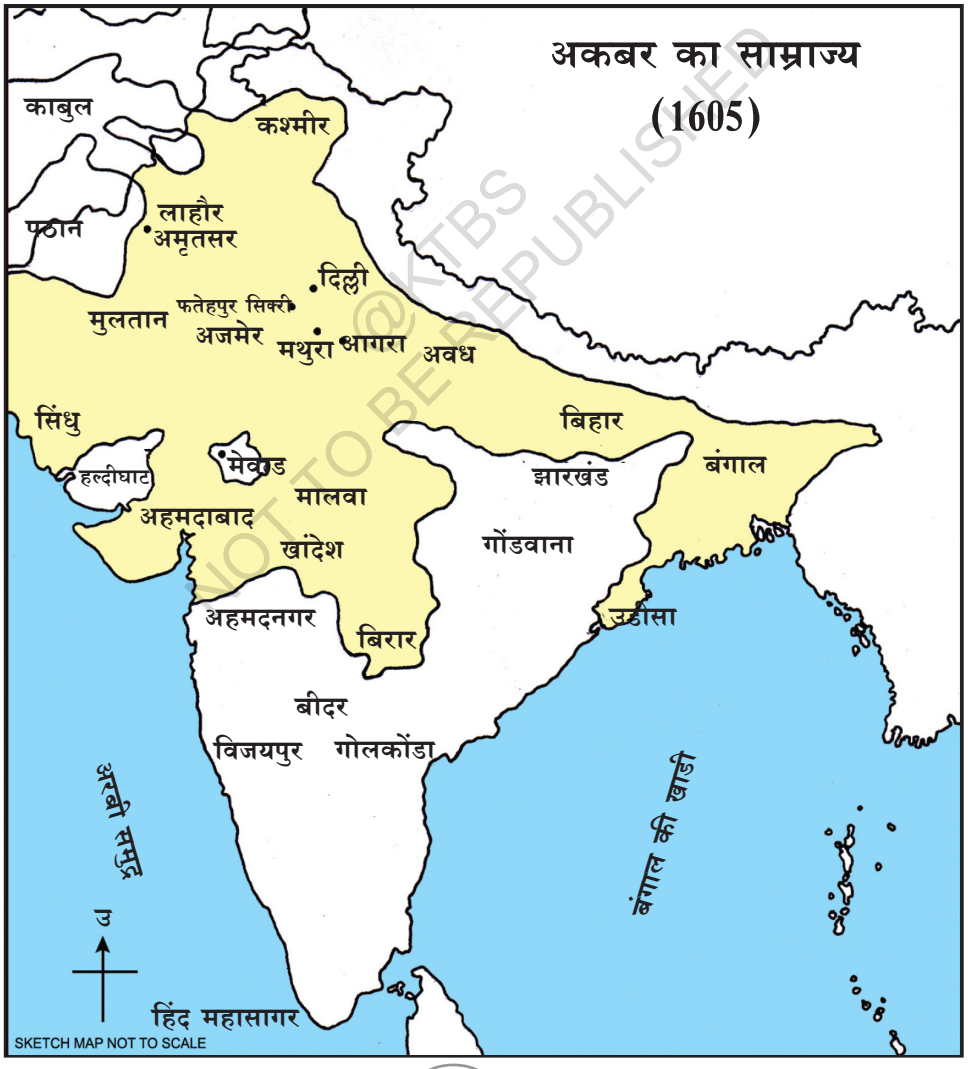
आगे चलकर अकबर ने अनेक सैनिक कर्रवाहियों में सक्रियता से भाग लिया। परिणामस्वरूप गुजरात, बंगाल, कश्मीर, काबुल आदि प्रदेशों को जीतकर बृहत साम्राज्य की स्थापना की।

अकबर की उपलब्धियाँ :

प्रशासनः अकबर उत्तम शासक था। विशाल मनोभाववाला व्यक्ति था। उत्तम राजा के गुण उसमें थे। वह निरंकुश प्रभु नहीं था। उसे सात था कि बहुसंख्या हिंदू प्रजाओं का विश्वास जीतना आवश्यक है। हिंदुओं को अपने दरबार में उच्च अधिकार दिया। पहले मुसलमान राजा लोग हिंदूओं पर लगाये गये 'जेसिया' (जजिया) नामक कर और यात्रा कर को रद्द किया। अकबर ने गौ हत्या और सति पद्धति की प्रथाओं को रोक दिया। बाल-विवाह का विरोध किया। अकबर की भू- कर पद्धति लोकप्रिय हुई। भूकर पद्धति के प्रवर्तक मंत्री राजा तोदरमल थे।

धार्मिक नीति : अकबर धार्मिक सहिष्णु था। अपनी नई राजधानी फतेहपुर सिक्री में 'इबादत् खाना' नामक प्रार्थना मंदिर का निर्माण कराया। इस्लाम, इंदू, जैन, बौद्ध, फारसी, ईसाई आदि धार्मिक नेताओं को बुलाकर उनकी विचारधाराओं को जान लेता था। इन चिंतनों के फलस्वरूप अकबर ने 'दीन-ए-इलाही' नामक अपना ही एक नये पंथ की स्थापना की। उसमें सभी धर्मों के उत्तम अंश थे। लेकिन बहुत ही कम लोग उसके अनुयायी बने।

गतिविधिः दीन-ए-इलाही पंथ पर, एक चर्चा के आयोजन द्वारा विषय संग्रह कीजिए।



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

कलापोषण: अकबर ने साहित्य को विशेष प्रोत्साहन दिया। फैजी, अबुल फजल और बीरबल इस के दरबार के प्रसिद्ध कवि थे। अमर संगीतकार तानसेन ने इसके दरबार का गौरव बढ़ाया। वास्तुशिल्प और चित्रकला को अकबर का प्रोत्साहन प्रशंसनीय है।

अकबर के बाद राजा जहाँगीर और शाहजहाँ दोनों ने अकबर की नीति को ही अपनाया। शाहजहाँ ने आगरा में ताजमहल, दिल्ली में बृहत लाल किला और भव्य राजमहल बनाकर ख्याति प्राप्त की।

औरंगजेब

शाहजहाँ का बेटा औरंगजेब अंतिम प्रसिद्ध मुगल सम्राट था। इसने 50 साल तक सुदीर्घ शासन किया। साम्राज्य और भी विस्तार हुआ लेकिन अंत में उतना ही शीघ्रता से नष्ट हुआ।

धार्मिक नीति : औरंगजेब संप्रदाय वादी मुसलमान था। शराब, जुआ, मौज मस्ती और संगीत से दूर था।

औरंगजेब ने अकबर की उदार नीति नहीं अपनायी। जेसिया कर को फिर से लागू किया हिंदू मेले, शिक्षण और आचरण का निषेध किया। उनके राजाज्ञा के अनुसार अनेक मंदिरों का नाश हुए।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

सिक्खों का विद्रोह: औरंगजेब की धार्मिक विचारधारा ने सिक्ख, मराठा और जाटों को भड़काया। सिक्ख गुरु तेज बहादुर को दिल्ली में वध किया गया। उसका बेटे गुरु गोविंद सिंह ने पूरे सिक्ख समुदाय को वीर दीक्षा दी। दीक्षा पानेवालों को सिंग (सिंह) नामांकित दिया गया। उनको पाँच 'क' कारों अर्थात केश (लंबा केश), कंघा (कंघी), कृपाण (छोटी छुरी), कशे (लंगोट) और कंकण (लोहे का कंगन) पहनना था। यह आचारण सिक्खों में आज भी है।

विद्रोह : उत्तर भारत में सिक्ख और राजपूतों ने औरंगजेब का तीव्र विरोध किया। दक्खन में शिवाजी ने विरोध किया। विद्रोह के दीर्घकाल तक चलने के कारण औरंगजेब ने अपार संपत्ति, सैनिक और सबसे ज्यादा अपनी प्रतिष्ठा

खो दी। साम्राज्य के कई प्रदेश स्वतंत्र हो गए। दक्खन के युद्ध से आर्थिक और शारीरिक रूप से कमजोर औरंगजेब का दक्खन में ही निधन हुआ। इसके साथ-साथ मुगलों की शक्ति कमजोर हो गई।



गुरु गोविंद सिंह



स्वर्ण मंदिर, अमृतसर

मुगलों का शासन

मुगल सम्राट को ही सभी नागरिक और सैनिकों का अधिकार था। न्याय का अंतिम निर्णय इनका ही था।

साम्राज्य को प्रांत (सुबा) जिला (सरकार) और तालुक (परगना) आदि विभागों में बाँटा गया था। नगरों में कोतवाल नामक अधिकारी कानून और सुव्यवस्था का पालन करता था।

कर-पद्धतिः अकबर के मंत्री राजा तोडरमल ने भू-कर पद्धति को लागू किया। भूमि की उर्वरता के आधार पर कर निर्धारित किया गया था।

सांस्कृतिक देन

साहित्यः मुगलों ने फारसी साहित्य को विशेष प्रोत्साहन दिया। अकबर के दरबार में अबुल-फजल, निजामुदीन और बदौनी श्रेष्ठ इतिहासकार थे। 'अकबरनामा' अबुल-फजल की प्रमुख कृति है। मुगल राजकुमार 'दारा शिकोह' श्रेष्ठ विद्वान था। उसने भगवद्गीता का भाषांतरण किया। हिंदी साहित्य राजाश्रय न मिलने पर भी संतों के प्रयत्नों से समृद्ध हुआ। रामचरितमानस तुलसीदासजी की प्रसिद्ध कृति इसी काल की है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

वास्तुकला: दिल्ली में हुमायूँ की समाधि का निर्माण अकबर के प्रारंभिक काल में हुआ था। उसने फतेहपुर सिक्री (आगरा के पास) में नई राजधानी बनायी। राजधानी में भव्य राजमहल, मस्जिद और मंडप देश-विदेशी यात्रियों को आकर्षित कर रहे हैं। यहाँ के जामी मस्जिद का प्रवेश द्वार (बुलंद दरवाजा) भारत में ही सबसे अत्युन्नत है। इसकी ऊँचाई 40 मीटर है।



हुमायूँ की समाधि, दिल्ली

शाहजहाँ आगरा के किले में निर्मित राजमहल, मोती महल सुंदर है। अपनी प्रिय रानी मुमताज की याद में निर्मित आगरा का ताजमहल मुगलों की वास्तुकला का श्रेष्ठ उदाहरण है। शाहजहाँ ने दिल्ली में प्रसिद्ध लालकिला भी बनवाया।



किला, आगरा



लाल किला, दिल्ली

© KJ NOT TO BE REPUBLISHED

चित्रकला : मुगलों के काल में नूतन चित्रकला संप्रदाय का जन्म हुआ। इसे चिकिणी कहते हैं। अकबर के दरबार में सौ से भी ज्यादा चित्र कार थे। चित्रकला जहाँगीर के काल में बहुत विकसित हुई। संप्रदायवादी औरंगजेब ने चित्रकला को प्रोत्साहन नहीं दिया।

संगीत : अकबर के काल में संगीत कला को प्रोत्साहन मिला। दरबार के संगीतकारों को सात समूहों में विभाजित किया गया। रोज एक-एक समूह से संगीत कार्यक्रम चलाया जाता था। तानसेन अकबर के दरबार का अमर संगीतकार था। जहाँगीर और शाहजहाँ के काल में संगीत को प्रोत्साहन मिला। लेकिन औरंगजेब ने संगीत का निषेध किया। फिर भी संगीत जन-मन से नहीं मिटा।

मुगल साम्राज्य की अवनति :

औरंगजेब के काल में साम्राज्य कमज़ोर हुआ। इसके लिए कारण हैं -

- सरदार भ्रष्ट होने लगे।
- सिंहासन के उत्तराधिकार के लिए अंत:कलह हुए।
- प्रांताधिकारी गण इसका नाम पाकर स्वतंत्र शासन करने लगे।
- सबसे मुख्य रूप से भारत को एक संपूर्ण इस्लामी रूप में परिवर्तित करने की औरंगजेब की नीति का सब जगह विरोध व्यक्त हुआ ।
- सिक्ख, राजपूत और मराठों के साथ दीर्घकालीन संघर्षों ने साम्राज्य की शक्ति कुंठित की।
- इस बीच नादिरशाह नामक पर्शियन आक्रमणकार ने दिल्ली पर आक्रमण किया। मुगलों का वे सौ साल में संग्रहीत धन-दौलत को लूट लिया। जगत प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा और मयूर सिंहासन भी ले गया। मुगलों का खजाना खाली हो गया।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

मराठा



छत्रपति शिवाजी

छत्रपति शिवाजी: जब मुगल उत्तर भारत में सत्ता में थे, मुगलों के विरोध में मराठा दक्षिण क्षेत्र में सत्ता में आए। शिवाजी मराठा राजवंश के संस्थापक थे ।

शिवाजी का बाल्य काल: शिवाजी का जन्म पुणे के पास शिवनेरी दुर्ग में हुआ। उसके पिताजी थे शहजी भोंसले। वह विजयपुर के सुल्तान के पास उच्च पद पर रहने के कारण माता जीजाबाई ने शिवाजी के भविष्य का निर्माण किया। उसने रामायण, महाभारत-आदि काव्य पुराणों के वीर-शूरों की कहानियों अपने बेटे को सुनाकर उनमें धर्मरक्षा, देशाभिमान को जागृत किया। गुरु दादाजी कोंडदेव और नानाजी मालसुरे शिवाजी को शस्त्रास्त्र विद्या सिखाकर इस युवा वीर मन को जागृत किया। प्रारंभ में शिवाजी ने मराठों के प्रमुखों और पश्चिम घाटी के मावली नामक दृढकाय पहाड़ी लोगों को मिलाकर युवा सेना का निर्माण किया।

शिवाजी का आरंभिक पराक्रम: शिवाजी ने अपने 19 साल की आयु में ही तोरणदुर्ग पर कब्जा कर लिया, जो विजयपुरा आदिलशाह के अधीन था। बाद में रायगढ़, सिंहगढ, प्रतापगढ़ आदि किलों को एक के बाद एक जीत लिया। इससे क्रोधित होकर विजयपुर के सुल्तान ने शिवाजी को दबाने के लिए अपने सेनानी अफजलखाँ को भेजा। अफजल-खाँ ने संधि के लिए शिवाजी को बुला कर धोखे से उसे मारने का प्रयत्न किया, लेकिन शिवाजी ने अफजल खाँ को मार दिया।

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS

शिवाजी और अफजल खाँ की भेंट के अवसर पर एक दूसरे का आलिंगन करते समय अफजल खाँ, खंजर को शिवाजी की पीठ पर घोंपने से पूर्व ही शिवाजी ने गुप्त रूप से रखे बाघ नख (व्याघ्रनख) से शरीर चीरकर उसको मार दिया।

मुगल सैनिक की हार: शिवाजी को बलशाली होते देखकर औरंगजेब ने शिवाजी के दमन के लिए दक्खन प्रदेश का अधिकारी शयिस्ताखाँ को भेजा। लेकिन शिवाजी ने शयिस्ताखाँ को उपाय से हराया।

शयिस्ताखाँ पूना के राजमहल में ठहरा था। दो साल बीतने पर भी शिवाजी को बन्दी नहीं बना सका। शिवाजी ने सैनिकों के साथ वेश बदलकर शयिस्ताखाँ के आवास स्थान में प्रवेश करके, अचानक हमला कर दिया। इस हमले से शयिस्ताखाँ बच निकला। लेकिन अपना अँगूठा खो बैठा । शयिस्ताखाँ भयभीत होकर पूना से भाग गया।

दखनी के राजा जयसिंह : अगले वर्ष शिवाजी ने मुगल के अधीन में रहे सूरत को घेर लिया और अपार संपदा को वश में कर लिया। क्रोधित औरंगजेब ने शिवाजी को हराने के लिए कसम खाकर राजा जयसिंह को भेजा। उनके बीच युद्ध छिड़ गया। शिवाजी को हारने के साथ कई किले मुगलों को सौंपने पडे। शिवाजी को संधि के लिए दिल्ली बुलाया गया। औरंगजेब ने शिवाजी को गिरफ्तार कर लिया और आगरा के कारागृह में कैद कर लिया। लेकिन शिवाजी कैद से भागने में सफल रहे और अपनी राजधानी पहुँचे।



व्याघ्रनख नामक अस्त्र

दो साल तक शिवाजी ने अपने अधिकार को मजबूत किया। खोए हुए सभी किलों को मुगलों से जीतकर सूरत शहर को घेर लिया और अपार संपत्ति संग्रहीत की।

शिवाजी का राज्याभिषेक : शिवाजी का राज्याभिषेक भारत की राजधानी रायगढ़ में अत्यंत वैभव से हुआ। उन्होंने 'छत्रपति' की उपाधि प्राप्त की। अपने राज्य को 'हिन्दवी स्वराज्य' कहा। शिवाजी ने जिंजी, वेल्लूर और मैसूर प्रांत के विशाल भू-भाग को जीत लिया और बहुत संपत्ति अर्जित की। मराठों के वैभव को देखने के लिए अधिक समय तक शिवाजी जीवित नहीं रहे।

© KSEEB NOT TO BE REPUBLISHED

शिवाजी की प्रशासन पद्धति

प्रशासन की सहायता के लिए 'अष्टप्रधान' नामक आठ मंत्री थे। प्रधानमंत्री को 'पेशवा' नाम से जाना जाता था।

- **राजस्व प्रशासनः** सरकार किसानों को बीज और गाय खरीदने के लिए कर्ज देती थी। खेत में सींचाई की सुविधा की व्यवस्था की गई। उत्पाद का एक तिहाई राजस्व के रूप में एकत्र किया जाता था।
- **सैनिक प्रशासनः** शिवाजी ने सैनिक शासन पर विशेष बल दिया। सेना में पदसेना, घुड़सेना, नौकासेना और तोपदल थे। शिवाजी की सेना अपने अनुशासन के लिए प्रसिद्ध थी। यह प्रजाओं और गायों को नहीं लूट सकती थी।
- **किलेः** शिवाजी गेरिल्ला रण नीति का अनुसरण करता था। गैरिल्ला योद्धाओं की रक्षा के लिए किले, उत्तम स्थान थे। उसने अपने वश में स्थित 240 किलों में से 111 किलों को खुद बनवाया था।



शिवाजी का किला, रायगढ

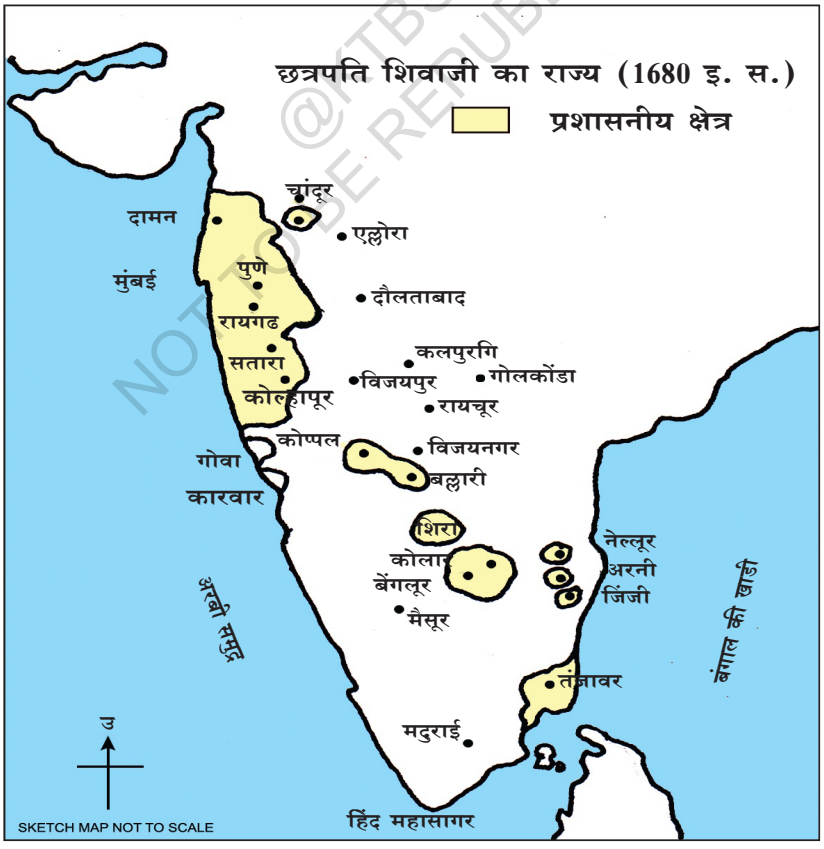
छोटे-छोटे झुंडों में शत्रुओं पर अचानक हमला, शत्रुओं को प्रताडित करने का रणतंत्र ही गेरिल्ला युद्धतंत्र है।

युद्ध के दौरान पकड़ी गई महिलाओं को उनके अभिभावकों को सौंप दिया जाता था। युद्ध के दौरान सैनिक मस्जिदों को नष्ट नहीं कर सकते थे। पवित्र ग्रंथ कुरान, हाथ लगने पर, आदर के साथ संबंधितों को लौटाना होता था।

शिवाजी का व्यक्तित्व और उपलब्धि:

- शिवाजी अपने जीवन में उच्च स्वभाव का शासक, सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे। उनका परधर्म - सहिष्णुता अनुसरणीय था।
- शिवाजी बचपन से ही उत्तम नेता थे। शक्ति को शक्ति से, धोखाधड़ी को धोखाधड़ी से सामना करने की कार्यचतुरता उनमें थी।
- शिवाजी की सैन्य व्यवस्था अद्भुत थी। गेरिल्ला युद्धतंत्र उनकी प्रतिभा का एक उदाहरण था। वास्तव में शिवाजी एक आदर्श व्यक्ति थे।

शिवाजी के गुरु समर्थ रामदासजी, एक बार शिवाजी के पास आए और जब भीख माँगी, तब शिवाजी ने अपना राज्य सौंप दिया। रामदास जी ने इसे स्वीकार कर लिया और (लौटाए)। 'मेरी ओर से तू ही राज शासन करो' यह आशीष दिया। संत रामदास जी की प्रेरणा से महाराष्ट्र में लगभग 1200 व्यायाम शालाओं काल निर्माण कराया गया।



@MTBS NOT TO BE REPUBLISHED

काल गणना:

बाबर	-	1526-1530
अकबर	-	1556-1605
औरंगजेब	-	1659-1707
शिवाजी	-	1627-1680

नये शब्द:

शौर्य	- शूरत्व
प्रतिमा	- मूर्ति
कोतवाल	- किले और शहर के रक्षक
जेसिया	- मुसलमान राजाओं शासकों द्वारा प्रत्येक हिंदुओं पर लगाया गया कर।
सरदार	- मुख्य अधिकारी
हिंदवी स्वराज्य	- हिंदू स्वराजय
छत्रपति	- महाराज

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्द से भरिए :

1. मेवाड़ का एक प्रसिद्ध राजा जिसने अकबर का विरोध किया _____
2. फ़तेहपुर सीकरी का निर्माण _____ सम्राट ने बनवाया था।
3. रामचरितमानस _____ द्वारा रचित एक कृति है ।
4. शिवाजी का जन्म _____ में हुआ था।
5. शाहजहाँ के बेटे का नाम है _____

II. समूह में चर्चा कीजिए और उत्तर दीजिए:

6. मुगल काल के सांस्कृतिक योगदान क्या थे ?
7. अकबर के प्रशासन की व्यख्या करें ।
8. मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बताइए।
9. माँ जीजाबाई ने शिवाजी के भविष्य का निर्माण कैसे किया?
10. विजयपुर के सुल्तान ने शिवाजी का विरोध क्यों किया?
11. शयिस्ताखाँ कौन है? शिवाजी के साथ उनके संघर्ष का परिणाम क्या हुआ?
12. शिवाजी का राज्याभिषेक कहाँ हुआ उस संदर्भ में उसे प्राप्त उपाधि कौन सी है?
13. आपको शिवाजी के कौन-कौन से गुण अच्छे लगते हैं? क्यों?

गतिविधियाँ

1. मुगलों की वास्तुकला के चित्रों को विवरण सहित संग्रहीत कीजिए।
2. मुगल काल के ऐतिहासिक स्थलों को मानचित्र में पहचानिए।
3. अकबर और औरंगजेब के रवैये में निहित अंतर्विरोधों पर चर्चा करते हुए एक रिपोर्ट तैयार करें ।
4. मानचित्र में शिवाजी से संबंधित ऐतिहासिक स्थलों को पहचानिए ।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय 16	भारतीय वैचारिकता तथा भक्ति पंथ

B8L5R3

धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन

पाठ परिचय:

• शा.सा. 8 वी सदी से 16 वीं सदी तक कई धार्मिक सुधारकों का जन्म हुआ। वे चिंतनशील थे और उन्होंने वैचारिकता के आधार पर धर्म और समाज का पुनर्जागरण किया।

• इस पाठ में धार्मिक सुधार आंदोलन के अग्रणी शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य और बसवेश्वर के जीवन तथा उनके द्वारा हुए सुधारों का संक्षिप्त विवरण है।

• क्या आप पुरंदरदास और कनकदास से परिचित हैं? उन्होंने समाज के लिए क्या योगदान दिया है? उनकी तरह उत्तर भारत में संतों ने अपनी उपदेशों से समाज को जगाया।

• भक्ति संप्रदाय का आशय, अर्थ और विशेषताएँ बताई गई हैं। श्री चैतन्य, गुरुनानक, मीराबाई और सूफ़ी संतों का परिचय दिया गया है। साथ ही विभिन्न संप्रदायों के समरसता और देशी भाषाओं की समृद्धि में भक्ति पंथ के योगदान का वर्णन किया गया है।

सामर्थ्य

1. धार्मिक सुधारकों के विचारों और सुधारों को समझना।
2. उनके चिंतन आज के संदर्भ में कितना प्रस्तुत है. इस विषय को समझना।
3. भक्ति संतों के उपदेश, सामाजिक समरसता में उनकी देन को समझना।
4. संतो के उपदेशों को समझकर उदारता को अपनाना ।

NOT TO BE REPUBLISHED © KSBSE

भारत में अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ है। ये केवल बोधक ही नहीं बल्कि सक्रिय होकर समाज सुधारक भी थे। उनके सुधारों ने लोगों के अज्ञान और बुरी परंपराओं को दूर किया। इसका प्रभाव आज भी व्यापक रूप में फैला है।

श्री शंकराचार्य

शंकराचार्य का जन्म केरल के कालडी नामक गाँव में हुआ। वे इतने प्रभावशाली थे की आठ साल की उम्र में ही इन्होंने चार वेदों को जान लिया।
शंकर के पिता शिवगुरु और माता आर्यम्बे। शंकराचार्य से प्रतिपादित तत्व को अद्वैत कहते हैं।

शंकराचार्य के सुधार कार्य :



श्री शंकराचार्य

- शंकराचार्य ने उस समय के हिन्दु समाज में कई सुधार किए। और लोगों को ज्ञान के पथ पर अग्रसर किया।
- अद्वैत सिद्धांत के माध्यम से प्रचार किया कि मानव जाति एक है और यहाँ सभी समान है ।
- वे जातियों के नाम पर होनेवाले झगड़ों को रोककर समाज सुधारक बने।
- शंकराचार्य ने बदरी (उत्तराखण्ड), द्वारका (गुजरात), पुरी (ओडिसा) तथा कर्नाटक के श्रृंगेरी में पीठों की स्थापना की। ये भारतीयों को भावनात्मक और धार्मिक रूप से जोड़ने के केंद्र बन गये।
- शंकरजी ने कई शास्त्रग्रंथों की रचना की। उनमें से 'भज गोविंदम्' आज भी जनप्रिय है। शंकराचार्य के 32 साल की जीवित अवधि में उनकी उपलब्धियाँ सबको विस्मित कर देती हैं।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

श्री रामानुजाचार्य



श्री रामानुजाचार्य

रामानुजाचार्य का जन्म चेन्नई के पास श्री पेरंबदूर में हुआ। कांची नगर में शास्त्राध्ययन किया।

रामानुजाचार्य के पिता का नाम केशव दीक्षित और माता का नाम कांतिमती था। उनके द्वारा प्रतिपादित सिध्दांतों को विशिष्टाद्वैत कहते हैं।

रामानुजाचार्य ने देश की चारों दिशाओं में घूमकर वैष्णव धर्म का प्रचार किया। उन्होंने कहा है - "मुक्ति के लिए भक्ति और शरणागति ही मुख्य है।" कर्नाटक के होयसल राजा विष्णुवर्धन ने उनका स्वागत किया था।

रामानुजाचार्य के सुधार कार्य :

1. रामानुजाचार्य ने जाति सम रसता को प्रोत्साहित किया।
2. उन्होंने जातिवाद की निंदा करके सभी जातियों को भक्ति के सिद्धांत का उपदेश दिया ।
3. उन्होंने कहा कि मुक्ति के लिए भक्ति और समर्पण बहुत जरूरी है ।



चेलुवनारायण देवलाय, मेलुकोटे

4. उन्होंने हमें बिना किसी इच्छा के ईश्वर के प्रति समर्पण करने को कहा।
5. भक्ति मार्ग से मोक्ष प्राप्ति का प्रतिपादन किया ।
6. रामानुजाचार्य मेलुकोटे तथा दक्षिण भारत के अनेक भव्य देवालयों के निर्माण के कारण बने।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

श्री बसवेश्वर


श्री बसवेश्वर

कर्नाटक के सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलन में बसवेश्वर ने अत्यंत क्रांतिकारी पात्र निभाया। बसवेश्वर विजयपुर (बिजापुर) जिले के बसवन बागेवाडी के थे। बचपन में उपनयन संस्कार के बदले लिंग दीक्षा ली। उनकी शिक्षा कूडलसंगम में हुई।

बसवेश्वर के पिता मादरस और माता मादलांबिका थे। बसवन बागेवाडी अग्रहार के शैव ब्राह्मण थे। बसव तत्व को शक्ति विशिष्टद्वैत कहा जाता है।

कल्याण के शासक कलचूरी वंश के बिज्जल ने बसवेश्वर को भंडार के अधिकारी के रूप में नियुक्त किया। कल्याण में बसवण्णाजी क्रांतिकारी चिंतन का प्रसार करने लगे। संप्रदायवादी उसका विरोध करने लगे। इससे दु:खित होकर वे कल्याण छोड़कर कूडलसंगम की ओर चले गए। ऐसा माना जाता है कि बाद में कूडलसंगम में ऐक्य हुए।

NOT TO BE REPUBLISHED ©KTBS

बसवेश्वर के सुधार कार्य :

- बसवेश्वर ने जाति रहित और वर्गरहित समाज निर्माण की ठान ली।
- 'कायक ही कैलास' यह उनके मुख्य तत्वों में से एक है।
- बसवण्ण ने जातीयता, मूर्तिपूजा यज्ञ-याग आदि का खण्डन किया। देह को ही 'देवालय' कहा।
- 'स्त्री, माता है, वही सर्वस्व' है यह उक्ति, खोये हुए मनोबल को जागृत करके स्त्रीयों में आत्मविश्वास भर दिया।
- उन्होंने बसवकल्याण में 'अनुभव मंडप' की स्थापना की। यह वचनकारों की वेदी बनी थी।
- बसवेश्वर ने हज़ारों से अधिक वचनों की रचना की। ये 'कूडलसंगमदेव' अंकित नाम से पूर्ण होते हैं।
- मानव जाति के कल्याण के लिए वचन आंदोलन के नेता श्री बसवेश्वर का संदेश सार्वकालिक हैं। इस पृष्ठभूमि में, कर्नाटक सरकार ने 13-02-2024 को विश्वगुरु बसवन्ना को कर्नाटक का सांस्कृतिक नेता घोषित किया है ।

गतिविधियाँ : बसवण्ण के उन तीन वचनों को इकट्ठा करें, जो आप को महत्व पूर्ण लगते हैं। उनमें पाए जाने वाले आध्यात्मिक सिध्दांतों को समझकर उस विषय पर दस वाक्य लिखिए।

मतलब, भक्ति से किये जानेवाला परिश्रम है कायक का इससे आए हुए फल को समान रूप से स्वीकार करना ही दासोह कहलाता है। बसवेश्वर का लक्ष्य लोगों में परिश्रम करने की प्रवृत्ति को बढ़ाना था।

वचन साहित्य : 'वचन' एक विशिष्ट साहित्य का प्रकार है। वचनों को गद्य की तरह पढ़ सकते हैं और पद्य की तरह गा भी सकते हैं। जेडर दासिमय्या, अल्लमप्रभू, चेन्नबसवण्णा, अक्कमहादेवी-आदि वचनकार थे। ये सभी जाति, वर्ग के थे। वचनों में प्रकटित चिंतन आज भी प्रचलित हैं।

श्री मध्वाचार्य



श्री मध्वाचार्य

मध्वाचार्य का जन्म उडुपी के पास पाजक (बेल्ले) ग्राम में हुआ।

सन्यास स्वीकार करने के बाद मध्वाचार्य जी ने अपने उपदेशों के प्रचार के लिए दो बार संपूर्ण भारत की यात्रा की। विष्णु उनके आराध्य दैव थे।

तुलु ब्राह्मण के मध्यगेहभट्ट और वेदावती इनके माता-पिता थे। ये द्वैत सिध्दांत के प्रतिपादक थे।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

मध्वाचार्य के सुधार कार्य:

- मध्वाचार्य द्वैत सिध्दांत के संबंध में संस्कृत में अनेक ग्रंथों की रचना की।
- अष्टयतियों को उडुपी में श्रीकृष्ण की पूजा के लिए नियुक्त किया गया।
- उन्होंने सरल भक्ति मार्ग का उपदेश दिया।



उडुपी, श्रीकृष्ण देवालय

मध्वाचार्य ने कृष्ण की पूजा अष्टयतिथों द्वारा दो महीने में एक बार बारी-बारी से करने की व्यवस्था की । वादिराजा ने इसकी पुमरावृत्ति दो वर्ष के लिए विस्तार किया।

अष्टमठ के साथ उत्तरादि, व्यासराज और राघवेन्द्र मठ-आदि मध्वत्तत्व के अनुयायियों के मुख्य धर्मकेंद्र हैं।

कर्नाटक, आंध्र, तमिलनाडू और महाराष्ट्र में मध्वाचार्य के उपदेशों से लोग प्रभावित हुए।

भक्ति पंथ

हमारा देश संतों की भूमि है और इस भूमि पर समय-समय पर सैकड़ों संतों का जन्म हुआ है। उन्होंने समाज में सामंजस्य ही नहीं बल्कि लोगों को भी सन्मार्ग पर अग्रसर किया। उन्होंने सामाजिक कमियों पर भी प्रकाश डाला।

संतों ने भक्ति का उपदेश दिया। उनका मानना था कि भक्ति ही भगवान की कृपा पाने का एकमात्र मार्ग है। इस परंपरा को भक्तिपंथ कहा जाता है।

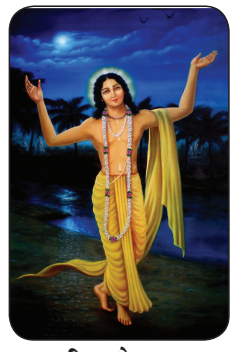
भक्तिपंथ का सार :

- भक्ति पंथ ने भेद-भाव की निंदा की। समानता की घोषणा की।
- भक्त संत अंधविश्वास का विरोध के साथ-साथ निंदा करते हैं।
- सूफियों का दावा है कि धर्म अर्थात् प्रेम और मानव सेवा है। उन्होंने कहा कि भगवान एक है उनके नाम अनेक हैं।
- संतों ने लोगों के दिलों को जोड़ने का काम किया।

भक्त संत :

श्री चैतन्य : इनका जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था। चैतन्य ने जाति भेद को इनकार करत हुए कहा कि भक्ति ही मोक्ष का एकमात्र मार्ग है।

प्रेम, भाईचारा और दानशीलता उनके शिक्ष का सार है, इन्होंने भारत में हर जगह तीर्थ यात्रा करके प्रेम-संदेश का प्रसार किया।



श्री. चैतन्य

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



गुरुनानक

गुरुनानक : गुरुनानक सिख संप्रदाय के संस्थापक थे। इनका जन्म वर्तमान पाकिस्तान में स्थित पंजाब में हुआ था। इन्होंने हिन्दु-मुस्लिम मतों पर समान बल दिया। 'ग्रंथ साहिब' नामक सिखों के पवित्र ग्रंथ में जपजी नामक गीत है। भगवान का नाम जपना और अच्छे कार्यों पर जोर दिया गया है। इसमें पुरुषों और महिलाओं की समानता पर जोर दिया गया है। राजाओं और प्रवादियों को जन्म देनेवाली स्त्रियाँ, पुरुषों से कम कैसे हो सकती है? यह नानकजी का सवाल हैं । मेरे पास एक लाख जीभ होते हुए भी उन जीभों से मैं एक ही परमेश्वर की स्तुति करता हूँ। यह नानक का कथन है। अपने देश सचार के दौरान वे कर्नाटक आये थे। यहाँ बीदर के जिस स्थान में वे ठहरे थे, उस स्थान को 'नानक झरा' कहा जाता है।

मीरा बाई : 'कलियुग राधा' के रूप में पूजनीय संत मीराबाई एक महान भारतीय भजनकार भी है। इनका जन्म राजस्थान के राजपूत राजवंश में हुआ। उन्हें अपने दादाजी द्वारा दी गई कृष्ण की मूर्ति के साथ दिन बिताने का बहुत शौक था। भगवान कृष्ण इनके आराध्य देव थे। इनकी सास ने कृष्ण की पूजा का कड़ा विरोध किया। सास के इस बर्ताव को मीरा रोक न पाई। वह महल छोड़कर भगवान कृष्ण के क्षेत्र वृंदावन चली गई। उसके भजनों में भक्ति और प्रेम भाव भरे हुए हैं। 'गिरिधर गोपाल' नामक देवता की वह पूजा करती थी। अपने सैकड़ों भजनों द्वारा मीरा ने जन - मन में शाश्वत स्थान प्राप्त किया।



मीराबाई

© BOOKS NOT TO BE REPUBLISHED

अन्य महत्वपूर्ण भक्तः

- **कबीरदास :** कबीर ने जाति व्यवस्था का अन्याय, मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा, उपवास, मूनतों और धार्मिक प्रवर्तनों की निंदा की। उन्होंने कहा कि वे अल्लाह और राम की संतान हैं।
- **तुलसीदास :** तुलसीदास का प्रसिद्ध काव्य 'रामचरित मानस' है।
- **सूरदास :** वे एक संत कवि थे, जो जन्म से अंधे थे। 'सूरसागर' इनकी प्रसिद्ध कृति है।

सूफ़ीपंथ: सूफ़ीपंथ की उत्पत्ति अरब में हुई और भारत में प्रवेश किया। सूफ़ी संत, गरीबी के प्रतीक के रूप में मोटे ऊन के कपडे (सूफ़) पहनते थे। इसलिए उन्हें सूफ़ी कहा गया। समय के साथ सूफ़ी योग, वेदांत और बौद्ध धर्म के विचारों से प्रभावित हुए। कई सूफ़ी संत जैसे बाबा बुडन दत्तात्रेय के उपासक थे। इसी प्रकार विजयपुरा के बुडन अलादीन ने अपन गीतो में कृष्ण की स्तुति की है।

सूफ़ियों का दावा है कि धर्म का अर्थ प्रेम और मानव सेवा है। कीर्तन और नर्तन इनकी भक्ति की शैली थी। रुढ़िवादियों ने इन दोनों को बहिष्कार किया। सूफ़ियों में महिलाएँ भी थीं। सूफ़ी अनुयायी 'रबीहा' नाम की महिला को आज भी पूज्यभाव से देखते थे।



निजामुद्दीन औलिया

निजामुद्दीन औलिया : भारत के प्रमुख सूफ़ी संत थे। ये दिल्ली में बस गए और गरीबी में जीवन बिताया। घासवाली मस्जिद इनकी गतिविधियों का केंद्र था। उसने दिल्ली के सुल्तान द्वारा दान में प्राप्त हुए एक गाँव को अस्वीकार किया। ये राजनीति से दूर रहे। इन्होंने उन भक्तों को सद्गुण और दया का संदेश दिया जो उनसे मिलने आते थे।

बंदेनवाज : वे कर्नाटक के प्रसिद्ध सूफ़ी संत थे। उनका आकर्षक दरगाह कलबुर्गी में है। बंदेनवाज को हिंदु, केशव चैतन्य के रूप में पूजते थे।

चिश्ती : सूफ़ी संप्रदाय में चिश्ती पंथ प्रमुख है। इसके स्थापक मुइनुद्दीन चिश्ती अजमेर आए और वहाँ अपना केंद्र स्थापित किया। दैवभक्ति, गुरु की सेवा तथा सदाचार, चिश्ती अनुयायियों की विशेषता है। चिश्तियों को हिंदू-मुस्लिम समन्वय की परवाह थी। उन्होंने बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए कृतियों की रचना की। सलीम चिश्ती आगरा के फतेहपुर में प्रसिद्ध है।



सलीम चिश्ती का मकबरा, आगरा

© SCERT NOT TO BE REPUBLISHED

भक्ति पंथ का प्रभाव :

- हिंदू-मुस्लिम समन्वय में संतों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- भक्त संतों ने बोलचाल की भाषाओं में साहित्य की रचना की। इनसे भारतीय भाषाएँ समृद्ध बनीं।

कालक्रम :

शंकराचार्य	-	8- 9 वीं शताब्दी
रामानुजाचार्य	-	11-12 वीं सदी शताब्दी
बसवेश्वरजी	-	12 वीं शताब्दी
निजामुद्दीन औलिया	-	1238 - 1325
मध्वाचार्य	-	13-14 वीं शताब्दी
मुइनुद्दीन चिश्ती	-	13 वीं शताब्दी
गुरु नानक	-	1469 - 1538
श्री चैतन्य	-	1486 - 1534
मीराबाई	-	1498 - 1546
बंदेनवाज़	-	15 वीं शताब्दी
सलीम चिश्ती	-	16 वीं शताब्दी

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

नये शब्द :

दीक्षा - मंत्रोपदेश भंडार - खजाना

संप्रदाय - अतीत से अनुष्ठानित आचार - विचार

झरा - मीठ पानी के फव्वारें

ज्ञात रहे:

श्री चैतन्य का जन्म स्थान पश्चिम बंगाल का नवद्वीप (नदिया) गुरु नानक का जन्मस्थान तलवंडी, मीराबाई जोधपुर का राठौड रतनसिंह की इकलौती पुत्री।

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्द से भरिए :

1. गुरू नानक के गीत _____ कहलाते हैं।
2. सिख्खों का पवित्र ग्रंथ _____ है ।
3. रामानुजाचार्य का जन्म _____ में हुआ था ।
4. _____ को कलियुग की राधे कहा जाता है ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

5. शंकराचार्य के सुधार कार्य कौन-कौन से हैं ?
6. बसवेश्वर के विचार क्या हैं?
7. वचन साहित्य का क्या महत्व है? कुछ वचनकारों के नाम बताइए।
8. भक्तसंतों ने क्या उपदेश दिया ?
9. भारत के सबसे प्रमुख सूफ़ी संत कौन हैं?
10. पंथ भक्ति का प्रभाव बताइए।
11. बंदेनवाज़ दरगाह कहाँ है ?
12. तुलसीदास का प्रसिद्ध महाकाव्य कौन सा है ?
13. गुरू नानक का प्रसिद्ध कथन क्या है ?
14. भक्तिपंथ का सार क्या है?

चर्चा कीजिए :

1. भक्तिसंतों के उपदेशों की प्रासंगिकता।
2. समूह में समाज सुधारकों द्वारा लाए गए परिवर्तनों पर चर्चा करें ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश

क्रम संख्या	राजवंश	संस्थापक	प्रसिद्ध राजा	राजधानी
1.	मौर्य	चन्द्रगुप्त मौर्य	अशोक	पाटलीपुत्र
2.	कुषाण	कुजुल कड़फिसस	कनिष्क	पुरुषपुर
3.	गुप्त	श्रीगुप्त	समुद्रगुप्त/द्वितीय चंद्रगुप्त	पाटलीपुत्र
4.	वर्धन	पुष्यभूती	हर्षवर्धन	कनौज
5.	कार्कोट	दुर्लभवर्धन	ललितादित्य	परिहासपुर
6.	रजपूत			
a)	गुर्जर प्रतिहार	हरिश्चंद्र	नागभट/मिहिरभोज	उज्जयिनी
b)	चौहाण	वासुदेव चौहाण	तृतीय पृथ्वीराज चौहाण	दिल्ली
c)	पाल	सिंहराज	धर्मपाल	मुडगागिवरी
d)	गुहिल	बप्पारावाल	राणा कुंभ/ राणा सांग	मेवाड़
e)	पारमार	उपेंद्र कृष्णराज	सियाखा	धारा
f)	सोलंकी	प्रथम मूलराज	प्रथम भीमराय	अनहीलवाड़
g)	चंदेल	नन्नुक	डंग	खजुराहो
7.	अहोम	सुकपा	सुपाथ्पा	चिरैडिया
8.	दिल्ली सुल्तान			
a)	गुलामी वंश	कुत्बुद्दीन ऐबक	इल्तमश	दिल्ली
b)	खिल्जी वंश	जलालुद्दीन खिल्जी	अल्लाउद्दीन खिल्जी	दिल्ली
c)	तुघलक वंश	घियासुद्दीन	मुहम्मद बिन तुघलक	दिल्ली
d)	सैयद वंश	खिजर खान	खिज़र खान	दिल्ली
e)	लोदी वंश	बहुलोल लोदी	सिकंदर लोदी	दिल्ली
9.	मुघल	बाबर	अकबर	दिल्ली
10.	मराठा	शिवाजी	शिवाजी	रायगढ़

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS

गतिविधियाँ:

1. शंकरजी, रामानुज, बसवेश्वर और मध्व के जीवन चरित्र को पढ़िये।
2. बसवेश्वर के दस वचनों का संग्रह कीजिए।
3. कुछ वचनकारों के और उनके उपनाम संग्रह कीजिए।
4. पाठशाला समारोहों में आचार्य, संतों और शरणों के वेशभूषाओं को पहनकर उनके उपदेशों को व्यक्त कीजिए।
5. 'कलबेडा कोलवेडा'- इस वचन में कौन-कौन से जीवन मूल्य मिलते है? क्या आज हम समाज में इन मूल्या को देख रहे हैं? अगर नहीं तो कारणों को एकत्रित करें और चर्चा कीजिए।
6. शंकरचार्य, रामानुजाचार्य और मध्वाचार्य द्वारा सिखाए गए सिद्धांतों को एकत्रित कीजिए और चर्चा कीजिए।
7. भक्तिसंतों के चित्रों को विवरण सहित संग्रह कीजिए।
8. श्री चैतन्य, गुरुनानक, मीराबाई, तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास और सूफ़ी संतों की जीवनी पढ़िए।
9. मीरा भजनों को सुनिए।
10. इंटरनेट द्वारा सूफ़ी पंथ के विचार पर अधिक विवरण संग्रहीत कर भारत के बहुसंख्यक समाज पर उनका प्रभाव और वर्तमान संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता पर चर्चा करके एक पृष्ठ का प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

☆ ☆ ☆

अध्याय 17	प्रजातंत्र

H5C9T5

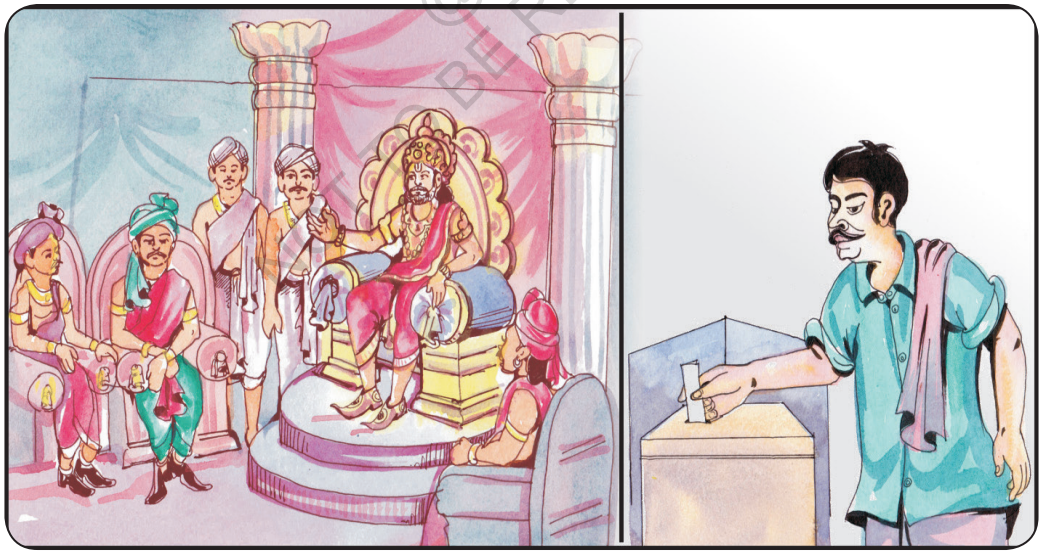
पाठ परिचय:

• पहले हमारे भारत पर राजाओं का शासन था। समय के साथ राजतंत्र लुप्त हो गया। प्रजातंत्र व्यवस्था लागू की गई । यह पाठ इस परिवर्तन के कारणों को समझते हुए प्रजातंत्र के महत्व, चुनाव और चुनावी प्रक्रियाओं की भूमिका पर एक विहंगम दृष्टिकोण प्रदान करता है ।

सामर्थ्य

1. राजशाही और लोकतंत्र के बीच का अर्थ और अंतर जानना ।
2. प्रजातंत्र के महत्व को समझना ।
3. प्रजातंत्र में चुनाव की भूमिका और मतदान के महत्व को समझना ।
4. चुनावी प्रक्रियाओं को समझना ।

© TBS NOT TO BE REPUBLISHED



1. बायीं ओर के चित्र को देखिये, सिंहासन पर कौन बैठा है ?
2. उसके आस-पास में कौन बैठे हैं ?

3. तस्वीर में दाहिनी ओर वाला व्यक्ति क्या कर रहा है ?

4. क्या आपने कभी वोट दिया है ?

प्राचीन काल में चंद्रशयन नाम का एक राजा रत्नापुर नामक शहर पर शासन करता था। उसकी रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया और मर गयी। कुछ समय बाद राजा ने एक दरबारी नर्तकी से विवाह कर लिया। बाद में उनके यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ। बड़े भाई गुरुकुल में पढ़े और बुद्धिमान बने। वृद्धावस्था में राजा ने अपने सबसे बड़े पुत्र को युवराज की उपाधि प्रदान की। इससे राजनर्तकी की वह इच्छा टूट गई कि खुद का पुत्र राजा बने। उसने अपने बेटे के मन में बुरे विचार बोल दिये। सत्ता के लिए भाइयों के बीच लड़ाई शुरू हो गई। राजा चिंता के मारे चल बसा ।

भाइयों की आपसी लड़ाई के कारण राज्य का प्रशासन बिगड़ गया। लोगों की समस्या सुनने वाले नहीं रहे। हत्या, अत्यचार बढ़े। इससे नागरिक तंग आ गये। वे सभी एक हाकर अपने राज्य का प्रशासन स्वयं चलाने का निर्णय लिया। उन्होंने इसके लिए आवश्यक कानून बनाये। सभी उनकी बात मानने को तैयार हो गये। इस प्रकार रत्नापुरा में राजा का शासन (राजशाही) समाप्त हो गया। जनता का शासन (लोकतन्त्र) प्रारम्भ हुआ ।

1. राजा ने किसे ताज पहनाया ?

2. राजा की मृत्यु के बाद आमतौर पर राजगद्दी किसे मिलती है?

3. राजशाही में सत्ता के लिए अंदरूनी कलह के क्या दुष्परिणाम होते हैं ?

4. राजशाही के बारे में आप क्या सोचते हैं ?

राजतंत्र

उपरोक्त कहानी में हम दो प्रकार की शासन व्यवस्था को पहचान सकते हैं। वही राजतंत्र और लोकतंत्र ।

जब शासन की समस्त शक्तियाँ एक ही व्यक्ति के हाथ में होती हैं तो उसे 'राजतन्त्र' कहा जाता है। यहाँ सब कुछ राजा की इच्छा से होता है। उनके

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

शासन की कोई अवधि की कोई सीमा नहीं होती। एक राज्य एक चतुर और साहसी राजा से मज़बूत होता है। नागरिक खुश रहते हैं। लेकिन एक कमजोर राजा के शासन से राजतंत्र का अंत होता है ।

लोकतंत्र का अर्थ :

नागरिकों द्वारा चुनाव के माध्यम से अपने प्रतिनिधियों को चुनने वाली राजनीतिक व्यवस्था को 'लोकतंत्र' कहा जाता है। यह नागरिकों की सरकार है। उनका प्रमुख उद्देश्य नागरिकों का कल्याण है ।

महत्व :

लोकतंत्र एक जन हित राजनीतिक व्यवस्था है। इसमें कुछ अच्छे अंश हैं।

1. शासन नागरिकों द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों से होता है ।
2. यहाँ सभी की समानता का अवसर है ।
3. नियमित चुनाव होते हैं और जनता के प्रतिनिधि कार्य करते हैं ।
4. मुद्दों पर चर्चा होती है और जनपर फैसले लिये जाते हैं ।
5. लोकतंत्र में लोगों को सोच-समझकर फैसले लेने की ज़रूरत है ।

लोकतंत्र की चुनौतियाँ :

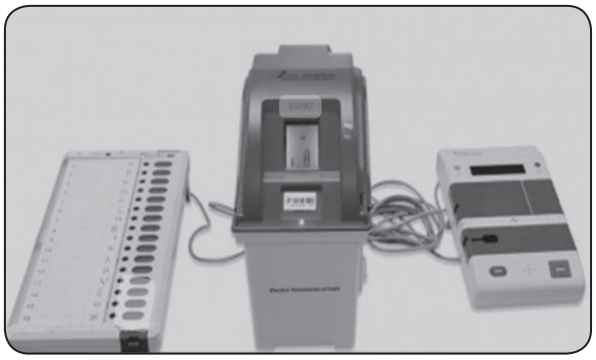
1. वोट प्राप्त करने के लिए कभी-कभी धन का लालच और बल का उपयोग किया जाता है ।
2. जाति, पंथ, भाषाएँ भी चुनाव को प्रभावित करती हैं ।
3. चुने गये प्रतिनिधि अपने स्वार्थ के लिए पक्ष छोड़कर दूसरे पक्ष में शामिल हो जाते हैं। इस तरह दल बदलने से सरकार अस्थिर होती है।
4. इस प्रणाली में ठगों और अपराधियों के चयन की संभावना रहती है ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

चुनाव



मतदान



विद्युत वोटिंग मशीन

1. लोग कतार में क्यों जा रहे हैं ?
2. क्या आपने कभी ऐसी स्थिति देखी है?
3. मतपत्रों या वोटिंग मशीनों पर चिन्ह क्यों देते हैं ?

लोकतंत्र में प्रतिनिधि चुनाव के माध्यम से चुने जाते हैं। मतदान निर्वाचन प्रणाली का मुख्य अंग है। भारत में अठारह वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों को वोट देने का अधिकार है। मतदाता गुप्त मतदान द्वारा उम्मीदवारों का चयन करते हैं ।

उम्मीदवारों को चुनाव चिन्ह जारी कर दिए जाते हैं। इन चिन्हों को देखकर अनपढ़ लोग भी मतदान कर सकते हैं ।

मतदान का महत्व : मतदान नागरिकों को चुनाव में अपनी पसंद के प्रतिनिधि को चुनकर अपनी राय व्यक्त करने में मदद करता है। यह सभी वर्गों के लोगों के प्रतिनिधित्व की अनुमति देता है ।

चुनाव प्रक्रिया : चुनाव एक कार्यक्रम के अनुसार आयोजित किए जाएंगे ।

©KTSS NOT TO BE REPUBLISHED

1. चुनाव अधिसूचना जारी होना।
2. प्रारंभ में अभ्यर्थियों उम्मीदवारों द्वारा नामांकन पत्र जमा करना ।
3. नामांकन का सत्यापन
4. उन उम्मीदवारों द्वारा नामांकन वापस लेना जो चुनाव से हटना चाहते हैं ।
5. चुनाव के लिए उम्मीदवारों और पक्षों के नेताओं द्वारा चुनाव प्रचार ।
6. निर्दिष्ट दिन पर मतदान ।
7. वोटों की गिनती और परिणामों की घोषणा ।
8. विजयी उम्मीदवारों की सूची जारी ।

नए शब्द :

मतदान - चुनाव, मतदान में अपनी पसंद व्यक्त करना । वोट देना।

वंशानुगत प्रशासन - एक ही परिवार द्वारा शासन

मतपत्र - पर्ची जिस पर उम्मीदवार का नाम और चुनाव चिह्न मुद्रित हो ।

गुप्त मतपत्र - एक ऐसी प्रणाली जहाँ कोई नागरिक यह घोषित किए बिना गुप्त रूप से मतदान कर सकता है कि उसने किस पक्ष या उम्मीदवार को वोट दिया है ।

मतदान केंद्र - मतदान स्थल ।

आपको ज्ञात रहे :

- आजकल मतदान के लिए इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीनों का उपयोग शुरू हुआ है।
- चुनाव आयोग को भारत में चुनाव कार्य संचालित करने का अधिकार है। यह आयोग स्वतंत्र रूप से कार्य करता है ।

© KSEEBSCERT NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्द से भरिए :

1. अगर सारी शक्ति एक व्यक्ति के पास हो तो उसे _____ कहते हैं ।
2. वोट देने की उम्र _____ होनी चाहिए ।
3. मतदान के स्थान को _____ कहते हैं ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

4. लोकतंत्र क्या है ?
5. लोकतंत्र का महत्व क्या है ?
6. लोकतंत्र की चुनौतियाँ क्या है ?
7. मतदान का क्या महत्व है ?

III. समूह में चर्चा करें और उत्तर दें ।

8. चुनाव प्रसार के लिए उम्मीदवारों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएँ।
9. लोकतंत्र की सफलता में हमारी भूमिका ।

गतिविधि

भारत में राजनैतिक दलों के चुनाव चिन्ह संग्रहित कर एल्बम बनाए।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय 18 राज्य निर्देशक तत्व

U1Y4I1

पाठ परिचय

हमारे संविधान के चौथे भाग के अनुच्छेद 36 से 51 राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों को प्रतिपादिन हैं । ये निर्वाचित सरकार के लिए संविधान का आशय को लागू करने के लिए दिशानिर्देश हैं। यह पाठ उनकी व्याख्या और महत्वपूर्ण चर्चा को शामिल करता है ।

सामर्थ्य :

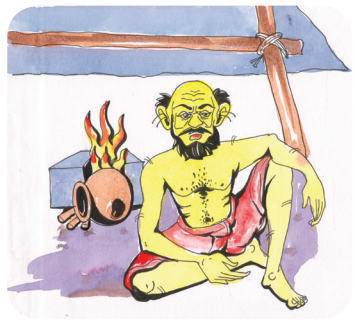
1. राज्य नीति निदेशक सिद्धांतों के उद्देश्यों को जानना ।
2. यह समझना कि कैसे राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत एक समृद्ध राज्य की स्थापना में पूरक हैं ।

© KSEEB NOT TO BE REPUBLISHED

सुखी राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत समाजवादी और उदार बौद्धिक सिद्धांतों के कार्यान्वयन के लिए संविधान के चौथे भाग में गांधी द्वारा संवैधानिक राज्य को दिए गए दिशानिर्देश हैं। संविधान का नैतिक निर्देश है कि जो भी सरकार सत्ता में आये, उसे इन सूत्रों का पालन करना चाहिए। ये भारत के समग्र विकास की आधारशिला है ।

राज्य के नीति के निदेशक सिद्धांतों का महत्व

राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत संविधान द्वारा केंद्र और राज्य सरकारों को दिए गए निर्देश हैं। कानून बनाने, नीतियाँ बनाने और लागू करने में इन सिद्धांतों को अपनाना ज़रूरी है। स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व की प्राप्ति और खुशहाल राज्य की स्थापना के लिए राज्य निदेशक सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं ।



दुर्बलों को सामाजिक न्याय

भारतीय गणराज्य द्वारा अपनाए जाने वाले निम्नलिखित सूत्र राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों में निहित हैं ।

भारतीय संविधान में जारी किए गये राज्य निर्देशक तत्व हैं-

1. **सामाजिक न्याय :** प्रजा को सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक न्याय उपलब्ध कराकर जनकल्याण करना।
2. **दुर्बलों को सामाजिक न्याय :** दुर्बलों को जीवन का आधार उपलब्ध कराना, उनके आर्थिक शोषण का निवारण और शैक्षिक सुविधा उपलब्ध कराना तथा उन्हें कानून की निःशुल्क सहायता उपलब्ध कराना।
3. **महिला तथा बाल कल्याण :** एक ही प्रकार के कार्य के लिए पुरुषों के समान महिलाओं को भी समान वेतन, महिलाओं के लिए प्रसूति सुविधा, बाल-शोषण पर रोक, बच्चों के स्वास्थ विकास के लिए अवसर तथा उनके लिए निःशुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा।



महिला तथा बाल कल्याण



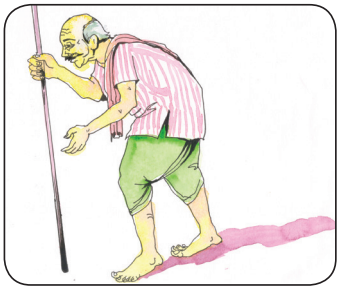
निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

4. **मजदूर कल्याण :** मजदूरों की मजदूरी का अधिकार, मजदूरी करने के लिए अनुकूल वातावरण; मजदूरों को निम्नतम वेतन, तथा उनको प्रशासन में भाग लेने का अवसर प्रदान करना।



मजदूर कल्याण



असहायों की मदद

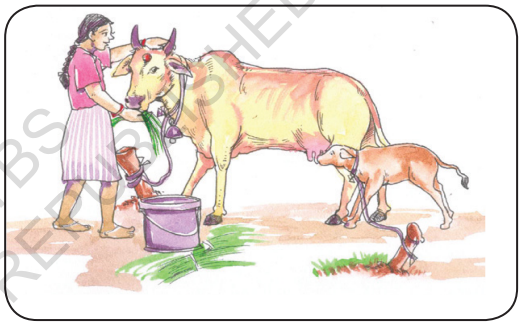
5. **असहायों की मदद :** वृद्ध, दिव्यांग, रोगी तथा बेरोजगारों को जीविकोपार्जन को लिए सरकार से मदद।।

6. **सभी के लिए समान कानून :** भारत के सभी नागरिको को समान नागरिक कानून जारी करना ।

7. **मद्यपान निषेध :** मद्यपान से स्वास्थ्य बिगड़ता है; परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है, तथा महिलाओं का शोषण बढ़ता है। इसलिए हमारे संविधान ने मद्यपान निषेध का कानून जारी करने के लिए राज्य सरकार को निर्देश दिया है।



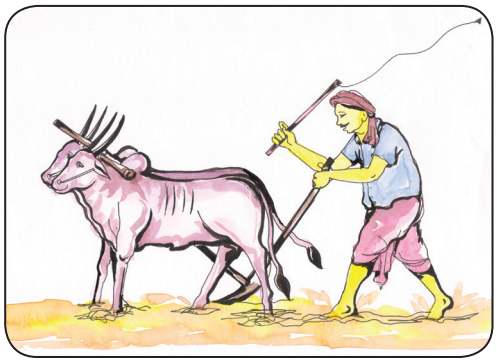
मद्यपान निषेध



जानवर - हमारा देश की संपति

8. **कृषि और पशुपालन संगठन:** राज्य, कृषि तथा पशु पालन के आधुनिक तथा वैज्ञानिक तरीके से संगठित करने का प्रयास करना तथा विशेषकर पशु नस्लों को संरक्षित कर उत्तम बनाने के लिए गाय, बछड़े, तथा अन्य दूध देनेवाले तथा बोझ उठानेवाले जानवरों के वध का निषेध करने के लिए कानून जारी करना आदि संविधान में निर्देशित है। इस दिशा में कर्नाटक सरकार ने 1964 में पशु हत्या निषेध कानून जारी किया है। (कर्नाटक सहित अनेक राज्यों में पशु हत्या निषेध कानून लागू है।) (The Karnataka Prevention of Slaughter and Preservation of Cattle Act, 2020)

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



कृषि विकास



आधुनिक कृषि

9. **पर्यावरण :** पर्यावरण संरक्षण तथा विकास उदा: खनन, उद्योगधन्धों से होने वाले प्रदूषण से पर्यावरण की रक्षा करना ।

10. **ऐतिहासिक स्मारकों की रक्षा :** ऐतिहासिक स्मारकों की रक्षा करना सरकार का प्रमुख कर्तव्य है। उदाहरण: बादामी, बीदर, श्रवणबेलगोला, सन्नति, मैसूरू, विजयपुर हंपी, हलेबीडू, बेलूरु पट्टदकल्लू आदि ।

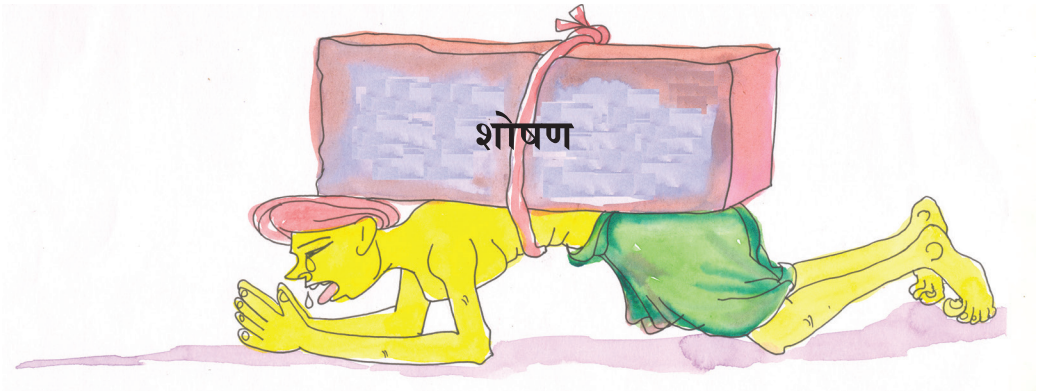


पर्यावरण संरक्षण

11. **अंतर्राष्ट्रीय शांति सुरक्षा** को बनाए रखने में देश भी शामिल होगा।

सामाजिक न्याय किसे कहते है? जाति, धर्म, लिंग, भाषा, वर्ण, प्रदेश और स्तर के भेद भाव रहित सभी नागरिकों के लिए सुरक्षा प्रदान करना तथा सभी को समान दृष्टि से देखना ही सामाजिक न्याय है। पिछड़े वर्ग के हित, वेतन भुगतान, गुलाम पद्धति का निर्मूलन, बालशोषण का निर्मूलन स्त्रियों को समानता का अधिकार तथा सम्मान आदि सामाजिक न्याय हैं।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



शोषण

संविधान ने राज्य को कई सलाह तथा निर्देश दिये हैं। फिर भी उनका उल्लंघन होने पर नागरिक, न्यायालय में शिकायत नहीं कर सकते हैं। उदा: सात दशकों के बाद भी केंद्र सरकार ने मध्यपान निषेध कानून लागू नहीं किया है। इस दिशा में न्यायालय में शिकायत नहीं कर सकते हैं।

गतिविधि : राज्य निर्देशक तत्व हमारे राज्य में किस हद तक लागू है। आज भिन्न-भिन्न रीति से शोषण हो ही रहा है। इस संदर्भ में एक चर्चागोष्ठी का आयोजन कीजिए और व्यक्त अभिप्राय की तालिका बनाइए ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास :-

समूह में चर्चा कर उत्तर दीजिए:

1. राज्य निर्देशक तत्व से आप क्या समझते हैं ?
2. महिला एवं बाल कल्याण स्थापना के लिए संविधान ने राज्यों को क्या निर्देश दिया है?
3. राज्य निर्देशक तत्व कृषि तथा पशुपालन के लिए महत्व देने का उद्देश्य क्या है ?
4. मद्यपान निषेध को लागू करने के लिए राज्य को निर्देश क्यों दिए गए हैं?

चर्चा करके उत्तर दीजिए :

5. दुर्बलों के लिए सामाजिक न्याय।
6. शराब का निषेध।
7. ऐतिहासिक स्मारकों की रक्षा।
8. बाल शिक्षा अधिकार को अधिक प्रभाव शाली बनाने के लिए क्या किया जा सकता है ?

गतिविधियाँ:

1. अपने आस पास के समुदायों में स्थित सामाजिक और आर्थिक रूप से दुर्बल लोगों को देखिए। वे क्यों दुर्बल है? इसके बारे में सहपाठियों के साथ विचार-विमर्श कीजिए ।
2. मद्यपान सेवन तथा मादक पदार्थों का उपयोग हमारे युवा वर्ग पर कौन सा दुष्परिणाम डालते हैं ? इस पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन कर अभिप्राय संग्रह कीजिए ।
3. बाल अधिकार, बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिए आवश्यक है। इसका उल्लंघन होने पर चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 नामक सहाय वाणी संख्या पर कॉल कर सकते हैं, यह आप जानते हैं। इस पर चर्चा गोष्ठी का आयोजन कर, विचार संग्रह कीजिए ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय 19 मानव अधिकार, मूलभूत अधिकार एवं कर्तव्य

K2X6P8

पाठ परिचय:

इस पाठ में मानव अधिकार का अर्थ तथा महत्व का परिचय दिया गया है । हमारे संविधान द्वारा भारतीय नागरिकों को दिए गए मूलभूत अधिकार तथा कर्तव्य के बारे में - इस पाठ में परिचय दिया गया है।

सामर्थ्य:

1. मानव अधिकार का अर्थ एवं महत्व जानना ।
2. स्वाभाविक अधिकार और मूलभूत अधिकार में अंतर जानेंगे।
3. बच्चों के अधिकार का महत्व जानेंगे ।
4. भारत की प्रजा को संविधान द्वारा दिए गए मूलभूत अधिकारों को समझेंगे
5. संविधान में जारी किए गए ग्यारह कर्तव्यों को समझकर अपने जीवन में उनका पालन करने की क्षमता रखने में समर्थ होंगे।
6. अपने अधिकारों का उपयोग करने में बाधा आने पर उन्हें पुनः प्राप्त करने का तरीका ढूँढ़ना।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अधिकार क्या है ?

'अधिकार' से तात्पर्य नागरिकों को मिलने वाला अधिकार है। यह 'स्वाभाविक अधिकार' हो सकता है। (उदा: जैसे-जीने का अधिकार, जीवन सुरक्षा का अधिकार) इसके अतिरिक्त न्यायसम्मत अधिकार हो सकते हैं। (उदा: समानता का अधिकार, शिक्षा का अधिकार।)

मानव अधिकार

प्रत्येक मनुष्य स्वाभाविक रूप से जन्म से कुछ अधिकारों से संपन्न होता है। नस्ल, जाति, भाषा, धर्म, लिंग या किसी अन्य गुण या विशेषता की परवाह किए बिना किसी को भी इन अधिकारों से बाहर नहीं किया जा सकता है। ये अधिकार मानव अस्तित्व के हिस्से हैं। ऐसे अधिकारों और अवसरों को मानवाधिकारों की सार्वभौमिकता प्राप्त है ।

मानवाधिकार की अवधारणा की उत्पत्ति :

संसार के सभी दार्शनिक तत्वों ने मनुष्य की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया है। मनुष्य प्रकृति की संतान है। उसने दुनिया के सभी जीव जंतुओं के साथ रहते हुए अपनी जीवन शैली बनाई है। यह देखा जा सकता है कि 'तन्नंते परर बगेदोडे कैलास बिन्नानवाक्कु सर्वज्ञ' कहावत के पीछे मानवाधिकार का प्रस्ताव देखा जा सकता है। लेकिन जैसे-जैसे मनुष्य विकसित हुआ और उसने नए आविष्कार किए, स्वार्थ बढ़ने लगा। इसी पृष्ठभूमि में प्रत्येक मनुष्य की स्वतंत्रता, समानता और गैर-भेदभाव के साथ जीने की इच्छा को पूरा करने के लिए मानवाधिकार की घोषणा की गई है। हेरोल्ड जे लास्की के अनुसार 'केवल न्यायपरक मानवीय सामाजिक स्थितियाँ ही मानवाधिकार हैं'' ।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा :

अतीत में मानव इतिहास में विभिन्न नस्लों और धर्मों के बीच संघर्षों ने बड़ी संख्या में मनुष्यों की जान ली हैं। 20 वीं सदा के दो विश्व युद्धों में लाखों लोग जलकर राख हो गये। इसके अलावा, बड़ी संख्या में लोगों की जान चली गई, जो इतिहास की एक विडंबना है। संयुक्त राष्ट्र, जिसकी स्थापना ऐसे संघर्षों, हिंसा और भेदभाव को खत्म करने के उद्देश्य से की गई थी। इसने लोगों को मानवीय आधार पर जीने के अवसर पैदा करने के लिए 10 दिसंबर, 1948 को मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

मानवाधिकार का महत्व :

1. व्यक्ति के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के पूरक हैं ।
2. गरिमापूर्ण जीवन की नींव हैं ।
3. एक मानवीय और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए प्रेरणा हैं ।
4. व्यक्ति और राज्य के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाते हैं ।
5. वे वैश्विक जीवन की जीवनधारा हैं ।

बाल-अधिकार

मानवाधिकारों में बच्चों के अधिकार भी शामिल हैं। प्रत्येक बच्चा स्वाभाविक रूप से कुछ सुख-सुविधाओं से संपन्न होता है। प्रत्येक बच्चे को अपना बचपन अपने माता-पिता के साथ बिताने, पालन-पोषण, सुरक्षा, भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त करने का अधिकार है। इसके अलावा बच्चों को जाति, लिंग, रंग, धर्म और विकलांगता के आधार पर भेदभाव किए बिना नागरिक अधिकार हैं। भारत का संविधान 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान करता है। बच्चों को शिक्षा और ज्ञान से वंचित रखना, मजदूरी में संलग्न होना बच्चों के अधिकारों का उल्लंघन है। बालश्रम मानवाधिकार का उल्लंघन है। चाहे वह काम मजदूरी का हो या गैर-मजदूरी वाला, बालश्रम माना जाता है। बालश्रम बच्चों के अधिकारों के विरुद्ध है। इसीलिए 1986 में ही बालश्रम निषेध अधिनियम बनाया गया। इस अधिनियम का उल्लंघन करने वालों को 3 महीने से 1 वर्ष तक की कैद या जुर्माना या दोनों भी हो सकते हैं ।

NOT TO BE REPUBLISHED © KSBSE





मानवाधिकारों का संरक्षण

इस प्रकार स्थानीय स्तर से लेकर वैश्विक मानवाधिकार आयोग तक इस उद्देश्य के लिए मानवाधिकार और बच्चों के अधिकार स्थापित होकर कार्य कर रहे हैं। बाल अधिकारों की सुरक्षा के लिए 1098 सहाय वाणी स्थापित किए गए हैं ।

इसके अतिरिक्त सभी जीवित प्राणियों को अच्छा जीवन और अच्छा स्वास्थ्य जीने के लिए एक अच्छे और टिकाऊ वातावरण की आवश्यकता होती है। आवास, भोजन, पानी और स्वच्छता की सुरक्षा के अलावा, व्यापक अच्छे पर्यावरण की सुरक्षा भी मानवाधिकारों की सुरक्षा है, जिसे संयुक्त राष्ट्र ने बाद में 2012 में घोषित किया और इसका कार्यान्वयन भी देशों की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी और दायित्व है ।

मूलभूत अधिकार

मूलभूत अधिकार, संविधान में निहित और संरक्षित हैं। ये नागरिकों को दिए गए संवैधानिक अधिकार है। इनका उल्लंघन कोई नहीं कर सकता ।

व्यक्ति के विकास तथा राष्ट्र की अभिवृद्धि के लिए कुछ स्वतंत्रता तथा मूलभूत अधिकार आवश्यक हैं। इसीलिए नागरिको को छः मूलभूत अधिकार दिए गए हैं।

भारतीय संविधान ने देश के सभी नागरिकों को प्रमुख रूप से छः मूलभूत अधिकार प्रदान किया है:-

1. समानता का अधिकार
2. स्वतंत्रता का अधिकार
3. शोषण के विरुद्ध का अधिकार
4. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार
5. सांस्कृतिक तथा शैक्षिक अधिकार
6. संविधान बद्ध समाधान (परिहार) का अधिकार

1. समानता का अधिकार : कानून के समक्ष सभी समान है; चाहे जो कोई भी हो कानून के आगे कोई बड़ा नहीं है; तथा सभी को सुरक्षा मिलनी चाहिए। यह तत्व समानता के अधिकार का अंग है।

© KSEEB NOT TO BE REPUBLISHED



कानून के समक्ष सभी समान है।

धर्म, कुल, जाति, लिंग, जन्मस्थान इनके आधार पर राज्य पक्षपात नहीं कर सकता। दुकान, होटल तथा मनोरंजन स्थलों में प्रवेश हेतु किसी भी प्रजा पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाना चाहिए। सार्वजनिक कुएँ, तालाब, सड़कों तथा विश्राम (विराम) स्थलों के उपयोग के लिए, भी प्रतिबंध नहीं होना चाहिए। सरकारी सेवाओं में भर्ती होने के लिए सभी नागरिकों को समान अवसर प्राप्त है। सार्वजनिक पूजास्थलों में तत्संबंधी मत-धर्मों के व्यक्तियों के प्रवेश, प्रार्थना पर रोक नहीं लगायी जा सकती। समानता के अधिकार के संदर्भ में लैंगिक, अल्पसंख्यक अधिकारों का सम्मान करने वाले कानून बनाए गए हैं। उदाहरण के लिए, भारत सरकार ने लिंग अल्पसंख्यक अधिकारों का संरक्षण अधिनियम पारित किया है। 2019 और कर्नाटक सरकार की लिंग अल्पसंख्यक नीति 2017 कार्यान्वित किया गया।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

2. स्वतंत्रता का अधिकार : संविधान द्वारा प्राप्त स्वतंत्रता के अधिकार निम्नलिखित है-

1. वाक् स्वतंत्रता और अभिप्राय व्यक्त करने का अधिकार।
2. शांतिपूर्वक सभा में सम्मिलित होने की स्वतंत्रता का अधिकार।

3. संघ संस्थाओं की स्थापना का अधिकार।
4. देश में चारों ओर प्रतिबंध रहित घूमने का अधिकार।
5. भारत के किसी भी भाग में निवास का अधिकार।
6. किसी भी प्रकार के उद्योग, व्यापार, वृत्ति, व्यवहार को करने की स्वतंत्रता।



वाक् स्वातंत्र्य

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

गतिविधि : वाक् स्वातंत्र्य को किस हद तक प्रधानता मिली है? इस विचार से संबंधित एक विचार गोष्ठी का आयोजन करें और अभिप्राय व्यक्त कीजिए।

स्वतंत्रता मूलभूत अधिकार होने पर भी इसे इच्छानुसार परिवर्तित करना संभव नहीं है। कुछ परिस्थितियों में राज्य भी व्यक्ति की स्वतंत्रता पर पाबंदी तथा सीमाएँ लग सकता है। यह संविधान में उल्लेखित है। उदा: वाक् स्वतंत्रता होने का अर्थ यह नहीं कि दूसरों के प्रति जो मन में आये वह बोलें।

3. शोषण के विरोध का अधिकार : गरीब महिलाएँ, बच्चे तथा दुर्बलों का शोषण नहीं होना चाहिए। यही इस अधिकार का उद्देश्य है। शोषण का निषेध करने के लिए केंद्र तथा राज्य सरकार की ओर से कई अधिनियम तथा कानून बनाए गए हैं। उदा: दहेज लेना दण्डनीय अपराध है। गुलामी मजदूर पद्धति का

निषेध किया गया है; खनन, बीड़ी तैयार करना, पटाखे तैयार करना जैसे घातक कार्यों के लिए बच्चों को काम पर लेना निषिद्ध है। सरकार ने बाल श्रम पर रोक लगा दी है। कानून है कि वे 14 वर्ष की आयु तक अनिवार्य रूप से शिक्षा प्राप्त करें। महिला और बच्चों की तस्करी भी निषिद्ध है।



बाल श्रम पर सरकार की रोक

4. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार : भारत का प्रत्येक नागरिक अपने लिए आवश्यक, धर्म को चुनने का अधिकार रखता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य, शांति, अनुशासन, स्वच्छता और अन्य नियमों को ध्यान में रखते हुए मत-धर्मों के आचरण का अधिकार सभी भारतीयों को प्राप्त है। बलात्कार, धोखा तथा बेईमानी द्वारा मत परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए यह संविधान में उल्लेखित है।

NOT TO BE REPUBLISHED © RTBS



धार्मिक स्वतंत्रता

5. सांस्कृतिक तथा शैक्षिक अधिकार : धार्मिक तथा भाषा अल्पसंख्यकों के हितों की सुरक्षा इस मूलभूत अधिकार का उद्देश्य है। प्रत्येक नागरिक अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति की रक्षा करने का अधिकार रखता है। अल्पसंख्यकों के लिए शिक्षा संस्थाओं की स्थापना कर, प्रशासन करने का अधिकार भी है। किंतु भाषा तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों की शिक्षा संस्थाएँ राज्य के नियमों का पालन करें।



सांस्कृतिक और शैक्षणिक अधिकार

6. संविधान बद्ध समाधान (परिहार) का अधिकार : मूलभूत अधिकारों का उल्लंघन होने पर नागरिक न्यायालय से शिकायत कर सकता है। इस अधिकार को 'संविधान बद्ध समाधान का अधिकार' कहते हैं।

मूलभूत अधिकार उल्लंघन होने पर किस व्यक्ति के साथ अन्याय हुआ है, वह सीधे उच्च न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय जाकर समाधान प्राप्त कर सकता है। मूलभूत अधिकार से संबंधित सर्वोच्च न्यायालय या उच्च त्यायालय को दिया जानेवाला आवेदन, 'रिट थाचिक' कहलाता है।

© BSTB NOT TO BE REPUBLISHED

मूलभूत कर्तव्य

मूलभूत अधिकार तथा कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। 'कर्तव्य' का अर्थ है व्यक्ति का अपने देश के लिए जिम्मेदार होना, नागरिक का अपने मूलभूत कर्तव्यों को स्वयं उत्साह पूर्वक निभाना है जिससे देश का अभ्युदय तथा विकास सरलता से हो सकेगा।

संविधान में 11 मूलभूत कर्तव्य जोड़े गए हैं।

ये निम्नलिखित हैं -

1. संविधान, राष्ट्रध्वज तथा राष्ट्रगीत का सम्मान करना।
2. स्वतंत्रता आन्दोलन के उन्नत आदर्शों का पालन करना।
3. भारत की एकता की रक्षा करना।
4. मातृभूमि की रक्षा करना।
5. हम भारतीय भाई-भाई हैं की भावना को बढ़ाना।
6. हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा तथा ऐतिहासिक स्मारकों की रक्षा करना ।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा कर उसकी अभिवृद्धि करना।
8. वैज्ञानिक मनोभाव तथा वैचारिकता को बढ़ाना ।
9. सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना।
10. व्यक्ति को निजी तथा सामूहिक उत्कृष्ठता हेतु सतत प्रयत्न करना।
11. सभी माता-पिता और अभिभावक 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा का अवसर प्रदान करें।

© OKTBS NOT TO BE REPUBLISHED



संविधान राष्ट्रध्वज तथा
राष्ट्रगीत का सम्मान करना



मातृभूमि की रक्षा



पर्यावरण संरक्षण



हम सब भारतीय है

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

गतिविधि : 'पर्यावरण' की रक्षा में आज विद्यार्थियों की भूमिका पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन कर अभिप्राय संग्रह कीजिए।

प्रजा अपने मूलभूत कर्तव्यों का निर्वाह न करें तो सरकार उससे न्यायालय में प्रश्न नहीं कर सकती। फिर भी देश की सारी प्रजा को स्वयं उत्साह से मूल भूत कर्तव्यों का निर्वाह करना है।

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्द से भरिए :

1. अधिकार का अर्थ है _____ ।
2. मौलिक अधिकार _____ हैं ।

3. बालश्रम निषेध अधिनियम ———————— में बनाया गया था।

4. हमारी भाषा ने हमें अपनी संस्कृति की रक्षा करने का ———————— अधिकार दिया है ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

5. मानवाधिकार क्या हैं ?
6. बाल-अधिकारों की सूची बनाएँ ।
7. मूलभूत अधिकारों से क्या तात्पर्य है?
8. मूलभूत कर्तव्यों का पालन स्वयं उत्साह से हमें क्यों पालन करना चाहिए ?
9. समानता के अधिकार से आप क्या समझते हैं?
10. सामाजिक तथा आर्थिक शोषण कैसे होता है? उदाहरण दीजिए।
11. किन्हीं तीन मूलभूत कर्तव्यों के बारे में लिखिए।

समुह में चर्चा करके उत्तर दीजिए :

12. मौलिक अधिकारों का महत्व।
13. विद्यालय में विद्यार्थियों का कर्तव्य।
14. मानवाधिकार का महत्व ।
15. बच्चों के अधिकारों का महत्व ।

गतिविधि :

1. मूलभूत अधिकारों तथा कर्तव्यों के बारे में विद्यार्थियों द्वारा दो-तीन मिनट का भाषण करवाना।
2. प्रजा द्वारा मूलभूत कर्तव्यों का पालन न करने पर होनेवाली समस्याओं के बारे में विद्यार्थियों से कहलवाना (उदा: गाँव के सार्वजनिक तालाब में त्याज्य वस्तुओं को फेंकना प्राचीन किले के पत्थरों को एक-एक कर चुरा ले जाना, मतदान न करना)

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय 20 राष्ट्रीय भावैक्य

G8Z5H9

पाठ परिचय :

इस भूमिका में राष्ट्रीय भावैक्य; वैविध्य तथा एकता के विभिन्न पहलुओं और एकता पर प्रश्न बननेवाले बुरे तत्वों का विवरण इस पाठ में दिया गया है।

सामर्थ्य:

1. राष्ट्रीय भावना को समझाना ।
2. राष्ट्रीय भावना के महत्व की सराहना करना ।
3. भारतीय विविधता को जानना और उस पर गर्व करना ।
4. बहुलता के साथ एकता की आवश्यकता को समझना ।
5. राष्ट्रीय भावैक्य और विकास में योगदान देने वाले कारक तत्वों की पहचान करना ।

@TES NOT TO BE REPUBLISHED

राष्ट्रीय भावैक्य का अर्थ : राष्ट्रीय भावैक्य का मतलब है, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के बारे में अथवा एक समुदाय दूसरे समुदाय के बारे में द्वेष, ईर्ष्या तथा पूर्वाग्रह पीड़ित न हो। इसके विपरीत सम्मान हो एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ परस्पर सौहार्द्रता पूर्ण रहे। सभी एक राष्ट्र के सदस्यों जैसी भावना रखें ।

दूसरों का सम्मान करना और एक दूसरे के प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना यह भावना रखना कि हम सभी राष्ट्र नामक एक परिवार के समान सदस्य हैं। यह भावना पैदा करना कि किसी देश के सभी लोग जाति, धर्म, पंथ, संप्रदाय, मत, लिंग समानता के भेदभाव के बिना एक हैं, यही राष्ट्रीय भावैक्य है।

एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण के लिए सभी में ऐसी भावना पैदा करना आवश्यक है। सारे भारतीय एक हैं, इस भावना को मज़बूत करना ही राष्ट्रीय भावैक्य है।

महत्व : किसी राष्ट्र के लोगों के बीच एकता पैदा करने के लिए भावैक्यता आवश्यक है। राष्ट्र के हित को प्राप्त करने के लिए, विकास करने के लिए यह भावना विकसित करने के लिए कि राष्ट्र के लोग एक हैं, भावैक्यता आवश्यक है। भावैक्यता देश की अखंडता, भाईचारा और समानता के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा है ।

भारतीय विविधता : भारत विविधताओं का देश है। भारत की विविधता, प्राकृतिक विविधता, जीव विविधता एवं जन जीवन विविधता में प्रकाशित है।

• **प्राकृतिक विविधता :** भारत में सर्वाधिक ऊँची पर्वत श्रेणियाँ, अति लंबी नदियाँ तथा विशाल मैदानी भाग है। इसी तरह अत्यंत शीत तथा उष्ण प्रदेश भी हैं। गर्म रेगिस्तान यहाँ हैं। घने जंगल, शीतल सरोवर, जलप्रपात, मनमोहक समुद्री तट, कई छोटे-बड़े द्वीप हैं। ये हमें प्रकृति द्वारा प्रदत्त देन हैं।

• **जीव विविधता :** भारत में जीव वैविध्यता अपार है। ऐसी जीव वैविध्यता वाले देश बहुत कम है।

अब तक 47,000 से अधिक वनस्पति वर्ग को जाना गया है। देश में लगभग 90,000 प्रकार के विविध प्राणी हैं। इनमें 1,232 प्रकार के पक्षी वर्ग तथा 2,546 मत्स्थ वर्ग भी शामिल है। वर्णमय जीव संकुल ही भारत की अमूल्य सम्पदा है।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

जन विविधता : विशाल भारत में विविध प्रकार के समुदाय के लोग रहते हैं। उनका रुप, शारीरिक सौष्ठव, भाषा, वेशभूषा, खाद्य, रीति नीति, आचार-विचार, मत-धर्म आदि अलग-अलग हैं। हमारे जन जीवन का सौंदर्य देखने के लिए भारत भ्रमण करना होगा।

अनेकता में एकता :

कई भाषाओं, संस्कृतियों और धर्मों में बहुत्ववाद विश्वास रखने वाले लोगों की जीवन शैली को बहुसंस्कृतिवाद या बहुत्ववाद कहा जाता है । भारत एक

विविधतापूर्ण देश है। भारत 21 अप्रैल, सा.श. 2023 में प्रकट United Nations Population Fund (संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष) रिपोर्ट के अनुसार 2023 के मध्य तक चीन को पछाड़कर दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा। हमारा देश भौगोलिक रूप से विविधता बाला देश है। प्रत्येक नागरिक अपनी पसंद का धर्म अपना सकता है। आप क्षेत्रीय भाषाएँ बोल सकते हैं और सामाजिक जीवन में घुल-मिल सकते हैं। अतः इतनी भिन्नताओं के साथ भारत में रहने वाले लोग एकता के कारण अनेकता में भी एकता देख सकते हैं। यहाँ विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और धर्मों को मानने वाले बहुसांस्कृतिक लोग रहते हैं । विभिन्न धर्मों वाले हमारे देश में हर नागरिक अपनी पसंद का धर्म अपना सकता है। चूँकि एक राष्ट्र में रहने वाले लोग इतने सारे मतभेदों से एकजुट होते हैं, इसलिए विविधता में भी एकता देखी जा सकती है। बहुलवाद को हमारे संविधान द्वारा मंजूरी दी गई है। बहुलता कभी भी एकता के लिए घातक नहीं हैं, बल्कि पूरक है।

भारत में एकता को प्रोत्साहित करने वाले कारक :

1. धर्मनिरपेक्षता : भारत सर्वधर्म सद्भाव वाला एक धर्मनिरपेक्ष देश है। यह राष्ट्र की एकता को प्रोत्साहित करता है क्योंकि यहाँ सभी धर्मों को समान अवसर प्राप्त हैं ।

2. प्रजातंत्र : भारत एक लोकतांत्रिक देश है। यहाँ संविधान ने इस सिद्धांत को स्वीकार किया है कि जाति, धर्म और पंथ के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए और सभी को मतदान करने का अधिकार होना चाहिए, चाहे वे पुरुष हों या महिला। यह कारक तत्व देश की एकता में पूरक है।

3. राष्ट्रीय त्योहार : चूंकि हम सभी भारतीय अपने राष्ट्रीय त्योहारों को एक साथ मनाते हैं, इससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में मदद मिलती है।

4. राष्ट्रीय प्रतीक : हमारे राष्ट्रीय प्रतीक जैसे राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय फूल, राष्ट्रीय पक्षी और राष्ट्रीय पशु भी हमें एकता के रूप में पहचानने में सहायक होते हैं ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

5. आपसी आत्मीयता : केंद्र और राज्य सरकारें साधारण उद्देश्यों के माध्यम से कार्य करती हैं। देश का हर हिस्सा दूसरे हिस्से पर निर्भर है। यह तथ्य इस बात का भी संकेत देता है कि हम सब एक ही राष्ट्र के वासी हैं ।

इसके अलावा प्राकृतिक कारक, तत्व, संचार, नेटवर्क, जनसंचार माध्यम, विभिन्न संस्कृति, क्षेत्रवाद, धर्म, भाषा आदि अन्य कारक भी हैं लेकिन संपूर्ण राष्ट्र के लोगों की एकता देखी जा सकती है ।

राष्ट्रीय भावना एवं एकता को प्रभावित करने वाले कारक तत्व :

1. जातिवाद : जातिवाद का अर्थ है अपनी जाति को अन्य जातियों के विरुद्ध खड़ा करना । अन्धविश्वासपूर्ण जातिवाद जहाँ अपनी ही जाति को श्रेष्ठ तथा अन्य को नीचा समझा जाता है। जातिवाद एकता के लिए घातक है। आज जातिवाद सभी क्षेत्रों में व्याप्त है। इससे संकीर्णता की भावना बढ़ रही है। अतः जातिवाद देश की एकता के लिए हानिकारक है।

2. मतवाद (साम्प्रदायिकता) : धार्मिक वर्चस्व के कारण संघर्ष में पड़ना या हिंसा में शामिल होना ही साम्प्रदायिकता है । यह शांति भंग करता है। इसके परिणामस्वरूप जीवन और संपत्ति का विनाश होता है। इतना ही नहीं यह लोगों के बीच मित्रता/ सौहार्द को भी खराब करता है। साम्प्रदायिकता ने विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच असंगति पैदा की है और देश की प्रगति में बाधा उत्पन्न की है। विकास की राह में एक कांटा है ।

3. क्षेत्रवाद : एक अन्य कारक तत्व जो राष्ट्रीय भावना के लिए घातक हो सकता है वह क्षेत्रवाद है। संकीर्ण क्षेत्रवाद, जो किसी व्यक्ति की अपने क्षेत्र के प्रति एकतरफा वफादारी की भावना है। संविधान के अनुसार हम विभिन्न राज्यों वाली एक संघ प्रणाली हैं इसलिए क्षेत्रीय भाषा, संस्कृति और प्रशासन का अस्तित्व भी महत्वपूर्ण है। अतः राष्ट्र की अखंडता को खतरा पहुंचाने वाली संकीर्ण क्षेत्रवाद स्वस्थ नहीं है। हमें यह समझना होगा कि 'हम पहले भारतीय और बाद में किसी राज्य या क्षेत्र के वासी हैं।' क्षेत्रीय असमानता को दूर करने के अवसर संविधान

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

में ही दिए गए हैं। इसी पृष्ठभूमि में हम देख सकते हैं कि कल्याण कर्नाटक को 371(जे) की मान्यता दी गई और तेलंगाना को एक अलग राज्य घोषित किया गया।

यदि जातिवाद, संप्रदायवाद और संकीर्ण क्षेत्रवाद जो राष्ट्रवाद में बाधा डालते हैं, उन पर काबू पा लिया जाए तो राष्ट्रवाद को बढ़ाया जा सकता है ।

अभ्यास :-

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. राष्ट्रीय भावैक्य क्या है ?
2. बहुलवाद या बहुसंस्कृतिवाद क्या है ?
3. भारत की एकता में योगदान देने वाले कारकों की सूची बनाएं ।
4. चर्चा करें कि जातिवाद एकता के लिए किस प्रकार हानिकारक है ।

II. समूह में चर्चा करें और उत्तर दें ।

5. राष्ट्रीय भावैक्यता प्राप्त करने के लिए कौन से विशिष्ट कदम उठाए जा सकते हैं ?

गतिविधि :

आज भारत में भावैक्यता की दृष्टि से हमें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, इसके क्या कारण है? इसका सुधार कैसे करेंगे? दल 'देश में भावैक्यता कैसे पैदा किया जा सकता है' विषय पर एक चर्चा गोष्ठी का आयोजन करें। जो सुझाव आएं उन्हें सूचीबद्ध करें ।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय 21 राष्ट्रीय चिह्न तथा राष्ट्रीय समारोह

W4R7D4

पाठ परिचय

यह पाठ राष्ट्रीय प्रतीकों, हमारे राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय ध्वज की विशेषताएँ, राष्ट्रीय ध्वज संहिता, हमारे राष्ट्रीय गान, हमारे राष्ट्रीय प्रतीक, पशु, पक्षी और पुष्प और राष्ट्रीय त्योहारों के बारे में परिचय देता है ।

सामर्थ्य

1. राष्ट्रध्वज की विशेषता को समझना।
2. राष्ट्रीय चिह्न का विवरण तथा महत्व समझना तथा सम्मान करना।
3. राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान की पृष्ठभूमि तथा महत्व को समझना।
4. राष्ट्रीय पर्व/त्योहार तथा जयंतियों का महत्व जानना।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

राष्ट्रीय चिह्न :

सामान्य रूप से एक देश अपनी संस्कृति तथा परंपरा की विशेषताओं को प्रतिबिंबित करने वाले चिह्नों का प्रयोग करता है। इन्हें राष्ट्रीय चिह्न या प्रतीक कहते हैं।

प्रमुख रुप से राष्ट्रध्वज तथा राष्ट्रीय प्रतीक एक देश के राष्ट्रीय चिह्न हैं। प्रत्येक देश का अपना ही राष्ट्रगीत होता है। इसी प्रकार कई देशों का राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पुष्प भी है। प्रजा में देश के प्रति गौरव तथा भावैक्यता की जड़ें गहराई तक जाने में ये भी सहायक हैं।

हमारा राष्ट्रध्वज

ध्वज राष्ट्र का एक चिह्न है। राष्ट्रध्वज स्वतंत्रता, देशप्रेम, एकता तथा निष्ठा का प्रतीक है। राष्ट्रध्वज स्तम्भ पर ऊँचाई पर फहराए जाने पर प्रत्येक प्रजा का हृदय भर आता है।

स्वतंत्र भारत के तिरंगे ध्वज का वर्णन : हमारा राष्ट्रध्वज तीन रंगों से युक्त है। सबसे ऊपर केसरिया, मध्य में सफ़ेद तथा नीचे हरा रंग है। सफेद रंग के बीच में नीले रंग का चक्र है। चक्र में 24 तीलियाँ हैं। चक्र का व्यास सफ़ेद पट्टी की चौड़ाई के समान है।

ध्वज आयताकार है। इसकी लंबाई चौडाई का अनुपात 3:2 होता है। तीन रंगों की पट्टियाँ समान मात्रा में होती है। ध्वज का कपड़ा सूती और रेशम का होना चाहिए। साथ ही यह हाथ की बुनाई का होना चाहिए। इसके धागे हाथ से बने होने चाहिए।

राष्ट्रध्वज की विशेषता

हमारे राष्ट्रध्वज के रंग क्या सूचित करते हैं? केसरिया रंग नि:स्वार्थता तथा त्याग का सूचक है तो सफेद (श्वेत) रंग सत्य, शांति, पवित्रता का प्रतीक है। हरा रंग सस्य श्यामलता युक्त भूमि का संकेत है, कृषि, उद्योगों की समृद्धि का सूचक है। चक्र, सारनाथ के अशोक स्तम्भ के चक्र का प्रतिरूप है। अशोक चक्र धर्मचक्र है। इसके अलावा यह निरंतरता तथा प्रगति का सूचक है।



राष्ट्रध्वज

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

राष्ट्रध्वज संहिता :

- ध्वज गंदा नहीं होना चाहिए, फटा हुआ न हो।
- फहराते समय सदा केसरिया रंग ऊपर की ओर हो।
- राष्ट्रध्वज से ऊँचा अन्य कोई ध्वज नहीं फहराना चाहिए ।
- स्तंभ के अंतिम छोर तक झंडे (ध्वज) को ऊपर फहराना चाहिए।
- सदा सूर्योदय के बाद ही राष्ट्रध्वज फहराना चाहिए। सूर्यास्त से पूर्व इसे उतार लेना चाहिए।
- राष्ट्रीय शोकाचरण के समय राष्ट्रध्वज आधी ऊँचाई पर फहराना चाहिए।

- ध्वज को दायें हाथ से पकड़कर फहराना चाहिए ।
- ध्वज जमीन को नहीं छूना चाहिए ।
- प्लास्टिक ध्वज का उपयोग नहीं करना चाहिए ।

हमारा राष्ट्रगीत (Our National Anthem)

जनगणमन भारत का राष्ट्रगीत है। इसे रवींद्रनाथ ठागूर ने सन् 1911 में बंगाली भाषा में लिखा था। इस लम्बे गीत के 5 वृत्तों में से प्रथम वृत्य मात्र राष्ट्रगीत के रुप में संविधान की सभा में 24 जनवरी 1950 में अंगीकृत हुआ। गीत को गाने में 52 सेकेण्ड लगते हैं। कुछ संदर्भों में संक्षिप्त रूप में प्रारंभ तथा अंतिम पंक्तियाँ मात्र गायी जाती हैं। इसमें लगभग 20 सेकेण्ड लगते हैं।

राष्ट्रगीत को सम्मान देना प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है। इसे गाने में रुकावट डालना प्रशासन के विरुद्ध होगा और दण्डनीय अपराध है।

- राष्ट्रगीत गाते समय अनुशासन पूर्वक सीधे सावधान मुद्रा में खड़े होना चाहिए।
- इसको गाते समय उच्चारण में दोष नहीं होना चाहिए।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

राष्ट्रगान : (Our National Song)

संविधान में राष्ट्रगीत के समान स्थानमान प्राप्त 'वंदेमातरम्' राष्ट्रगान कहलाता है। 'वंदेमातरम' गीत के रचनकार प्रख्यात साहित्यकार बंकिम चंद्र चटर्जी है। उनके 'आनंदमठ' उपन्यास का यह गीत स्वतंत्रता पूर्व में राष्ट्रगीत का स्थान पाया था। देशभक्ति के लिए, देश की रक्षा के लिए लोगों ने अपनी जान जोखिम में डालकर आखिरी सांस तक 'वंदे मातरम' गाया ।

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक :

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक पर गौर कीजिए। यह सारनाथ के अशोक स्तम्भ के शीर्ष भाग से लिया गया है। शीर्ष भाग पर सिंह अंकित है। अतः यह सिंह स्तम्भ कहलाता है। सारनाथ का सिंह शीर्ष राष्ट्र का प्रतीक है।

मूल शिल्प कृति के चार सिंह चारों दिशाओं को मुख करके एक दुसरे के साथ पीठ से जोड़े एक वेदी पर खड़े हैं। वेदी गोलाकार हैं। इसकी चारों दिशाओं में एक-एक चक्र है। इन चक्रों के मध्य हाथी, बैल, घोडा तथा सिंह का चित्रण है। पीठ पर स्थित चक्र 'धर्म चक्र' कहलाता है। हमारे राष्ट्रध्वज की श्वेत पट्टी पर इसी चक्र को लिया गया है।



सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय चिह्न

भारत सरकार ने हमारे राष्ट्रीय चिह्न को 26 जनवरी 1950 को अंगीकृत किया। चित्र में केवल तीन सिंहमात्र दिखाई देते हैं। शीर्ष के नीचे देवनागरी लिपि में 'सत्यमेव जयते' (सत्य की ही विजय हो) मंडकोपनिषत् का वाक्य लिखा है।

राष्ट्रीय प्राणी, राष्ट्रीय पक्षी और राष्ट्रीय फूल

बाघ हमारा राष्ट्रीय प्राणी है। मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। 'कमल' हमारा राष्ट्रीय पुष्प है।

@RTBS NOT TO BE REPUBLISHED



राष्ट्रीय प्राणी - बाघ



राष्ट्रीय पक्षी - मोर



राष्ट्रीय फूल - कमल

राष्ट्रीय पंचाग : पूरे भारत में कई प्रकार के पंचांग इस्तेमाल में हैं। दैनिक उपयोग के लिए पूरे राष्ट्र को एक जैसा पंचांग अपनाने के उदेश्य से भारत सरकार ने 22 मार्च 1957 में 'राष्ट्रीय पंचांग' आचरण में लाया। इसी पंचांग को तैयार करने में प्रख्यात विज्ञानी स्वर्गीय मेघना साहा ने प्रमुख भूमिका निभाई। पंचांग में शक वर्ष निहित है। शक वर्ष इसाई वर्ष के 78 साल बाद प्रारंभ होता है। राष्ट्रीय पंचांग में वर्ष का पहला महीना चैत्र मास है। वर्षारंभ सामान्यतः 22 मार्च को शुरू होता है। अधिक वर्ष में वह मार्च 21 को प्रारंभ होता है। भारत सरकार राष्ट्रीय पंचांग के दिनांक तथा सामान्य शक वर्ष के दिनांक दोनों को अपने पत्र व्यवहार और दस्तावेजों में उपयोग करता है।

राष्ट्रीय त्योहार

देश के सभी ओर सार्वत्रिक रूप में मनाए जाने वाले त्योहार ही राष्ट्रीय त्योहार है।

● **गणतंत्र दिवस :** 1950 जनवरी 26 को गणतंत्र का संविधान लागू हुआ। इसी की याद में हर साल जनवरी 26 को पूरे भारत में गणतंत्र दिवस मनाते हैं। विविध क्षेत्रों में अपना योगदान देनेवालों को उस दिन पारितोषक दिया जाता है। मुख्य अतिथि के सम्मुख राष्ट्रपति द्वारा ध्वजारोहण करने के बाद जुलूम प्रारंभ होता है। राष्ट्र की राजधानी नई दिल्ली का जुलूस अत्यंत भव्य है। सभी राज्य की राजधानियों में प्रमुख कार्यक्रम होते हैं ।

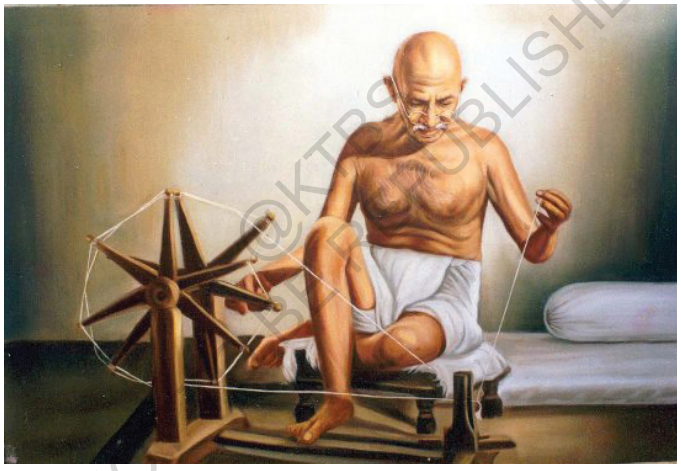


गणतंत्र दिवस का परेड

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

● **स्वतंत्रता दिवसः** हर साल अगस्त 15 को हमारे देश में स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। दिल्ली के लाल किले में एक विशेष समारोह का आयोजन होता है। स्वतंत्रता की घोषणा के अवसर पर तिरंगा झंडा यहीं पर फहराया गया था। हर साल पंद्रह अगस्त की सुबह देश के प्रधानमंत्री लाल किले के ऊपर तिरंगा झंडा फहराते हैं । वहाँ आए हुए लोग और देश को संबोधित करते हुए भाषण देते हैं। स्वतंत्रता दिवस एक राष्ट्रव्यापी उत्सव है। हर जगह ध्वजारोहण और ध्वजवंदना कार्यक्रम चलते हैं।

● **गांधी जयंती :** मोहनदास करमचंद गांधीजी, दुनिया में महात्मा के नाम से वंदनीय है। उनके नेतृत्व में भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक नई शक्ति पाया ।



महात्मा गांधीजी

इनकी याद में गांधीजी का जन्म दिन अक्टूबर 2 पूरे देश में गांधी जयंती के रूप में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने गाँधीजी के जन्मदिन को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किया है । उसी दिन इनके साथ पैदा हुए लाल बहादुर शास्त्रीजी का जन्म दिवस भी मनाया जाता है।

जयंतियाँ :


डॉ. बी.आर. अंबेडकर

● **अंबेडकर जयंती :** स्वतंत्र भारत के संविधान को अत्यंत उचित रूप में तैयार करने वाले प्रारूप समिति के अध्यक्ष भीमराव रामजी अम्बेडकर का जन्म दिन हर साल 14 अप्रैल को अम्बेडकर जयंती के रूप में मनाया जाता है । डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अर्थहीन है। उन्होंने जातिगत भेदभाव का अध्ययन किया और इसके विनाश के लिए संघर्ष किया और 'महद' और 'कलाराम' आंदोलन का गठन किया। उन्होंने तीन गोलमेज़ परिषद की बैठकों में भाग लिया और बहुमूल्य सलाह दी ।


डॉ. एस. राधाकृष्णन

● **शिक्षक दिवस :** भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ.एस. राधाकृष्णन जी की विद्वत्ता गहरी है। श्रेष्ठ दार्शनिक राधाकृष्णन जी का जन्म दिन सितंबर 5 को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाते हैं। ये कर्नाटक के मैसूरु विश्वविद्यालय में कार्यरत थे।

© DTERT NOT TO BE REPUBLISHED

● **बालदिवस :** भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी के जन्मदिन नवंबर 14 को बाल दिवस के नाम से मनाते हैं। नेहरू प्रकृति प्रेमी थे। लाल गुलाब उनका प्रिय फूल था, पंडित जवहर लाल नेहरू ने होम रूल आंदोलन के साथ स्वतंत्रता संग्राम में प्रवेश किया। सा.श. 1929 में वे लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष थे। हम भारत के पहले प्रधान मंत्री नेहरू को औद्योगीकरण और नए भारत के शिलपि के रूप में देखते हैं। आज़ादी के बाद वे पंचवर्षीय योजनाओं और गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति के समर्थक और पंचशील सिद्धांतों के समर्थक रहे हैं ।


जवाहरलाल नेहरू

● **स्वामी विवेकानंदः** राष्ट्रीय युवा दिवसः



स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद जी (1863-1902) युवा पीढ़ी को अद्भुत चेतना देकर समूचे राष्ट्र को नई दिशा की ओर अग्रसर किया। मतधर्म के नाम पर हो रहे अंधविश्वास को मिटाकर क्रांतिकारी विचारों का प्रचार किया तथा रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। श्री स्वामी विवेकानंदजी ने सन्यास जीवन को समाज सेवा का नया आयाम प्रदान किया । स्वामी जी ने घोषणा की है - ''गरीब, अज्ञानी, अनपढ़, रोगी, इन्हें अपना भगवान समझे। इनकी सेवा करना ही श्रेष्ठ धर्म समझे'' ।

केंद्र सरकार ने उनके जन्म दिवस को राष्ट्रीय युव दिवस (जनवरी 12) के रूप में घोषित किया है। कर्नाटक सरकार ने इस अवसर पर युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए नयी नीति को प्रकट की है।

● **कर्नाटक राज्योत्सव - नवंबर 1 :** बंबई, मद्रास और हैदराबाद प्रांत के कन्नड़ प्रदेश और कोडगू प्रांत को मैसूरू प्रांत के साथ जोड़कर 1956 नवंबर 1 को कन्नड़ राज्य का गठन किया गया। इसे मैसूर राज्य कहा गया। इसी की याद में हर साल नवंबर 1 को कर्नाटक राज्योत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है ।

1973 नवंबर 1 को तत्कालीन मुख्यमंत्री देवराज अरसू जी ने मैसूर राज्य का कर्नाटक राज्य के नाम से पुनर्नामकरण किया।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्द से भरिए :

1. हमारे राष्ट्रीय ध्वज का सफेद रंग _____ का प्रतीक है ।
2. राष्ट्रगान (राष्ट्रस्तव) के रचयिता हैं _____ ।

2. मैसूर राज्य का नाम ———————— में बदलकर कर्नाटक कर दिया गया ।

4. लाल किले पर ———————— झंडा फहराते हैं ।

II. समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए :

5. राष्ट्रीय प्रतीक कौन-से हैं ?

6. राष्ट्रीय ध्वज संहिता के तत्व क्या हैं ?

7. राष्ट्रीय त्यौहार कौन-से हैं ?

8. स्कूलों में मनाए जाने वाले कुछ त्योहारों के नाम बताइए ।

गतिविधियाँ :

1. विविध देशों के राष्ट्र ध्वजों को संग्रहीत कीजिए ।
2. अन्य राष्ट्रों के राष्ट्रगान को सुनिए ।
3. राष्ट्रगान (राष्ट्रस्तव) के पूर्ण पाठ को कंठस्थ करके गाइए ।
4. अपने गाँव में मनाए जानेवाले स्थानीय त्योहारों को जानिए ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

भूगोल विज्ञान

अध्याय 22 एशिया

T2Q9N1

पाठ परिचय :

इस पाठ में एशिया महाद्वीप के भौगोलिक स्थान, विस्तार और भौगोलिक स्थिति, प्रादेशिक विभाग, प्राकृतिक लक्षण, प्रमुख नदियाँ, कृषि उद्योग, जलवायु और वनस्पति, प्रमुख खनिज पदार्थ, जनसंख्या में बढोत्तरी, वितरण और घनत्व के बारे में जानकारी दी गई है।

सामर्थ्य :

1. एशिया महाद्वीप के स्थान, विस्तार, भौगोलिक स्थिति और विविधता वाले लक्षणों के बारे में जानना।
2. प्रादेशिक विभागों का विभाजन और उनके तुलनात्मक अध्ययन की जानकारी लेना।
3. एशिया के प्रमुख प्राकृतिक विभागों का विवरण लेना।
4. नदियों की व्यवस्था और कृषि के बीच संबंध की जानकारी प्राप्त करना ।
5. जलवायु और प्राकृतिक वनस्पति के बीच संबंध की जानकारी प्राप्त करना ।
6. प्रमुख खनिज पदार्थ और उनका बँटवारा, जनसंख्या में बढोत्तरी, वितरण और जनसंख्या के घनत्व के बारे में जानना ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

1. स्थान, विस्तार और भौगोलिक स्थिति

परिचय : विश्व में एशिया सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसलिए इसके प्राकृतिक लक्षण, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीव और मिट्टी के प्रकार जैसे विषयों में अनेक विविधताएँ हैं । इस महाद्वीप में अत्यंत ऊँचे पर्वत, पठार, मैदानी क्षेत्र, विशाल उपजाऊ मैदान, रेगिस्तान, नदियों की व्यवस्था और झील स्थित हैं। इसके साथ-साथ हम यहाँ के लोगों की भाषा, धर्म, जनसंख्या के वितरण और घनत्व के बारे में विविधता से भरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए एशिया 'विविधता वाला महाद्वीप' कहा जाता है।

गतिविधि : एशिया महाद्वीप को विविधता वाला महाद्वीप क्यों कहा जाता है? इसके कारणों के बारे में मानचित्र देखकर चर्चा कीजिए ।

स्थान : एशिया महाद्वीप उत्तरी गोलार्ध में 1^0-16' 77^0-41' उत्तर अक्षांश तथा 26^0-04' पूर्व से लेकर 169^0-40' पश्चिम देशांतर रेखा के बीच में फैला है। मलेशिया के दक्षिणी भाग से भूमध्यरेखा गुजरती है। कर्काटक संक्राति वृत्त भारत और अरब द्वार गुजरती है।

विस्तार : एशिया महाद्वीप का कुल भौगोलिक विस्तार लगभग 44 मिलियन वर्ग किलेमीटर है। यह विश्व के कुल विस्तार का 33% भाग घेरता है। यह महाद्वीप संपूर्ण उत्तरी गोलार्ध में स्थित है।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

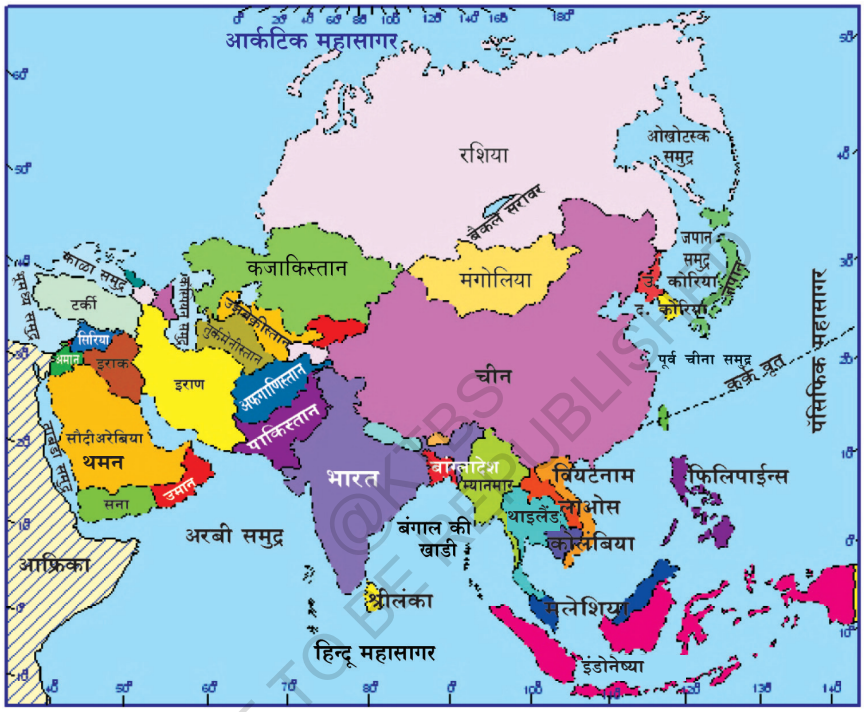


विश्व में एशिया का स्थान

भौगोलिक स्थिति : एशिया महाद्वीप तीन तरफ सागरों से घिरा हुआ है और इसका एक भाग, भूप्रदेश से जुड़ा है। इसकी उत्तर दिशा में आर्कटिक सागर है, पूर्व भाग में प्रशांत महासागर है। इस महाद्वीप का दक्षिणी भाग हिंदु-महासागर से घिरा हुआ है। इस महाद्वीप का पश्चिमी भाग यूरोप से जुड़ा हुआ है।

एशिया और यूरोप महाद्वीप की सीमा सांप्रदायिक काल्पनिक रेखा है। वह टेढ़ी-मेढ़ी है और युराल पर्वत, कैस्पियन सागर, ककासस पर्वत और काले सागर से होते हुए जाती है।

यूरोप और एशिया को कुल मिलाकर 'यूरेशिया' कहा जाता है।



एशिया का स्थान और भौगोलिक स्थिति

एशिया और अफ्रिका की सीमा रेखा, स्वेज नहर से होकर एशिया तथा आस्ट्रेलिया की सीमा रेखा न्यूगिनि तथा आस्ट्रेलिया के बीच होकर जाता है ।

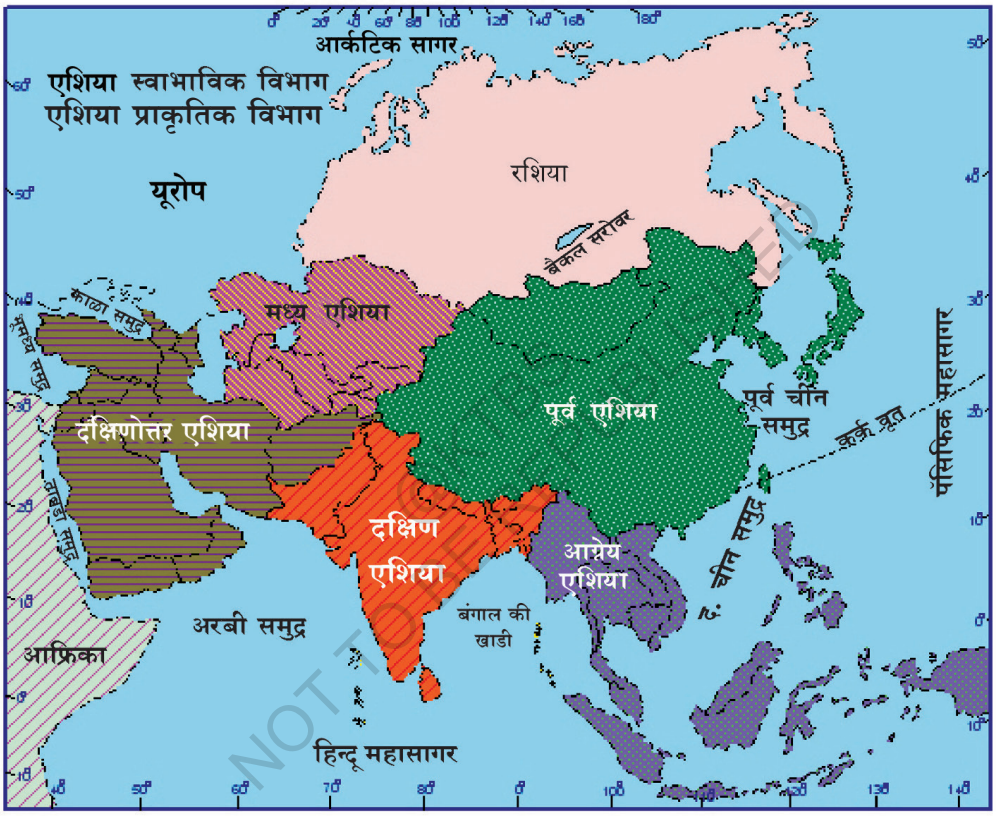
2 एशिया के प्रादेशिक विभाग:

आज एशिया में 48 देश हैं। उन्हें निम्नलिखित 5 प्रादेशिक समूहों में बाँटा गया है ।

1. पूर्वी एशिया : इस भाग में चीन, उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया, जापान, हांगकांग, तैवान और मंगोलिया जैसे देश शामिल हैं। यह उत्तर दिशा में विशाल रूस, दक्षिणी भाग में दक्षिण एशिया और दक्षिणपूर्वी एशिया के बीच फैला है ।

NOT TO BE REPUBLISHED @KSBSE

2. दक्षिणपूर्वी एशिया : इस भाग में मियानमार, लावोस, वियतनाम, थाईलैण्ड, कांबोडिया, मलेष्या, इंडोनष्या, सिंगापुर, ब्रुनेई और फिलीपीन्स देश स्थित हैं। यह भाग एक पर्यायद्वीप है अर्थात द्वीप समूह का प्रदेश हैं। उनके नाम इस प्रकार से हैं - सुमात्रा, जावा, सुलावेशी, बोर्नियो, पापुवा इत्यादि द्वीप हैं। इसके पश्चिमी भाग में हिंद महासागर है पूर्वी दिशा में प्रशांत (पेसिफिक) महासागर है।



एशिया के प्रादेशिक विभाग

3. दक्षिण एशिया : इस भाग में भारत, बंग्लादेश, भूटान, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और मालदीव-आदि देश स्थित हैं। इन देशों में सबसे बड़ा देश भारत है। इसकी दक्षिण में हिन्द महासागर है। भारत के पश्चिमी तट पर अरब सागर है, पूर्वी तट में बंगाल की खाड़ी है। इस भाग के उत्तर में हिमालय पर्वत की श्रेणियाँ हैं। पूर्वी दिशा में मिथानमार देश है और पश्चिम में अफगानिस्तान है।

4. दक्षिण-पश्चिम एशिया : इस भाग में अफगानिस्तान, बहरोन, सैप्रस, इरान, इराक, इज़राइल, जोडन, कुवैत, लेबनान, ओमन, कतार, सिरिया, पेलेस्तीन, सऊदी अरब, अरब एमीरेट्स, यमन और तुर्की आदि देश स्थित हैं। इस विभाग का कुछ भाग काला सागर के दक्षिण में स्थित हैं। पश्चिम दिशा में भूमध्यसागर और पूर्व में भारत मौजूद है। यहाँ का अधिकांश प्रदेश रेगिस्तान और अर्द्ध-रेगिस्तान है फिर भी यह प्रदेश पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के भण्डारों से समृद्ध है।

5. मध्य एशिया : यह भाग कैस्पियन सागर से चीन देश तक और कजाकिस्तान से ईरान अफगानिस्तान तक फैला है। इसी भाग के प्रमुख देश कजाकिस्तान, तज़ाकिस्तान, किर्गिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उजबेकिस्तान तथा साईबेरिया रुस आदि हैं ।

3. प्राकृतिक लक्षण :

एशिया के प्राकृतिक लक्षणों में सबसे प्रमुख भू-स्वरूप यहाँ की ऊंची पर्वत श्रेणियाँ हैं। साथ में यहाँ की विविध पठार, जलोढ़ मिट्टी वाले मैदान और द्वीप समूह आते हैं।

प्रमुख प्राकृतिक विभाग : भूरचना और ऊपरी लक्षणों के आधार पर एशिया महाद्वीप को पाँच प्रमुख प्राकृतिक विभागों में बाँटा जा सकता है। वे इस प्रकार से हैं-

1. पश्चिमोत्तर निचला मैदान।
2. केन्द्र के ऊंचे प्रदेश।
3. दक्षिणी पठार।
4. नदियों के महामैदान ।
5. द्वीप समूह।

1. पश्चिमोत्तर निचला मैदान : यह विभाग एशिया के प्राकृतिक लक्षणों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। बेरिंग जलसंधि से कैस्पिथन समुद्र तक फैला है। यह भाग, केन्द्र के ऊँचे प्रदेश और आर्कटिक सागर के बीच वाले स्थान में स्थित है। यह भाग त्रिकोण आकार वाला और विशाल क्षेत्र वाला निचला मैदान है, जिसे 'साइबेरिया के मैदान' नाम से भी जाना जाता है। उत्तर दिशा में साधारण

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

ढलान है। इस भाग में अनेक नदियाँ बहती हैं। उदाहरण के लिए लीना, ओब और येन्सि। ये नदियाँ उत्तर दिशा की ओर बहती हुई आर्कटिक सागर में जा मिलती हैं।

2. केन्द्र के ऊँचे प्रदेश: यह विभाग एशिया का दूसरा बड़ा प्रमुख प्राकृतिक विभाग है। यह भाग उत्तर-पश्चिम के निचले मैदान के दक्षिण में है। मध्य एशिया में पाये जाने वाली पर्वतश्रेणियों को ही 'केन्द्र के ऊँचे प्रदेश' कहा जाता है। यह भाग एशिया मैनर से लेकर बेरिंग जलसंधि तक फैला है। यहाँ की अनेक पर्वत श्रेणियाँ पामीर पठार से हर जगह फैली है। पूर्व दिशा की पर्वत श्रेणियों में हिमालय, कुनलुन, काराकोरम् टियेनशान, आल्टाय, सयान, यब्लोनी, किंगान और स्टानवाय पर्वत प्रमुख हैं। पश्चिम की श्रेणियों में हिन्दुकुश, किर्तार, सुलैमान, एल्बर्ज, जाग्रोस, ककासस, पोंटिन और तारस नाम के पर्वत हैं।

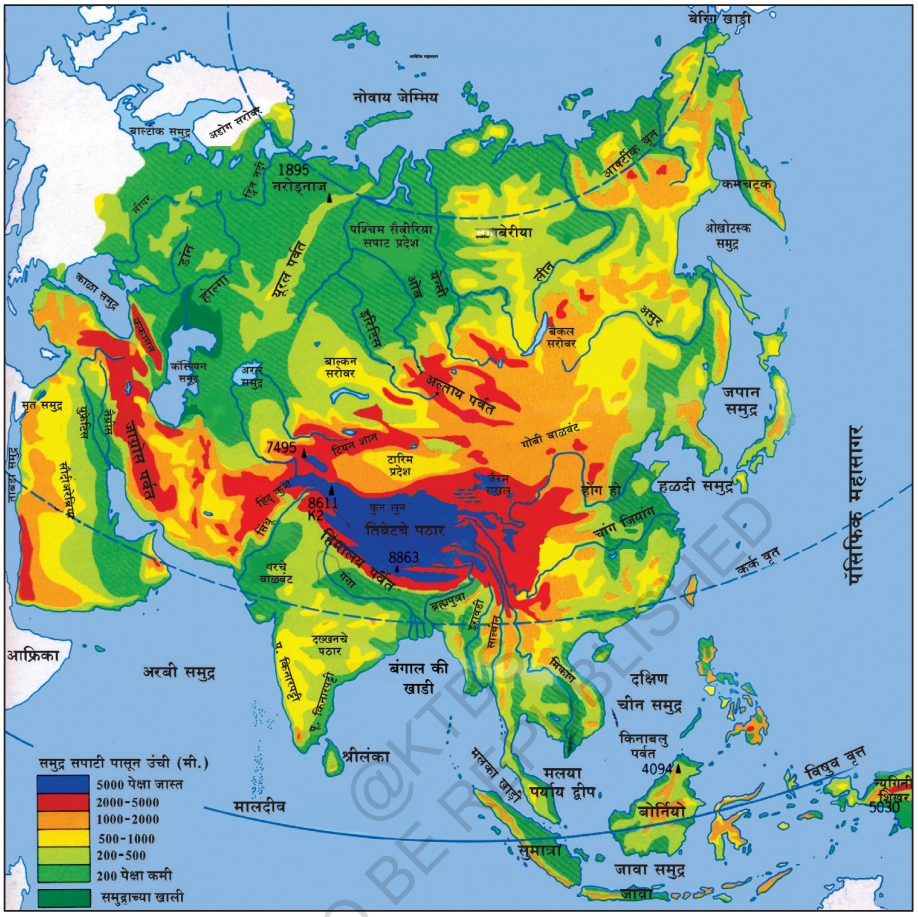


माउन्ट एवरेस्ट

परत दार पर्वत जैसे हिमालय की श्रेणियाँ पामीर पगर श्रेणी से दक्षिण-पूर्व तक फैली हैं। ये पर्वत विश्व में सबसे ऊँचे हैं। यहाँ का माउण्ट एवरेस्ट विश्व में सबसे ऊँचा पर्वत शिखर है।

पर्वत श्रेणियों के बीच में अनेक पठार हैं। उदाहरण के लिए, तिब्बत, मंगोलिया, इरान, अनातोलिया पठार इत्यादि है। एशिया महाद्वीप की अनेक नदियाँ इसी क्षेत्र से उद्गम होती हैं।

NOT TO BE @KTBS PUBLISHED



प्राकृतिक विभाग

3. दक्षिण के पठार : यह भाग कठोर और स्फटिक शिलाओं से बनी हुई पुराना पठार है। इस क्षेत्र का प्रमुख पठार है अरेबियास दक्खन (भारत), युन्नान (चीन) और शान मियानमार। अरब का पठार एक प्रायद्वीप है। यह एक शुष्क प्रदेश है।

दक्खन पठार ने भारत के प्रायद्वीप के अधिकांश भाग को घेरा है। मध्यभारत में स्थित पर्वत श्रृंखलाएँ, पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट के बीच मौजूद हैं। यह भाग पूर्व दिशा की ओर ढलाऊँ है। इसी भाग में अनेक नदियाँ बहती हैं।

चीन देश के दक्षिण-पश्चिम में युन्नान पठार है। यह एक ऊँची चूनेवाला पत्थर का प्रदेश है। इसके आगे का भाग ही शान पठार है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

4. नदियों के महामैदान : हिन्द महासागर या प्रशांत महासागर सागर में मिलने वाली नदियों के आसपास का मैदान इस क्षेत्र में आता है। यहाँ बहने वाली नदियाँ अपने साथ जलोढ़ मिट्टी लाने के कारण उपजाऊ मैदान की रचना करती है। इस विभाग के प्रमुख मैदान है- सीरिया और इराक की टैग्रिस-युफ्रेटिस, भारत और पाकिस्तान क्षेत्र की सिंधु-गंगा का मैदान, मियानमार की इरवाडी, इंडोचीना मीनाम और मीकांग, चीन देश की चियांग-जियांग (यांगट्स), सिकियांग और हवांगहो नदी के मैदान। यहाँ की जनसंख्या अधिक है।

5. द्वीप समूह : एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पूर्व और प्रशांत महासागर से संबंधित तटीय भाग के पास अनेक द्वीप स्थित हैं। ये द्वीप समूह उत्तर में कमचट्का से दक्षिण में फिलीपैन्स और बोर्नियो तथा मालाकार में फैला है। ये पाँच सागरों से घिरा हुआ है। ओखोटस्क समुद्र, जापान समुद्र, पीला समुद्र, पूर्व चीन समुद्र तथा दक्षिण चीन समुद्र।

प्रमुख द्वीप समूह हैं :- क्यूरैल, जपान, लाचू, फिलिपैन्स, बोर्नियो । इनमें अधिकांश ज्वालामुखी युक्त हैं। साथ में उपजाऊ मिट्टी, गहरी खाइयाँ तथा शंखाकृति पर्वतमालाओं से युक्त हैं।

NOT TO BE REPUBLISHED © KTBS

4. प्रमुख नदियाँ तथा कृषि

एशिया की प्रमुख नदियाँ : एशिया की नदियों में विविधता है। इस महाद्वीप की नदी व्यवस्था पर प्राकृतिक लक्षण तथा आस-पास की जलराशि का प्रभाव पड़ता है। आर्किटक्, पेसिफिक् तथा हिन्द महासागर ने एशिया को घेर रखा है। इस महाद्वीप में बहनेवाली अधिकांश नदियाँ इन सागरों से मिलती हैं। इस कारण सागरों में नदियों के मिलने के आधार पर एशिया की नदियों को चार भागों में विभाजित कर सकते हैं।

1) हिन्द महासागर में मिलनेवाली नदियाँ : इस भाग में बहनेवाली नदियाँ हैं, सिरिया तथा इराक देशों की टैग्रिस और युप्रटीस नदियाँ पर्शिया खाड़ी में, पाकिस्तान तथा भारत की सिन्धू, गंगा तथा ब्रहपुत्र नदियाँ हिमालय से

उगम होकर दक्षिण में बहती हुई हिन्द महा सागर में मिलती हैं। मियानमार की सिट्यांग, साल्वीन तथा इरवाड़ी नदियों बंगल की खाड़ी में मिलती हैं।

2) पेसिफिक सागर में मिलनेवाली नदियाँ : इस समूह की प्रमुख नदियों में रुस की आमूर, चीन की ह्वाँग हो, चियांग, जियांग (यांग्ट्से) और सिक्यांग नदियाँ पूर्व की ओर बहते हुए क्रम से ओखोटस्क, पीला समुद्र तथा चीन समुद्र में मिलती हैं। इंडोचीन की मीनाम तथा मीकांग नदियाँ दक्षिण चीन समुद्र में मिलती हैं।



एशिया की नदी व्यवस्था

3) आर्कटिक सागर में मिलनेवाली नदियाँ : ओब, येन्सी तथा लीन आदि इस समूह की प्रमुख नदियाँ हैं। ये केन्द्र के उन्नत भागों में उगम होकर, उत्तर में बहती हुई आर्कटिक सागर में मिलती हैं।

NOT TO BE REPUBLISHED © KTBS

4) आन्तरिक प्रदेश की नदियाँ : इस समूह की नदियाँ आन्तरिक समुद्रों में मिलती हैं। उदा: वोल्गा तथा यूरल नदी क्यास्पियन समुद्र में तथा आमुदरिया और सिरदरिया नदियाँ अरल समुद्र में मिलती हैं।

एशिया व्यवसाय (कृषि) :

खेतीबाडी एशिया की मुख्य पेशा है। करीब तीन चौथाई भाग लोग खेतीबारी करते हैं। एशिया से निर्यात होनेवाले अधिकांश पदार्थों में कृषि उत्पन्न पदार्थ है।

एशिया की कृषि तथा नदी व्यवस्था के बीच निकट सम्बन्ध है। सैबेरिया को छोड़कर अन्य अधिकांश भागों में कृषि, नदियों के मैदान में होती है। वहाँ की उपजाऊ मिट्टी तथा सींचाई के द्वारा पानी की आपूर्ति ही उसके मुख्य कारण हैं।

एशिया के अनेक देशों में किसान खेती के कार्यों में हाथों से बनाए उपकरण तथा प्राणियों का उपयोग करते हैं। सघन खेती की पद्धति अपनाते हैं। कृषि की अन्य रूढ़ियाँ ये हैं - सींचाई-खेती, शुष्क खेती, प्लैटिंग, मिश्र खेती, स्थलांतर खेती इत्यादि। आजकल आधुनिक खेती के उपकरण, रासायनिक खाद, अधिक उत्पादन देनेवाले पौधों का उपयोग इत्यादि एशिया के अधिकांश देशों में अपनाये जाते हैं। फिर भी अनेक देशों में कई कारणों से उपज कम होती है।

फसलें :

एशिया में अनेक प्रकार की फसलों की खेतीबाडी देखने को मिलती हैं। चावल और गेहूँ प्रमुख खाद्य फसलें हैं। चीन और भारत चावल उत्पादन के प्रमुख देश होने के कारण विश्व में चावल के कुल उत्पादन का 90% भाग की आपूर्ति करते हैं। इसके अलावा जपान, बंग्लादेश, थाईलैंड और दक्षिण-पूर्व एशिया आदि चावल उत्पादन के अन्य देश हैं। चीन, भारत, पाकिस्तान तथा एशिया, रुस के कुछ भाग गेहूँ उत्पादक देश हैं।



धान फसल

NOT TO BE REPUBLISHED © KTBS

संसार के प्राकृतिक रबड और चाय के उत्पादन देशों में एशिया अग्रणी हैं। इंडोनेष्या, मलेशिया और थाईलैंड प्रमुख प्राकृतिक रबड उत्पादक देश हैं। प्रमुख चाय उत्पादक चीन, इंडोनेशिया, मलेशिया, भारत तथा थाईलैंड आदि देश हैं।



चाय की बागवानी



कॉफी बागवानी

एशिया की अन्य फसलें हैं - कपास, जूट (पटसन)तथा गन्ना। चीन, भारत, पाकिस्तान, टर्की, टर्कमेनिस्तान तथा उज्बेकिस्तान कपास उत्पादन के प्रमुख देश हैं। बंग्लादेश, चीन और भारत से जूट का उत्पादन होता है। गन्ना उत्पादन के देश प्रायः भारत, इंडोनेष्या, फिलिफिन्स तथा बंग्लादेश है। विश्व में भारत गन्ना उत्पादन का द्वितीय प्रमुख राष्ट्र है।

काफी, कोको, विविध तृणधान्य (नवणे, बाजरा, लोदों) द्विदलधान्य, तेल के बीज, साम्बर पदार्थ इत्यादि पदार्थों के उत्पादन के लिए भी एशिया प्रसिद्ध है।

5. जलवायु तथा प्राकृतिक वनस्पति :

जलवायु : पहले ही उल्लेख किया गया है कि एशिया विशाल भूमहाद्वीप है। वह दक्षिण में भूमध्य रेखा से ध्रुवीय प्रदेश तक फैला है। परिणामस्वरूप इस महाद्वीप के विविध प्रदेशों में विविध जलवायु की परिस्थिति है। यदि एशिया में कुछ भाग विश्व में ही अति शीत (ध्रुवीय) परिस्थिति में हैं, तो अन्य कुछ भाग अति उष्णतायुक्त (केन्द्र तथा दक्षिण-पश्चिम) है। इसी प्रकार अति शुष्क तथा अधिक वर्षा होनेवाले प्रदेश भी यहाँ दिखाई देते हैं। एशिया की विविध जलवायु की स्थिति के लिए कई अंश कारणीभूत हैं । उदाः विस्तार, अक्षांशों का विस्तार, प्राकृतिक विशेषताएँ, मानसून हवाएँ इत्यादि ।

© NOT TO BE REPUBLISHED



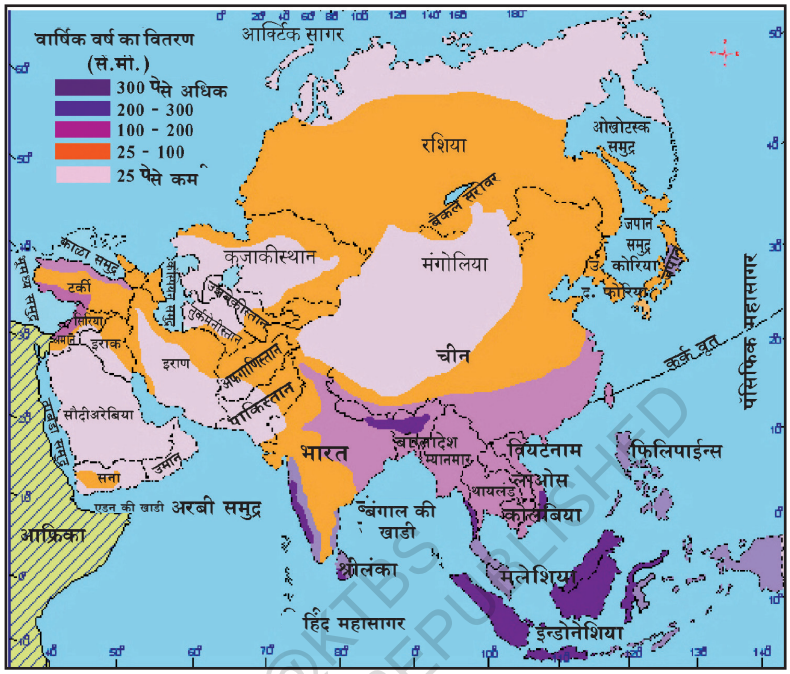
वार्षिक उष्णांश का वितरण

उष्णांश : इसमें सहज रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान और एक समय से दूसरे समय में अन्तर होता है। जनवरी मास में एशिया के दक्षिणी देशों से उत्तरी देशों में अधिक शीत होता है। सैबेरिया में स्थित वर्कोथान्सक अति शीत स्थान है। जुलाई मास में सैबेरिया उत्तर भाग तथा मध्य एशिया के ऊँचे पर्वतीय व पठार के भागों को छोड़कर, एशिया के अधिकांश भागों में उष्णता अधिक होती है। कुछ भागों में उष्णता 40 सेल्सियस से अधिक होती है।

वर्षा का वितरण : एशिया महाद्वीप में दक्षिण-पश्चिम मानसून हवाओं से गर्मी में अधिक वर्षा होती है। लेकिन मानसून हवाएँ मध्य एशिया तक नहीं पहुँचती हैं। यह भाग शुष्क स्थिति में रहता है। पश्चिम एशिया के देश, सर्दी की

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

पश्चिमी मारुत (प्रतिव वाणिज्य) से भी और चीन के पूर्व भाग व फिलिफैंस, मलेशिया आदि उष्णवलय की आवर्त मारुत हवाएँ से वर्षा प्राप्त करते हैं।



वार्षिक वर्षा का वितरण

जाड़े (सर्दी) की स्थिति : एशिया के अधिकांश भागों में अक्तूबर से मार्च तक जाड़ा रहता है। एशिया का अधिकांश भाग उत्तर गोलार्ध में है। इस अवधि में उत्तर गोलार्ध में सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं। इसलिए एशिया के अधिकांश भाग में बहुत कम उष्णता होकर अति शीत जलवायु होता है।

मध्य एशिया में वायु का दबाव अधिक और हिन्द महासागर में दबाव कम होता है। इस कारण मारुत भूभाग से समुद्र की ओर चलती हैं। वे गरम हवाएँ वर्षा नहीं ला सकतीं। जाड़े में वर्षा बहुत ही कम होती है।

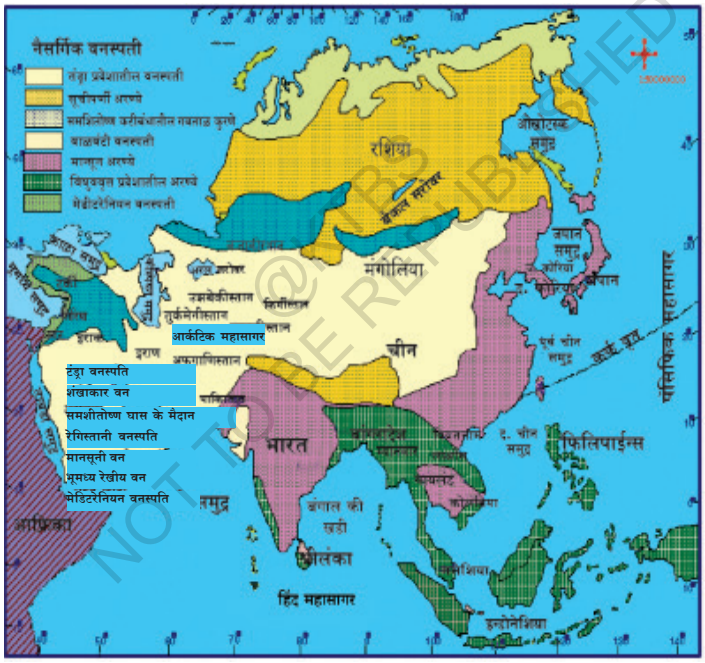
गर्मी की ऋतु : गर्मी में जाड़े से विपरीत स्थिति होती है। यह अप्रैल में प्रारंभ होकर सितम्बर में समाप्त होती है। उत्तर गोलार्ध में सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। इसलिए एशिया के अधिकांश भागों में उष्णता अधिक तथा मध्य एशिया में दबाव कम होता है। हवाएँ समुद्र से, भूभागों की ओर चलती हैं। वे प्रायः महाद्वीप के सभी क्षेत्रों में वर्षा लाती है।

©KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

- जनवरी में सैबेरिया के वर्कोयान्स्क 51^0 से. तथा ओमियाक्नी 71 से. कनिष्ठ उष्णाश दर्ज होता है।.
- भारत में मेघालय राज्य में 'मासिनराम' विश्व में ही अत्यधिक वर्षा का स्थान है। (1187 सें.मी.)

प्राकृतिक वनस्पति:

एशिया के स्वाभाविक वनस्पति तथा जलवायु के मध्य आपसी सम्बन्ध है। भूस्वरूप, मिट्टी तथा मानव के प्रवेश भी सस्य वर्ग के प्रकार तथा वितरण पर प्रभाव डालते हैं। एशिया के वनस्पति में विविधता है। उन्हें 7 भागों में बाँटा जा सकता है।



प्राकृतिक वनस्पति

1. टंड्रा वनस्पति : यह वनस्पति आर्कटिक के तटीय क्षेत्र में छोटे भाग में दिखाई देता है। यह प्रायः जलीय चट्टानों तथा हिम से आवृत्त होता है। इस कारण सस्यों की अभिवृद्धि शैवल तथा शिलावल्कों तक ही सीमित है।



टैगा वन

NOT TO BE REPUBLISHED

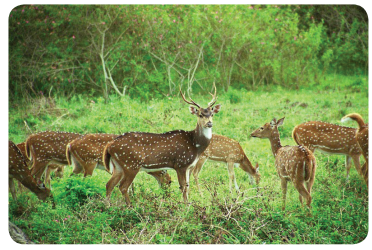
2. शंखाकार पेड़ों (कोनिफेरस) जंगल : टंड्रा प्रदेश में जंगल फैले हुए हैं। उन्हें 'टैगा वन' भी कहते हैं। फर, स्प्रूस, लार्च, पैन इत्यादि यहाँ उगनेवाले पेड़ हैं। ये नरम गूदेदार पेड़ हैं।

3. समशीतोष्ण क्षेत्र के घास के मैदान (स्टेप्पी): मध्यएशिया तथा रेगिस्तानी और अर्धरेगिस्तानी के किनारे में दिखाई देती है। कम बारीश के कारण यहाँ कम ऊँची घाँस उगती है।

4. रेगिस्तानी वनस्पति : यह एशिया के उष्णवलय तथा समशीतोष्ण क्षेत्र के रेगिस्तान में दिखाई देता है। उदा: अरेबिया, इरान, थार रेगिस्तान आदि। यहाँ काँटों की झाड़ी, झाड़ीदार पौधे तथा घास के मैदान ही उपजते हैं। ओयासिस के पास खजूर तथा ताड़ प्रजाति के पेड़ दिखाई देते हैं।

5. मानसून जंगल : दक्षिण-पश्चिम तथा पूर्वएशिया भागों में दिखाई देते हैं। यहाँ अधिक गर्मी तथा बारीश होने से जंगल होते हैं। सागवान, साल, बरगद, बाँस, चंदन तथा कई सख्त पेड़ यहाँ उगते हैं। शरऋतु में उनके पत्ते झड़ जाते हैं।

6. भूमध्य रेखीय प्रदेश के वन : अधिकतया पूर्व इंडीस तथा अधिक वर्षा होने मानसून प्रदेश में दिखाई देते हैं। वे हमेशा हरे तथा ऊँचे उगनेवाले पेड़ हैं। महोगनी, एबोनी, रबड, बाँस, भृंग ये यहाँ उगनेवाले प्रमुख पेड़ हैं।



मानसूनी वन

7. मेडिटरेनियन वनस्पति : ये दक्षिण-पश्चिम भाग में दिखाई देते हैं। यहाँ जैतून, आलीव अंजूर, ओक् पेड़ तथा झाड़ीदार पौधे उगते हैं। पेड़ कम ऊँचे होते हैं।

NOT TO BE REPUBLISHED

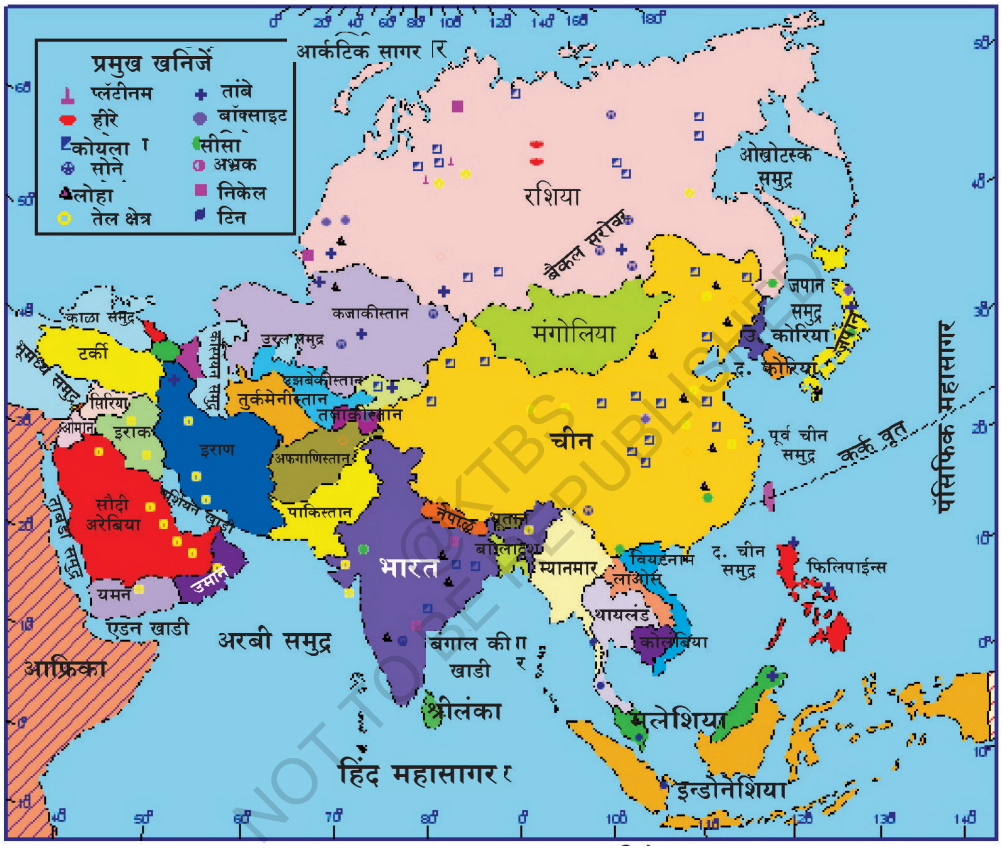
6. प्रमुख खनिज :

लौहे अयस्क : यह लोहा तथा इस्पात तैयार करने के लिए आवश्यक कच्चा वस्तु है। एशिया में अधिक लोह खनिज है तथा संसार का 30 प्रतिशत भाग लौह- अयस्क निक्षेप इस महाद्वीप में है।



भूमध्य रेखीय प्रदेश के वन

चीन अधिक लौह-अयस्क उत्पादक देश हैं। भारत, टर्की, फिलिपैन्स, मलेशिया, थाइलैंड, इंडोनेशिया, म्यन्मार, वियेटनाम, कजकिस्तान तथा पाकिस्तान प्रमुख उत्पादक है। कोरिया, तैवान, श्रीलंका, जपान तथा दक्षिण-पश्चिम एशिया के राष्ट्रों में अल्प मात्रा में लौह-अयस्क मिलता है ।



प्रमुख खनिज

मैंगनीज : प्रमुख मिश्रलोहे खनिज है। उत्तम इस्पात तैयार करने में यह अत्यावश्यक है। एशिया महाद्वीप में अधिक मात्रा में मैंगनीज निक्षेप पाया जाता है। वह ट्रान्स ककासस् मध्य एशिया, सैबेरिया, चीन तथा भारत में अधिक बँटा है। उत्पादन में चीन आगे है।

NOT TO BE REPUBLISHED © BKTBS

बाक्सैट : एशिया अधिक बाक्सैट निक्षेपवाला महाद्वीप है। वह अधिकतया कजकिस्तान तथा दक्षिणकेंद्र सैबेरिया में मिलता है। इसके अलावा भारत, इंडोनेशिया, टर्की, मलेशिया तथा चीन देश में भी पर्याप्त मात्रा में बाक्सैट प्राप्त होता है।

कोयला : यह जीवाश्म ईंधन खनिज है। यह एक प्रमुख शक्ति का मूल है। एशिया में विपुलमात्रा में कोयला मिलता है। लेकिन उसके बँटवारे में असमानता है। अत्यधिक मात्रा में कोयला निक्षेप चीन, भारत, इंडोनेशिया, सैबेरिया तथा मध्य एशिया में दिखाई देता है।

संसार में अत्यधिक कोयला निक्षेप तथा उत्पादन दोनों में चीन प्रथम है। चीन के सभी प्रांतों में कोयला प्राप्त है। भारत एशिया का दूसरा प्रमुख कोयला उत्पादक देश है। हाल ही में मध्य सैबेरिया में स्थित कुजेनेट्ज मैदानी प्रदेश अधिक कोयला उत्पादक क्षेत्र है। कम मात्रा का कोयला निक्षेप उजबेकिस्तान, किर्घिस्तान, तजकिस्तान, पाकिस्तान, जापान देशों में प्राप्त होता है।

पेट्रोलियम् : यह एक तैल इंधन है। स्वयंचालित वाहन, रेल, जहाज तथा विमान का (आवश्यक) जरूरी शक्तिसाधन है। दक्षिण-पश्चिम एशिया में अपार पेट्रोलियम निक्षेप है। वह अधिकतया सऊदी अरेबिया, इरान, इराक, कुवैत, बहरीन, कतार तथा संयुक्त अरब एमेरेटीस (UAE) में दिखाई देता है। ये संसार भर के कुल पेट्रोल निक्षेपों में आधे भाग के हैं और संसार के 25 प्रतिशत पेट्रोल उत्पादन करते हैं।

पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के कुछ देशों में भी पेट्रोलियम निक्षेप प्राप्त होते हैं। उदा: इंडोनेशिया, मलेशिया, चीन, तैवान, म्यन्मार, भारत, वियेट्नाम आदि ।

हाल ही में सैबेरिया के भाग में पेट्रोलियम का उत्पादन अधिक हुआ है।

- पेट्रोलियम शब्द (Petroleum) 'Petra' याने 'पत्थर' तथा oleum याने तैल, ये दोनों लैटिन भाषा के शब्द संयोजक हैं ।
- सऊदी अरेबिया संसार में ही अत्याधिक पेट्रोल उत्पादक देश है ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

मध्य एशिया का टर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान, कजकिस्तान आदि भागों में भी अधिक पेट्रोल प्राप्त होता है।

प्रमुख औद्योगिक प्रदेश :

एशिया महाद्वीप विशाल प्रदेश है। समृद्ध खनिज तथा व्यवसायोत्पन्न होने पर भी यूरोप महाद्वीप की तरह औद्योगिकरण में तरक्की न कर सका। इसके मुख्य कारण तकनीकी ज्ञान, पूंजी की कमी, सांप्रदायिक स्वभाव, अधिक लोग कृषि में लगे रहना।

प्रमुख औद्योगिक तथा औद्योगिक कार्यों के प्रदेशों को 'औद्योगिक प्रदेश' कहते हैं। ये औद्योगिकता की स्थापना के लिए अनुकूल कुछ भागों में दिखाई देते हैं। एशिया के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश इस प्रकार हैं -

जपान : इस देश में चार प्रमुख औद्योगिक प्रदेश हैं :

1. **किहीन प्रदेश :** यह स्थान टोकियो, कवासाकी तथा युकोहाम् नगर युक्त बृहत औद्योगिक प्रदेश है। यहाँ कपड़ा, इंजिनियरिंग, जहाज बनाना, कागज तथा सीमेंट औद्योगिक प्रमुख हैं।
2. **हानशिनप्रदेश :** इस प्रदेश में ओ साका, कोबे तथा क्यिूटो महानगर है। यहाँ कपड़ा उद्योग मुख्य है।
3. **ऐसे खाड़ी प्रदेश :** यह प्रदेश नगोया नगर के चारों ओर फैला है। यहाँ कपड़ा तथा इंजिनियरिंग उद्योग मुख्य हैं ।
4. **किट कियूशु प्रदेश :** यह प्रदेश यवाटा, मोजी तथा कोकुर नगरों से जुड़ा हुआ है। यह इस्पात, जहाज, यंत्रोपकरण तथा कपड़ा उद्योग के लिए प्रसिद्ध है।

चीन : कृषि प्रधान और औद्योगिक क्षेत्र में विकसित देश है। मावोयिष्ट सरकार आने पर औद्योगिकरण की ओर ध्यान दिया गया है। इस प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश हैं

NOT TO BE REPUBLISHED © KTBS

1. **मंचूरिया प्रदेश :** यहाँ इस्पात, इंजिनियरिंग तथा रासायनिक औद्योगिक प्रमुख हैं ।

2. **बीजिंग प्रदेश :** इंजिनियरिंग, जहाज निर्माण, वस्त्राद्ययम तथा रासायनिक औद्योगिक मुख्य हैं ।

3. **शान्सि बावटोव :** लोहा तथा इस्पात तथा कृषि उपकरण ।

4. **चांग जियांग :** प्रदेश में कपड़ा उद्योग, जहाज निर्माण तथा इस्पात तैयार करना प्रमुख है।

5. **वुहान प्रदेश :** लोह तैयार करना तथा बृहत् औद्योगिक साधनों का निर्माण।

भारत के औद्योगिक प्रदेश : 1. हूग्ली-कोलकत्ता प्रदेश 2. मुंबई-पुणे प्रदेश 3. अहमदाबाद-वडोदरा प्रदेश 4. मदुरै, कोयमबत्तूर-बेंगलूर प्रदेश 5. छोटा नागपुर प्रदेश 6. दिल्ली-मेरठ 7. विशाखापट्टण गुंटूरु प्रदेश, 8. कोल्लम् - तिरुवनंतपुर प्रदेश.

दक्षिण कोरिया, हांगकांग, सिंगापुर तथा मलेशिया में एशिया के अन्य औद्योगिक प्रदेश हैं।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

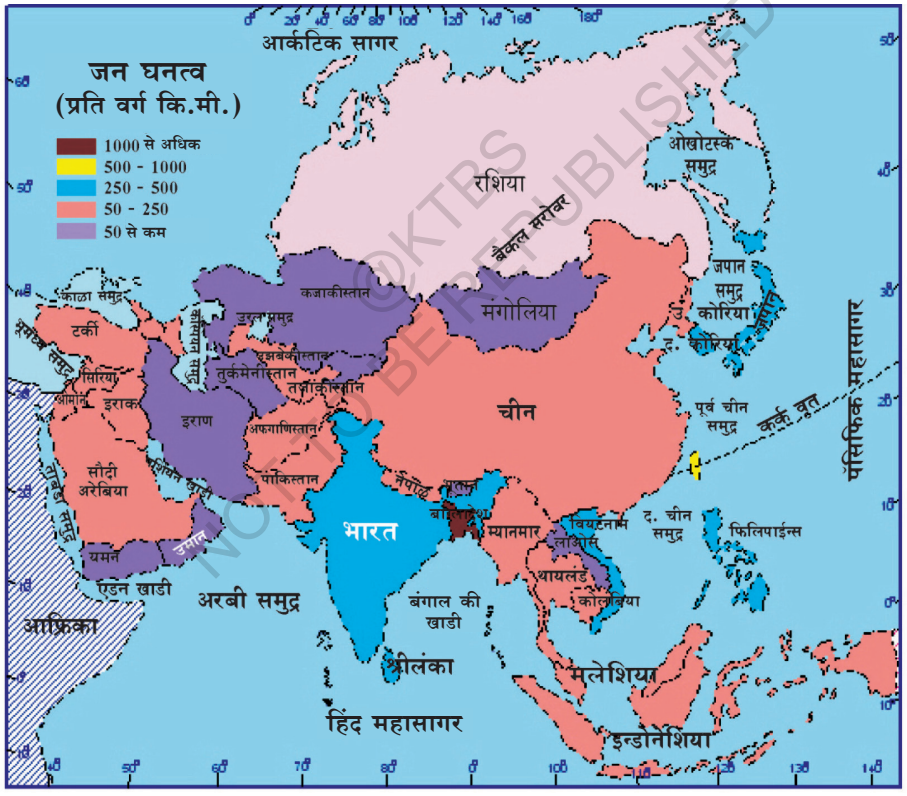
7. एशिया की जनसंख्या

जनसंख्या का विकास : एशिया महाद्वीप में लगभग 476 करोड़ जनसंख्या है। यह संसार की जनसख्या का 60 प्रतिशत है। आज की जनसंख्या पिछली तीन सदियों से भी पाँच गुना अधिक हुई है। सा. श. 1950 में एशिया की जनसंख्या केवल 140 करोड़ थी। हाल ही में जनसंख्या की वृद्दि का दर अधिक था। लेकिन अब वह कम होती जा रही है।

जनसंख्या वितरण तथा घनत्व : एशिया महाद्वीप की जनसंख्या समान रूपसे वितरित नहीं हैं। एशिया के अत्यधिक भागों में न्यूनतम जनसंख्या तथा कम भागों में अधिक जनसंख्या को आप देख सकते हैं।

एशिया महाद्वीप की औसत जनघनत्व प्रति वर्ग कि. मी. में 153 लोग हैं। अत्यंत शीतल उत्तर तथा पूर्व सैबेरिया, रेगिस्तान युक्त अरेबिया, ईरान तथा थार (भारत) प्रदेश और अत्यंत ऊँचे मध्य एशिया में अति न्यूनतम जनसंख्या है ।

एशिया के घने जनसंख्या वाले भाग में भारत के महामैदान, बांग्लादेश, चीन, जपान, कोरिया तथा जावा द्वीप (इंडोनेशिया) प्रमुख हैं। इनमें अधिक भाग उपजाऊ, समतल मैदान या नदी, मैदानी प्रदेश से भरे हैं। म्यन्मार, थाइलैंड, फिलिपैन्स, इराक, श्रीलंका, वियेट्नाम, मलेशिया तथा कांबोडिया में भी जनघनत्व अधिक है।



एशिया का जन घनत्व

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

नये शब्दः

शरतकाल, शंख आकार के पेड़ों का जंगल, (शंखधारी जंगल), जीवाश्म ईंधन, परतदार पर्वत, श्रेणी, चूनापत्थर, शैवाल, शिलावल्क, ओयासिस, कच्चामाल, सागवान, टंड्रा।

ज्ञात रहे :

- एशिया महाद्वीप की अत्यंत ऊँची चोटी माउन्ट एवरेस्ट (8848 मी.)
- एशिया का अत्यंत निचला बिंदु मृत सागर ।
- संसार में ही अधिक संख्या की हिमनदियाँ काराकोरम् पर्वत श्रेणी में है।
- तिब्बत संसार का अत्यंत ऊँचा पठार है। यह संसार की छत कहलाता है।
- कैस्पियन सागर संसार का अत्यंत विशाल अंतर्देशीय जलराशि का क्षेत्र है।
- दक्षिण सैबेरिया को बैकाल सरोवर संसार का अ त्यंत गहरा सरोवर है।
- क्षेत्र फल तथा जनसंख्या दोनों में एशिया का सबसे छोटा देश माल्डीव्ज है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्द से भरिए :

1. एशिया महाद्वीप _____ गोलार्ध में स्थित है ।
2. एशिया का सबसे ऊँचा पर्वत _____ है ।
3. एशिया में रबर उत्पादन में अग्रणी देश _____ है ।
4. समशीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदान _____ कहलाती है ।

प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

5. एशिया विविधता का महाद्वीप है। क्यों?
6. एशिया महाद्वीप की भौगोलिक परिस्थिति बताइए ।
7. एशिया के प्रमुख प्राकृतिक विभाग कौन-कौन से हैं ?
8. एशिया में कौन सी ऋतु में अधिक वर्षा होती है?
9. एशिया की प्रमुख खाद्य फसलें कौन-कौन सी हैं?
10. एशिया के जीवाश्म ईंधन का नाम बताइए ।
11. एशिया महाद्वीप के किस भाग में जनसंख्या कम है? क्यों ?

गतिविधियाँ :

1. अपनी अट्लस पुस्तक की सहायता से एशिया के नक्शे का अध्ययन कर पर्वत, पठार, मैदानी प्रदेश तथा नदियाँ पहचानकर सूची बनाइए। मानचित्र में पहचानिए ।
2. एशिया महाद्वीप की प्रमुख नदियाँ तथा उनकी उपनदियों का विवरण, जैसे उगमस्थान, लंबाई, उपनदियाँ, मुहाना, बाँध का विवरण तथा चित्र संग्रह करना।
3. आपने निवास स्थान के अड़ोस-पड़ोस को देखकर वहाँ की फसलें, वनस्पति, तथा जलराशी की तथा संभव सूची बनाइए ।

© SCERT NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय 23 | यूरोप

L9M1A3

पाठ परिचय

इस महाद्वीप में यूरोप महाद्वीप का स्थान, विस्तार तथा भौगोलिक परिस्थिति, प्राकृतिक तथा जलवायु विभाग, वनस्पति, व्यवसाय, पशुपालन, मछलीपालन, खनिज, औद्योगीकरण तथा जनसंख्या का विकास, बँटवारा तथा घनत्व का परिचय दिया गया है।

सामर्थ्य :

1. यूरोप का स्थान, परिमाण तथा भौगोलिक परिस्थिति को जानना ।
2. यूरोप की प्राकृतिक तथा जलवायु विभागों को जानना ।
3. वनस्पति पर जलवायु प्रदेश के प्रभाव को समझना।
4. यूरोप के औद्योगिक, खनिज द्वार निर्णायक तत्वों की जानकारी लेना ।
5. यूरोप की असमान जनसंख्या का बँटवारा, घनत्व तथा स्थानांतरण को नियंत्रण करने के अंशों का विवरण ।

NOT TO BE REPUBLISHED @MTBS

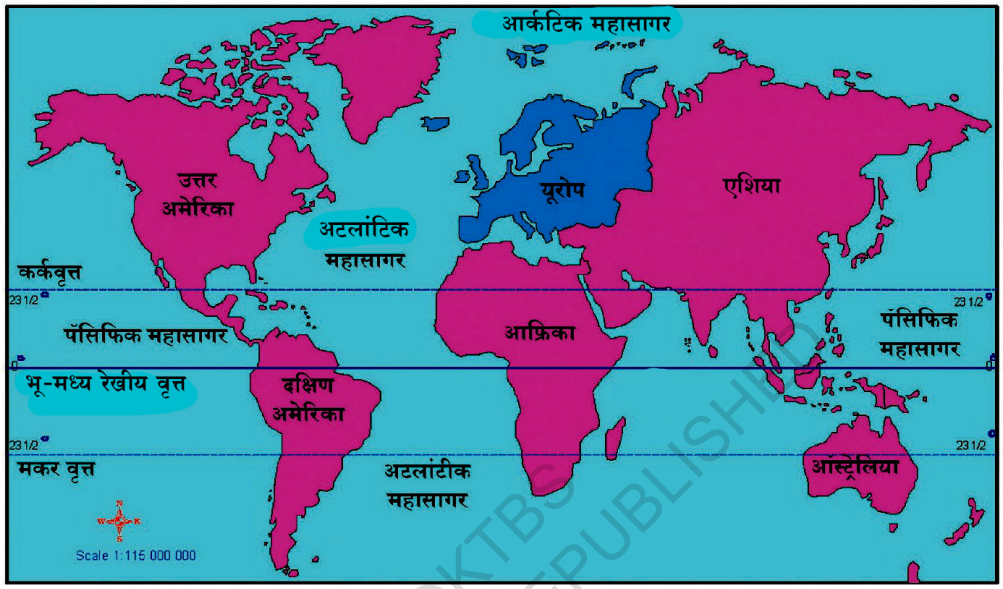
प्रस्तावना : संसार के अधिक जनघनत्व तथा नगरीकृत भू-महाद्वीपों में यूरोप एक है। इसके अलावा यह समृद्ध तथा औद्योगिकृत भू-महाद्वीप है। विस्तार में यह संसार में छठे स्थान पर है। यह संकीर्ण तथा वैविध्य भौगोलिक परिस्थिति, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक व्यवस्था से पूर्ण है। अनेक बड़े तथा छोटे देशवाला है, जिनकी कुल संख्या 56 हैं।

1. स्थान, विस्तार तथा भौगोलिक परिस्थिति

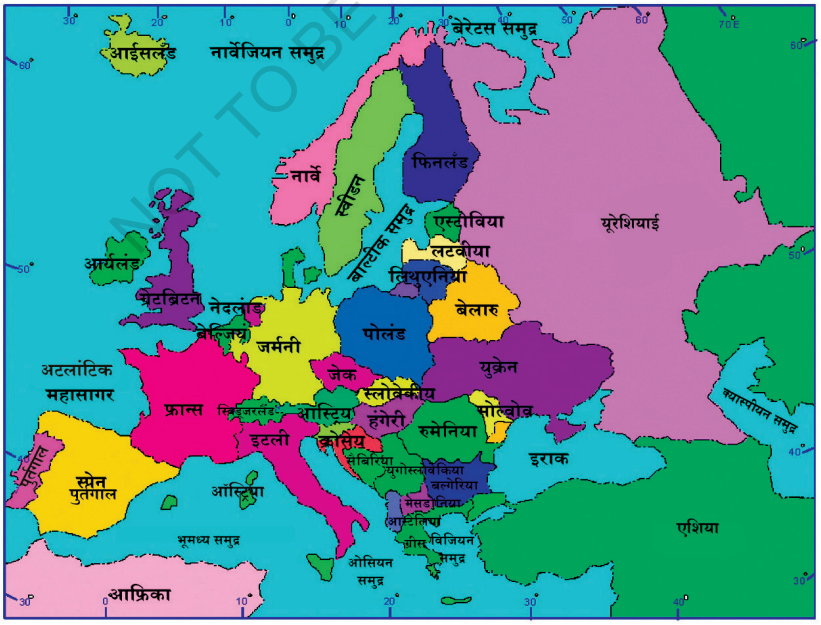
स्थान : यूरोप 10^0 पश्चिम से 60^0 पूर्व देशांतर तथा 36^0 उत्तर से 72^0 उत्तर अक्षांश में स्थित है।

विस्तार : यूरोप संसार का दूसरा छोटा भूमहाद्वीप है। उसका कुल विस्तार 10.4 मिलियन च. कि. मी है। यह भारत के विस्तार से तीन गुना बड़ा है। यह महाद्वीप पृथ्वी के कुल विस्तार में 7 प्रतिशत में फैला है। लेकिन संसार की जनसंख्या का 1/4 भाग यहाँ वास करता है।

भौगोलिक परिस्थिति : यूरोप एशिया महाद्वीप का प्रायद्वीप है। यह महाद्वीप तीनों ओर पानी से आवृत है; उत्तर में बेरेंट समुद्र, पश्चिम में अटलांटिक सागर तथा दक्षिण में भू-मध्यसागर से आवृत्त है।



संसार में यूरोप का स्थान



स्थान, विस्तार तथा भौगोलिक परिस्थितियाँ

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

यूरोप के पूर्वी भाग में एशिया महाद्वीप है। जिसे यूराल्स पर्वत, ककासस पर्वत तथा कैस्पियन सागर यूरोप से अलग करता हैं। दक्षिण भाग में अफ्रिका महाद्वीप है।

लेकिन ऊपर कथित भौगोलिक स्वरूप यूरोप तथा एशिया के बीच मजबूत सीमाएँ नहीं है। इसलिए इसे 'यूरेशिया' नामक एक ही नाम से जाना जाता है।

2. प्राकृतिक विशेषताएँ

यूरोप महाद्वीप विशिष्ट प्राकृतिक विशेषता वाला है। इस महाद्वीप के पश्चिम तथा दक्षिण भाग में हिमावृत शिखर से बने पर्वत, कंदराएँ, घाटी तथा छोटे मैदान हैं। लेकिन इस महाद्वीप के पूर्वभाग का अधिकांश भाग स्थिर पीठभूमि से आवृत है। यहाँ-वहाँ थोड़ा परिवर्तन दिखाई देता है।



एलब्रस शिखर

© KSBSE NOT TO BE REPUBLISHED

यूरोप महाद्वीप का अत्यंत ऊँचा बिंदु ककासस पर्वत श्रृंखला का माऊँट एलब्रूस शिखर है (5633 मी.)। अत्यंत ढ़लाऊ स्थल कैस्पियन सागर है। यह समुद्र स्तर से 28 मी. ढ़लवाँ है।

वास्तव में एशियन भू-राशी में यूरोप एक बड़ा प्रायाद्वीप है। इस महाद्वीप में अनेक प्रायाद्वीप है। उदा : स्केंडिनेविया, सैबीरिया, जटलैंड, बाल्कन आदि। इसलिए यूरोप 'प्रायाद्वीपों का प्रायाद्वीप' नाम से जाना जाता है।

यूरोप में 80,500 कि. मी. लंबा आंतरिक फैला हुआ समुद्र तट है। वह एशिया महाद्वीप तट से भी अधिक लंबा है। इस महाद्वीप सागर किनारे पर हजारों द्वीप कल्प हैं। उनमें से ब्रिटेन तथा आयरलैंड बड़े हैं। शेटलैंड, फैरोस, ओर्केनि, सिसिली, सार्डिनिया, कोर्सिक, क्रेट तथा चानेल द्वीप ये अन्य प्रमुख द्वीप हैं।

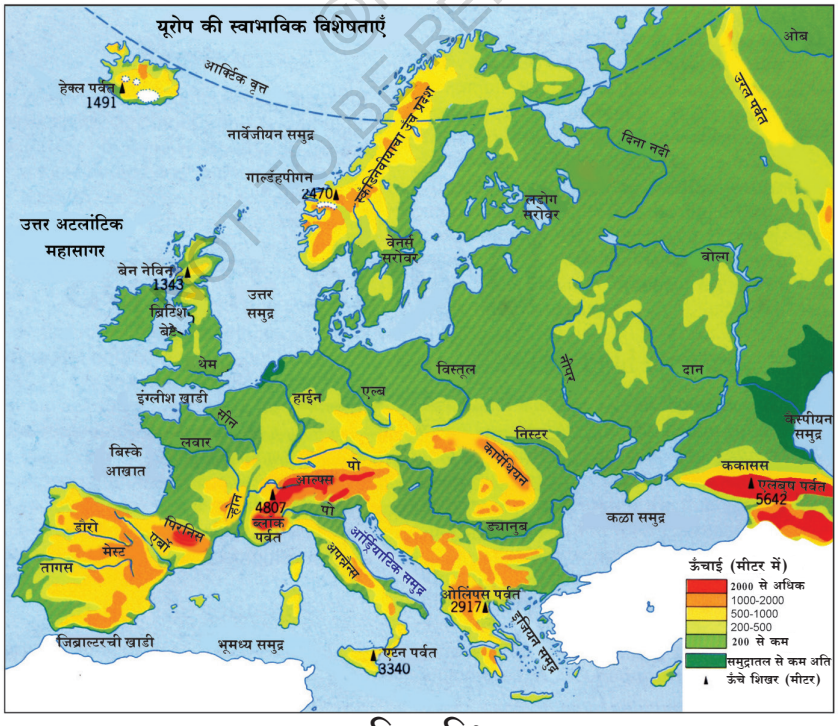
प्राकृतिक विभाग :

ऊपरी लक्षण के आधार परे यूरोप को सामान्यतया 4 विभागों में विभाजित किया गया है।

1) उत्तर-पश्चिम के उच्च भाग। 2) उत्तर यूरोप के मैदान।

3) केंद्र के उच्च भाग। 4) दक्षिणी पर्वत।

1. उत्तर-पश्चिम के उच्च भाग : यह प्राकृतिक विभाग अत्यंत प्राचीन पर्वत श्रृंखला फिनलैंड, स्वीडन, नार्वे से युक्त है। जो ऐसलैंड तथा ब्रिटेन तक भी फैले हैं । ये अवशेष पर्वत हैं। हिम नदी के घटने से, कम ऊँचाई वाले हैं। वे प्राचीन शिलाओं से बने हैं। स्केंडिनेविया में इनकी सामान्य ऊँचाई 2000 मीटर तथा आयरलैंड और स्कॉटलैंड में 600 मी. ही है। गोल्डोपिग्गेन (2469 मी) इस विभाग का अत्यंत ऊँचा शिखर (नार्वे) है। स्काटलैंड का बेननेविस (1343 मी) तथा वेल्स के स्नोडोन (1085 मी) अन्य शिखर हैं। यह विभाग उत्तर की ओर साधारण ढ़लाऊ हैं। इस भाग में अनेक नदियाँ बहती हैं ।



प्राकृतिक विभाग

© SCERT NOT TO BE REPUBLISHED

2. उत्तर यूरोप का मैदान : इसे 'केंद्र का ढ़लाऊ भाग' भी कहा जाता है। यह पूर्व में यूराल पर्वतों से पश्चिम में अटलांटिक तट तक फैला है। यूरोप का अधिकांश भाग इस भाग में है। इसमें यूरोपियन रुस्, पोलेंड, उत्तर जर्मनी, नीदरलेंड्स (हालेंड), डेन्मार्क, बेल्जियम, उत्तर फ्रान्स तथा इंगलैंड के पूर्व भाग जुड़े हैं।

इस भाग का पूर्वी भाग चौड़ा है और पश्चिम भाग संकीर्ण है। नीदरलैंड और बेलजियम् देश के कुछ मैदान समुद्र स्तर से नीचे हैं। ये मैदान यहाँ बहनेवाली नदियों के संचय कार्य से बने हैं।

यह भारत के सिंधु-गंगा के नदी मैदानी प्रदेश की तरह समतल नहीं है। कुछ भागों में ये मैदान साधारण ढ़लाऊँ से हैं तो कुछ ओर पर्वत तथा पहाड़ों की श्रेणी से अलग होते हैं। यहाँ संसार में प्रसिद्ध उपजाऊ कृषि भूमि है।

3. केंद्र के उच्च भाग : ये प्राचीन शिलाओं से बने हैं। जो अनेक प्राचीन पर्वत, पहाड तथा पीठ भूमि से युक्त है। उनकी औसत ऊँचाई समुद्र स्तर से 600 मीटर से अधिक नहीं है।



ब्लांक शिखर

यह विभाग पश्चिम में ऐरलैंड से पूर्व में रुस तक फैला है। इसमें स्पेन तथा पुर्तगाली का मेसेट, फ्रान्स का केंद्र मासिफ तथा वोस्जेस, जर्मनी को ब्लॉक फारेस्टर तथा जेक और स्लोवेकिया गणतंत्र के कम ऊँचाई वाली अनेक श्रृंखलाएँ हैं।

इस विभाग के कुछ भाग जंगल से आवृत हैं। अधिकांश प्रदेश पत्थर-चट्टानों से भरे हैं। यहाँ की मिट्टी कृषि के लिए उपजाउ नहीं है। लेकिन नदी की घाटियों ने उत्तम कृषि भूमि प्रदान की है।

4. दक्षिण के पर्वत : इस विभाग को 'आल्पैन पर्वतों का भाग' भी कहा। जाता है। इसमें कई पर्वत श्रृंखलाएँ हैं। सियेर्रमोरेन (स्पेन), फ्रान्स तथा स्पेन

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

के मध्यभाग में सीमा की तरह पिरनीस पर्वत हैं। ये पश्चिम में अटलांटिक तट से पूर्व में कैस्पियन सागर तक एक अन्य समानांतर श्रृंखला के रूप में फैली हैं। ये हिमालय की तरह परतदार पर्वत हैं ।

इस भाग में आल्प्स पर्वत प्रमुख हैं। यहाँ के ऊँचे शिखर हैं- माऊँट ब्लॉक (4807) मी) है। आल्पस पर्वत-फ्रान्स के दक्षिण-पूर्व इटली के उत्तर, स्विड्जरलैंड का अधिकांश भाग, जर्मनी आस्ट्रिया तथा स्लोवेनिया भागों में बँटा है। इटली के अधिकांश भाग में अपनैन पर्वत, क्रोसिया, बोस्निया तथा युगोस्लाविया में डिनारिक आल्प्स, बल्गेरिया के बाल्कन तथा उत्तर स्लोवेनिया में कार्पेथियन पर्वत हैं।

3. जलवायु प्रदेश तथा प्राकृतिक वनस्पति :

यूरोप के जलवायु प्रदेश के बारे में चर्चा करने से पहले उसके सामान्य जलवायु की परिस्थिति को जानेंगे। इस महाद्वीप के अधिकांश भाग में समशीतोष्ण जलवायु पायी जाती है। इसे 'अनुकूल जलवायु' भी कहा गया है। यह प्रमुख जलवायु नियंत्रण घटकों की आपसी प्रक्रिया का फल है। वे इस प्रकार हैं- अक्षांश, सतही विशेषता, वायु (मारुत) तथा स्थान। फिर भी पूरे महाद्वीप में प्रचलित अटलांटिक सागर से बहनेवाली हवाएँ इस महाद्वीप के अधिकता जलवायु पर अधिक प्रभाव डालती हैं। गल्फ स्ट्रीम उष्णसागर प्रवाह (धारा) तथा प्रबल पश्चिम हवाएँ इसका प्रमुख कारण हैं।

NOT TO BE REPUBLISHED © BSTBS

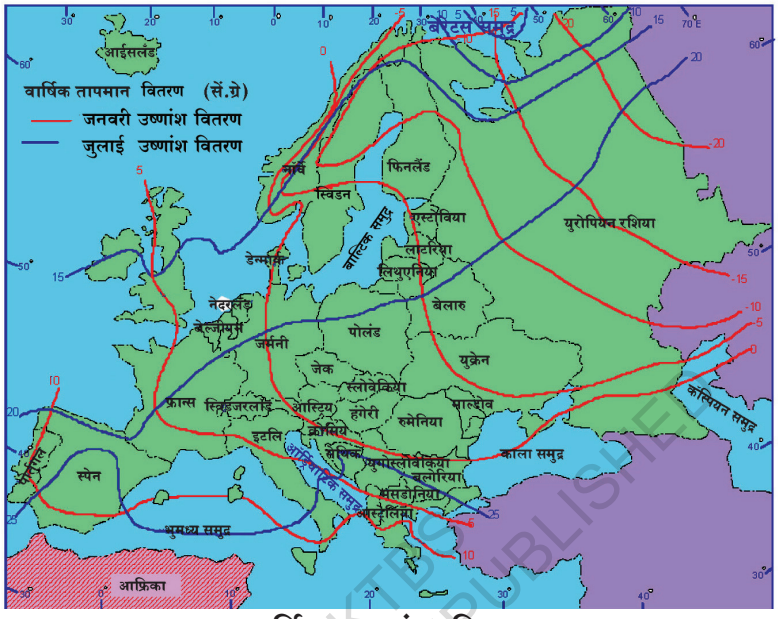
सामान्यतया दक्षिण यूरोप के ठंडे अल्पावधि ग्रीष्म की तुलना में उत्तर में शीतकाल दीर्घ तथा शीतल रहता है। इसके अलावा पश्चिम यूरोप की तुलना में पूर्वभाग में शीतकाल दीर्घ तथा शीत होते हुए भी ग्रीष्मकाल अल्पावधि तथा गर्म रहती है।

जलवायु प्रदेश :

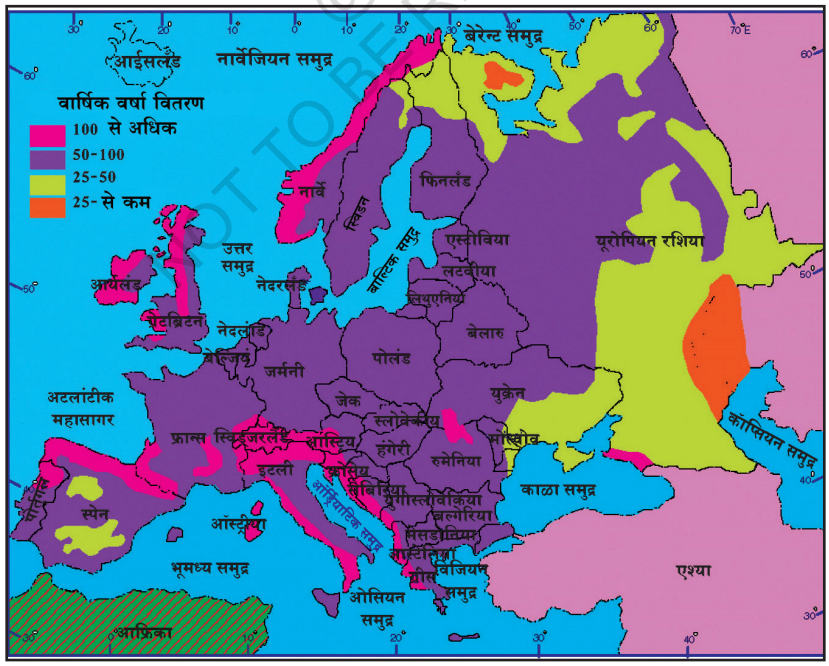
यूरोप को 4 प्रमुख जलवायु क्षेत्र के रूप में विभाजित कर सकते हैं।

1. पश्चिमोत्तर यूरोप का सागरीय जलवायु प्रदेश : यह प्रदेश नार्वे समुद्र किनारे से स्पेन के उत्तर और मध्य युरोप के आंतरिक क्षेत्र में वितरित है। अनुकूल सर्दी, ठंडा ग्रीष्मकाल और भरपूर वर्षा, बादलों से घिरे और कुहरे से युक्त दिन

यहाँ की जलवायु की प्रमुख विशेषताएँ हैं। सर्दी और गर्मी दोनों काल में साधारण तापमान (10^0 C और 18^0 C) और वर्षा का वितरण उत्तम है। (75 से.मी)



वार्षिक उष्णांश वितरण



वार्षिक वर्षा वितरण

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

2. खंडांतर जलवायु प्रदेश : यह अधिकांश पोलैंड, स्लोवेकिया, जेक गणराज्य, हंगेरी, रुमेनिया तथा बल्गेरिया में दिखाई देता है। इस जलवायु के लक्षण है शीतभरित शीतकाल, गरम ग्रीष्मकाल (-12^0 से तथा 10^0 से) तथा औसत वार्षिक वर्षा 50 से.मी.। ग्रीष्म के आरंभ में अत्यधिक पर्यावरणीय वर्षा होती है।

3. भू-मध्य रेखीय जलवायु प्रदेश : अधिक उष्णांश, शुष्क तथा धूप से युक्त ग्रीष्म तथा थोड़ी सी वर्षा होने का उत्तम शीतकाल इस जलवायु के प्रमुख गुणलक्षण है। वर्षा के बँटवारे में समानता नहीं है। शीतकाल का औसत उष्णांश 8^0 सेल्सियस तथा वह ग्रीष्म में 22^0 सेल्सियस होता है। औसत वार्षिक वर्षा 75^0 से 100^0 से/मी है। ऐसे जलवायु विशेष रूप में मेडिटरेनियन प्रदेश सहित दक्षिण यूरोप में दिखाई देते हैं।

4. पर्वतीय जलवायु प्रदेश : ऐसे जलवायु आल्पस तथा ककासस पर्वत भागों में दिखाई देता है। यह ऊँचा, सूर्यकिरणों के कोन तथा मारतों (हवाओं) से नियंत्रित किया जाता है। शीतकाल का उष्णांश -4^0 से तथा ग्रीष्मकाल का उष्णांश 16^0 से औसत वर्षा का बँटवारा पर्वतों की हवा के विमुख भाग में 50 से.मी. तथा हवा के अभिमुख भाग में 200 से.मी. अत्यंत ऊँचे भाग में उष्णांश जमजाने के बिंदु से भी कम रहता है।

प्राकृतिक वनस्पति :

यूरोप में अधिक दीर्घकाल मानव बसा है तथा यह अधिक जनघनत्व से भरा है। इसलिए प्राकृतिक वनस्पति संपूर्णतया नाश हुआ है। लोगो का आवास के प्रतिकूल तथा ऊँचे प्रदेशों में ही दिखाई देते हैं। यूरोप में निम्नलिखित 6 प्रकार के वनस्पति हैं ।

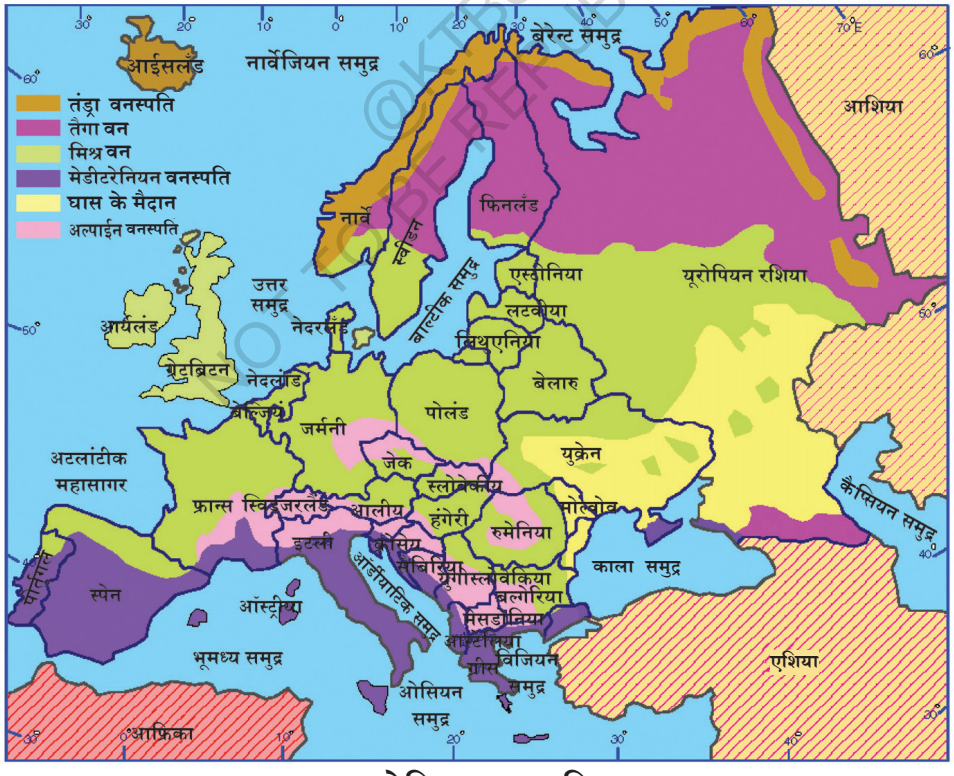
1. तंड्रा वनस्पति : शिलावल्क तथा शैवाल (Lichens and Mosses) से बने हैं। यह आयरलैंड, उत्तर नार्वे, स्वीडन तथा फिनलैंड सहित छोटे प्रदेश में दिखाई देता है। इसी तरह का वनस्पति आल्प्स तथा उत्तर यूरल्स पर्वत के ऊँचे-भूभागों में भी दिखाई देता है।

@KEBS NOT TO BE REPUBLISHED

2. टैगा वन : नार्वे, स्वीडन तथा फिनलैंड सहित ध्रुव प्रदेशों में दिखाई देते हैं। ये शंखु आकारों के पेड़ों का जंगल भी कहा गया है। यहाँ कुछ ही प्रकार के पेड़ फलते हैं। उदा : स्काट्सपैन, स्प्रूस तथा लार्च। ये तीखे पत्ते पाये है, ये शंख के आकार के हैं।

3. मिश्र वन : दक्षिण के केंद्र प्रदेश में दिखाई देते हैं। इनमें पत्ते झडाने तथा शंखधारी पेड़ फलते हैं। प्रमुख पेड़ हैं ओक्, आश, यल्स, पाप्लर, विल्लो, बीच आदि।

4. भू-मध्य रेखीय वनस्पति : सामान्यतया मेडिटेरियन समुद्र के तरपट लंबाई में दिखाई देते हैं। यह चौड़े पत्तों का हमेशा हरा रहनेवाला वनस्पति है। क्योंकि शरदऋतु में पेड़ अपने पत्ते नहीं झड़ाता। कार्कओक्, आलिव, लारेल आदि पेड़ यहाँ फलते हैं ।



यूरोपियन वनस्पति

@KTBS DO NOT BE REPUBLISHED

5. घास का मैदान : दक्षिण भाग के पत्ते झड़नेवाले जंगल में दिखाई देती है। उदा - हंगेरी, बल्गेरिया, रुमेनिया तथा यूरोपियन रुस। यह विरल पेड़ तथा घास से भरा स्टेप्पी वनस्पति है।

6. अल्पैन वनस्पति : यूरोप के दक्षिण भाग के ऊँचे पर्वत भागों में बँटा है। उदा - आल्प्स, पिरनिस, बाल्कन, कार्पेथिन तथा डिनारिक पर्वत ।

4. कृषि, पशुपालन तथा मत्स्यपालन :

कृषि : यूरोप में औद्यगिकरण के उपरांत यह मुख्य पेशा बनकर रहा है। यह महाद्वीप विशाल समतल, उपजाऊ भूमि तथा उत्तम सींचाई पाने में लाभदायक यहाँ का जलवायु भी कृषि (खेती) के लिए योग्य है।

स्केंडिनेवियन देशों को छोड़कर यूरोप के अधिकांश देश अपने विस्तार के 50 प्रतिशत से भी अधिक भाग खेती में लगे हैं। यूरोप का भू स्वामित्व लग-भग 10 हेक्टर है।

पश्चिमी यूरोप के देशों में मिश्रकृषि पद्धति जारी है। इसमें फसलों की खेती तथा जानवरों का पालन दोनों हैं। यहाँ कृषि भूमि का उपयोग जानवरों के लिए चारा उगाने, कुक्कुटपालन, शुकरपालन, विविध फल तथा सब्जी उगाने के लिए उपयोग किया जाता है।

भू-मध्यरेखीय जलवायु वाले दक्षिण यूरोप का व्यवसाय भिन्न है। यहाँ एकदल धान्यफसल, फल-सब्जी का व्यवसाय तथा जानवर पालन से युक्त है।

विशाल बाजार पर अवलंबित विशेष नमूने की खेती का विकास हुआ है। अधिक जनघनत्व से युक्त नगर प्रदेशों के निकटवर्ती के भागों में वाणिज्य तथा उत्तम संघटित व्यवसाय दिखाई देता है। कुल मिलाकर यूरोप की आबादी का 10 प्रतिशत से भी कम भाग व्यवसाय से जुड़ा है।

बाह्य (सतही) लक्षण, मिट्टी, जलवायु, बाजार और कृषि मजदूर प्राप्त वस्तु के आधार पर यूरोप के विविध भागों में विविध प्रकार की फसलें उगाते हैं।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

गेहूँ यूरोप की प्रमुख खाद्य फसल है। पेरिस का मैदान, यूरोप के महामैदान, हंगेरी मैदान, ढ़लाऊ मैदानी देश तथा इटली की 'पो नदीं' का मैदान यूरोप का प्रमुख गेहूँ उत्पादक प्रदेश हैं।

मक्का यूरोप की दूसरी प्रमुख एकदल धान्य फसल है। फ्रान्स, इटली, हंगेरी, जर्मनी तथा स्पेन प्रमुख मक्का उत्पादक देश हैं। 'रै' एक अन्य खाद्य फसल है। इसे अधिकतर ब्रेड तथा मद्य तैयार करने में उपयोग किया जाता है। पोलैंड, जर्मनी, चेक तथा स्लोवेकिया गणतंत्र प्रमुख रै उत्पादक देश हैं। बार्ली उत्पादन में भी यूरोप प्रमुख है। खाद्य फसलों, पशुओं का खाद्य तथा मद्य तैयार करने में इसका उपयोग किया जाता है। कुछ प्रदेशों में ओट्स उपजाया जाता है। धान अल्प प्रमाण में उपजाया जाता है। यह ग्रीष्म कालीन फसल है।

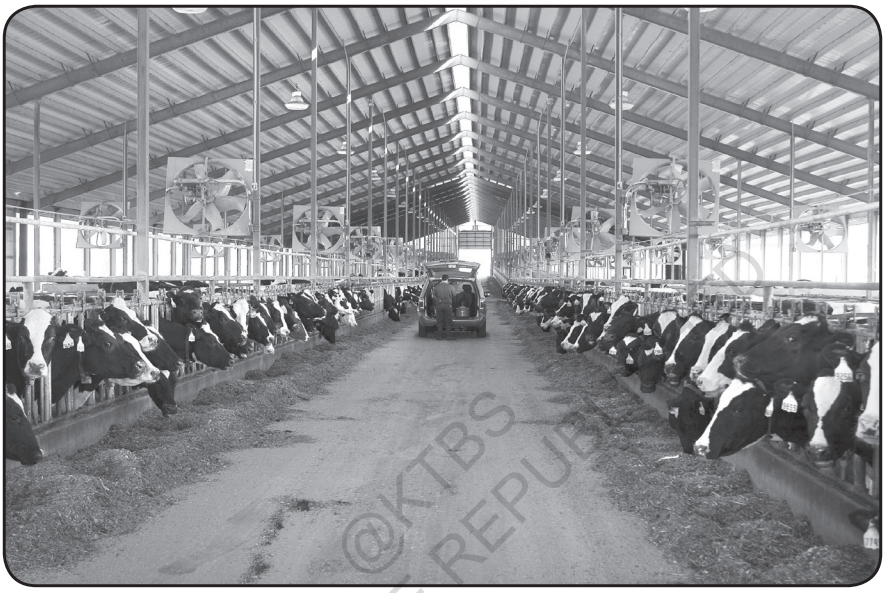
शकरकंद तथा आलू यूरोप की दो प्रमुख कंदमूल फसलें हैं। शकरकंद चीनी तैयार करने तथा पशु खाद्य के रूप में उपयोग किया जाता है। आलू अधिकतया केंद्र तथा पूर्व यूरोपीय मैदानों में उपजाया जाता है। यूरोप संसार में ही अत्याधिक आलू उत्पादन करता है। (flax) 'सन' यूरोप की प्रमुख रेशेदार फसल है।

यूरोप के पहाड़ों की ढ़लान पर अंगूर, सेब, अंजीर, नारंगी, नींबू, आलुबुकारा (Plum), अनार, आहबलूत (चेस्टनट) कई फलों की कृषि की जाती हैं। दिखाई देते हैं । बल्गेरिया गुलाब के फूल, सब्जी तथा बगीचे की कृषि के लिए प्रसिद्ध है।

दुग्धउद्यम : यह यूरोप की मिश्र कृषि पद्धति में अत्युत्तम व्यवस्थित उद्योग है। यहाँ की बर्फीली नमीयुक्त जलवायु, अधिक जनघनत्व वाले नगर, सुव्यवस्थित सडकें, रेल परिवहन सुविधा, अत्युत्तम जैविक तकनीकी का विकास, शैत्यागार, वाणिज्यिक नवीनतम दुग्धोद्यम में यांत्रिकरण तथा विपुल मात्रा में चारे की आपूर्ति यूरोप के दुग्धोद्यम विकास के लिए प्रेरणा स्रोत है।

© KTRS NOT TO BE REPUBLISHED

डेन्मार्क, नेदरलैंड्स, स्विटजरलैंड, जर्मनी तथा ब्रिटेन में दुग्धोद्यम का अधिक विकास हुआ है। लेकिन डेन्मार्क अत्यंत प्रमुख है। यूरोप के देश अपने दुग्धोद्यम के वस्तुओं का निर्यात करते हैं। उदा: मक्खन, पनीर सांद्रीकृत दूध, चाकलेट आदि।



यूरोप का दुग्ध व्यवसाय

मछली पालन : इतिहास गवाह है कि यूरोप का मछली पालन अपने आहार की आर्थिकता का आधार है। कम गहराई वाले समुद्री भागों में मछली पालन होता है। प्रमुख मछली पालन पश्चिमोत्तर यूरोप में हैं। वे आर्कटिक वृत्त के उत्तरी भाग से भू-मध्यसागर तक फैले हैं। उत्तरी समुद्र अत्यधिक मछली पालन का प्रदेश है। उसमें नार्वे, ब्रिटेन, डेन्मार्क, स्वीडन तथा जर्मनी प्रमुख हैं। डागरबैंक तथा ग्रेट फिशर बैंक प्रदेश उत्तरी समुद्र के दो प्रसिद्ध मछली पालन के केंद्र हैं। नार्वे के लोग मछली पालन में परिणत हैं।

सील तथा तिमिंगिल (व्हेल) ध्रुवीय प्रदेशों में पकड़े जाते हैं। नार्वे अत्यधिक मछली उत्पादन तथा निर्यात करने वाला देश हैं। कृषि भूमि तथा खाद्यपसलों की कमी के कारण यूरोप में मछली पालन का विकास हुआ है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



यूरोप के मछली पालन का क्षेत्र

5. खनिज :

खनिज : यूरोप महाद्वीप में अनेक तरह के खनिज तथा शक्ति संसाधन प्राप्त होते हैं ।

इस महाद्वीप में अधिकतया मेगनेट लौह का उत्पादन होता है। यूरोप के अधिकांश देशों में मेगनेट लौह का वितरण है। संसार का 5 प्रतिशत मेगनेट लौह निक्षेप इस महाद्वीप में है। फ्रान्स, जर्मनी, ब्रिटेन तथा स्वीडन इसके प्रमुख उत्पादक के देश हैं।

बल्गेरिया तथा पोलैंड प्रमुख ताँबा उत्पादक देश हैं। यूरोप में पेट्रोलियम तथा प्रकृतिक गैस के बहुत कम प्रमुख पेट्रोलियम उत्पादक विभाग हैं- उत्तरी समुद्र, फ्रान्स, इटली, नेदरलैंड तथा जर्मनी ।

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS



प्रमुख खनिजों का वितरण

कोयला यूरोप की प्रमुख विद्युत् शक्ति का संसाधन है। स्केडिनेविया तथा भू-मध्यरेखीया देशों के अलावा इस पूरे महाद्वीप में कोयला निक्षेप का वितरण है। उच्चश्रेणी का बिटुमिनस कोयला यूरोपियन रुस, जर्मनी तथा ब्रिटेन में पाया जाता है। कुछ ओर बाक्सैट तथा पोट्यास भी उपलब्ध है।

प्रमुख (औद्योगिक) उद्योग :

लोहा तथा इस्पात उद्योग : आधुनिक युग लोहा तथा इस्पात का युग है। यह बड़े पैमाने का उद्योग होते हुए भी कई उपउद्योगों के लिए आवश्यक लोहे तथा इस्पात का उत्पादन करता है। लोहा तथा इस्पात उत्पादन के प्रमुख देश हैं- 1) जर्मनी के रोर, सार, वेसर नदी के मैदानी प्रदेश तथा बर्लिन प्रदेश। 2) ब्रिटेन के ब्लाक कंट्री, शेफिल्ड, पूर्वोत्तर तटवर्ती भाग तथा वेल्स प्रदेश। 3) फ्रान्स के लूरेन्स, पश्चिमोत्तर और पूर्वसीमा के प्रदेश, पोलैंड के सैलीसिया इटली की पो नदी घाटी तथा लोंबार्डी का मैदान ।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

सूत कपड़ा उद्योग : यूरोपों में भी अनेक कृषि आधारित उद्योगों का विकास हुआ है। उनमें सूत कपड़ा उद्योग भी एक है। पूरे यूरोप भर में कपास की मिलें हैं। कच्चा कपास, विदेश से निर्यात किया जाता है। ब्रिटेन आधुनिक सूत कपड़ा उद्योग का उगमस्थल है। यहाँ का लंकाशैर, चेशैर, डर्बिसैर प्रमुख कपास मिलों के केंद्र हैं। जर्मनी तथा फ्रान्स अन्य प्रमुख सूत कपड़ा वस्तुएँ उत्पादक देश हैं ।

उत्तम श्रेणी के रेशम, ऊनी कपड़े तथा कृत्रिम रेशों के कपड़े के लिए ब्रिटेन, फ्रान्स, बेल्जियम तथा इटली प्रसिद्ध हैं।

जहाज निर्माण उद्योग : यह एक बड़े पैमाने पर इंजिनियरिंग तथा विशेषतः जोडने का उद्योग है। तकनीकी प्रगति, उत्तम बंदरगाहों की सुविधा, उद्योग प्रगति आदि इस उद्योग के विकास के लिए प्रेरकतत्व हैं। यूरोप में जर्मनी एक प्रमुख जहाज निर्माण का देश है। स्वीडन्, ब्रिटेन तथा फ्रान्स यूरोप के अन्य जहाज निर्माण के देश हैं।

स्वयंचालित वाहन उद्योग : यह कॉर, ट्रक, बस, स्कूटर आदि तथा मोटर इंजन की सहायता से चलनेवाले किसी भी अन्य वाहन को तैयार करने का उद्योग है। यह एक जोड़ने का उद्योग है। अत्युत्तम तांत्रिक तथा खर्चीला उद्योग है। जर्मनी, फ्रॉन्स, इटली तथा ब्रिटेन यूरोप के प्रमुख स्वयंचालित वाहन उद्योगवाले देश हैं।

@KTRS NOT TO BE REPUBLISHED

6. यूरोप के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश

यूरोप का प्रमुख उद्योग तथा औद्योगिक केंद्र एक तरह से त्रिकोणरूप में केंद्रीकृत है। इसे यूरोप का औद्योगिक हृदय कहलाता है। यह त्रिकोण, उत्तरी समुद्र से पोलैंड के मध्यभाग के तथा दक्षिण के इटली की 'पो' नदी घाटी से उत्तर के स्वीडन तक फैला है। यूरोप के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र इस प्रकार हैं।

यूरोप के प्रमुख औध्योगिक क्षेत्र निम्मलिखित हैं-

1. ब्रिटेन औद्योगिक क्षेत्र
2. पश्चिम त्रिकोण औद्योगिक क्षेत्र ।
3. पेरिस औद्योगिक क्षेत्र, इसे फ्रान्स का 'औद्योगिक हृदय' कहते हैं ।
4. रैन, सार औद्योगिक क्षेत्र ।
5. ह्वैन नदी का ऊपरी घाटी क्षेत्र ।
6. सैलेसिया का ऊपरी घाटी क्षेत्र ।
7. दक्षिण के स्कैंडिनेविया क्षेत्र में स्टाकहोम भी शामिल है।
8. पूर्वी जर्मनी से पूर्वोत्तर चेक और स्लोवेकिया क्षेत्र ।
9. उत्तरी इटली के औद्योगिक क्षेत्र में पो नदी का मैदानी प्रदेश ।

7. जनसंख्या

यूरोप के भौगोलिक क्षेत्र की तुलना में उसकी जनसंख्या अधिक ही है। यूरोप में रुस को छोड़कर संसार का 11% प्रतिशत भाग आता है। लेकिन यहाँ संसार के पाँचवे एक भाग की जनसंख्या है। उसकी कुल जनसंख्या 742 मिलियन (2023) है। इसमें नगर की जनसंख्या अधिक है ।

वितरण : यूरोप में जनसंख्या वितरण असमान है। जर्मनी, ब्रिटेन, इटली तथा फ्रान्स यूरोप के जनभरित देश हैं। पश्चिमोत्तर यूरोप में जनघनत्व कम है। आल्प्स, ककासस, अर्धशुष्क प्रदेश दक्षिण-पूर्वी यूरोप के भाग में भी जनघनत्व कम है ।

यूरोप के अधिक जनघनत्व के देश हैं- बेल्जियम्, लक्षमवर्ग, नेदरलैंड्स आदि। औद्योगिकरण, परिवहन सुविधा, प्राकृतिक संसाधन तथा तकनीकी की प्रगति इसका कारण है।

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS

विकास: यूरोप के अधिकांश देश कम तथा घटती जनसंख्या विकास के लक्षणों से युक्त है। जनसंख्या विकास एक स्थान से दूसरे स्थान में बदलता है।

स्थानांतरण : पिछले 200 वर्षों में यूरोपियन अन्य देशों को स्थानांतरित हुए हैं। तथा अनेक कारणों से अन्य देशों के लोग यूरोप की ओर स्थानांतरित होकर वहीं बसे हैं ।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लोग विविध महाद्वीप तथा देशों से ब्रिटेन की ओर आंतरिक स्थानांतरित हुए। उनमें अधिकतम इटलीवासी हैं ।



जनघनत्व

द्वितीय विश्व युद्ध के पहले ही जर्मनी के लोग अन्य देशों में स्थानांतरित हुए थे। पोलैंड, रूमेनिया, हंगेरी, चेक, स्लोवेकिया तथा युगोस्लाविया में जर्मन लोग अल्पसंख्यक दिखाई देते हैं।

© SCERT NOT TO BE REPUBLISHED

जनघनत्व : यूरोप में जनघनत्व विविधता पूर्ण है। अत्यधिक विकसित नेदरलैंड में प्रति वर्ग कि.मी 950 लोग थे तो ऐसलैंड में यह प्रति वर्ग कि.मी में केवल 3 लोग वास रहते थे। उत्तरी यूरोप के ढलाऊँ प्रदेश में अत्यधिक जनघनत्व है ।

यूरोप के अत्यधिक जनघनत्व के प्रदेश हैं - औद्योगिक जिले, बेल्जियम, जर्मनी का कोयल प्रदेश, ग्रेटर लंदन, नेदरलैंड्स, रैन नदी के मैदानी प्रदेश, उत्तरी इटली तथा स्पेन के तटवर्ती प्रदेश ।

न्यनतम जनघनत्व के प्रदेश हैं - मध्य फ्रॉन्स, पर्वतमय प्रदेश, बल्कन क्षेत्र तथा स्काटलैंड का उन्नत भाग ।

नये शब्द :

आल्पैन, आल्प्स, स्वयंचालित वाहन उत्पादन, सनजूट, कुहरा-परतदार पर्वत, सागरीय जलवायु, मासिफ, मेसेट, स्थानांतरण, प्रायद्वीप, सागवानी, कपड़ा वस्तोध्यम, रै (सरसो)।

ज्ञात रहे :

1. स्केडिनेविया उत्तरी यूरोप का भाग है, जिसमें नार्वे, स्वीडन तथा फिनलैंड शामिल है।
2. ब्रिटेन या ग्रेट ब्रिटेन, यूरोप का अत्यंत बड़ा द्वीप होते हुए भी इंग्लैंड, स्काटलैंडू तथा वेल्स से आवृत्त है। उत्तरी आयरलैंड (ऐरलैंड) को मिलाकर यह संयुक्त राज्य (यु.के) बना है।
3. लगभग 500 वर्ष से भी अधिक समय यूरोप को संसार का हृदय भाग कहा जाता था।
4. ब्लाक फारेस्ट नामक वन नहीं, वह एक पर्वतीय प्रदेश है। यह दक्षिण जर्मनी में है। इसका आंतरिक भाग घने वन से अंधेरा होने के कारण इसे यह नाम आया है ।

@KSBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्द से भरिए :

1. यूरोप को एशिया का एक ———————— द्वीप है ।
2. यूरोप का सबसे प्रमुख पर्वत ———————— है ।
3. यूरोप की जलवायु को प्रभावित करने वाली बाढ़ ———————— है।
4. यूरोप की प्रमुख फसल है ———————— ।

समूह में चर्चा द्वारा उत्तर लिखिए :

5. यूरोप के भौगोलिक स्थान बताइए ।
6. यूरोप के प्राकृतिक विभाग बताइए ।
7. यूरोप के प्रमुख जलवायु प्रदेश कौन-कौन से हैं ?
8. यूरोप के प्रमुख प्राकृतिक वनस्पति के प्रकार बताइए ।
9. यूरोप के प्रसिद्ध (प्रमुख) दुग्दोध्यम के देशों के नाम बताइए ।
10. यूरोप की प्रमुख खाद्य फसलें कौन-कौन सी हैं ।
11. यूरोप के प्रमुख मछली पालन का क्षेत्र बताइए ।
12. यूरोप के प्रमुख खनिज कौन-कौन से हैं?

NOT TO BE REPUBLISHED © MTDS

गतिविधियाँ

1. मानचित्र में यूरोप के मुख्य प्राकृतिक विभाग पहचानना ।
2. अपने अध्यापक की सहायता से यूरोप के प्रमुख पर्वत तथा शिखर पहचानना।
3. अपने आवासस्थान के आसपास देखिए तथा वहाँ के भूस्वरूप, वनस्पति तथा फसलों की सूची तैयार कीजिए ।
4. यूरोप के नक्शे में राष्ट्रों की राजधानी पहचानिए। पर्यटन केंद्र तथा औद्योगिक प्रदेशों को पहचानिए ।

अध्याय 24 अफ्रिका

P8S8G2

पाठ परिचय :

इस पाठ में आप अफ्रिका के भौगोलिक स्थान, विस्तार तथा भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक लक्षण, नदी व्यवस्था, जलवायु तथा स्वाभाविक वनस्पति, प्राणिसंपदा, कृषि, उद्योग, कीमती खनिज, जनसंख्या वृद्धि, वितरण तथा जनसंख्या घनत्व के बारे में जानेंगे।

सामर्थ्य

1. अफ्रिका महाद्वीप का स्थान, विस्तार, भौगोलिक स्थिति तथा प्राकृतिक लक्षणों को जानना।
2. अफ्रिका नदी व्यवस्था, जलवायु तथा उसके प्रदेश, स्वाभविक वनस्पति तथा प्राणिसंपदा के बारे में जानना।
3. कृषि, उद्योग तथा कीमती खनिजों बारे में जानना।
4. आफ्रिका की जमसंख्या अभिवृध्दि, वितरण तथा जनघनत्व के बारे में जानना।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

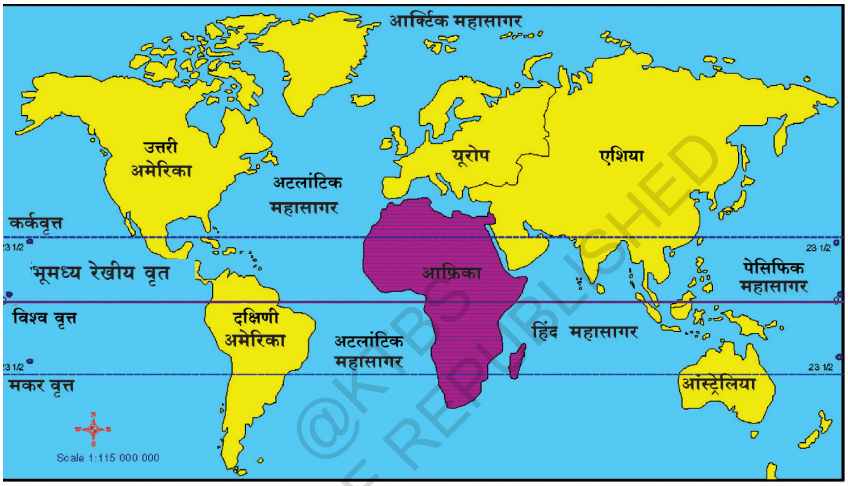
भूमिका : अफ्रिका महाद्वीप एशिया के पश्चात विश्व का द्वितीय सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है। अब तक के वर्षों तक अफ्रिका महाद्वीप को अंधकार का महाद्वीप कहा जाता था। इसका कारण यहाँ के लोगों का काला होना नहीं, बल्कि उसकी पठार समुद्री किनारे तक विस्तृत होना तथा उत्तर में सहारा मरुस्थल का होना है और वह अन्य जगत से काफी दीर्घ काल तक शोध न होने के कारण बचा था। अफ्रिका महाद्वीप में 54 देश है।

1. स्थान, विस्तार तथा भौगोलिक स्थिति

स्थान : अफ्रिका महाद्वीप 37^0 उत्तर तथा 35^0 दक्षिण अक्षांश तथा 17^0 पश्चिम तथा 50^0 पूर्व रेखांश के बीच स्थित है। अफ्रिका के पश्चिमी भाग में प्रधान रेखांश उत्तर-दक्षिण होकर गुजरता है। विशेषता यह है कि इस महाद्वीप में कर्क

वृत्त तथा मकर वृत्त दोनों ही गुजरते हैं। भूमध्य रेखा लगभग इस महाद्वीप के मध्य भाग में होकर गुजरते हैं। इसलिए इसे 'केन्द्रीय महाद्वीप' कहा जाता है।

विस्तार : अफ्रिका का कुल विस्तार 30.4 मिलियन क्षेत्रफल कि.मी है। यह दक्षिणोत्तर में 8000 कि.मी. लम्बा तथा पूर्व-पश्चिम में 7400 कि.मी. चौड़ा है। आल्-घिरम् (ट्यूनिसिया) अफ्रिका का उत्तरी छोर है, तो अगुल्हास (दक्षिण अफ्रिका) भूशिर दक्षिणी छोर है।



विश्व में अफ्रिका का स्थान

भौगोलिक स्थिति : अफ्रिका का अधिकांश भू भाग किसी न किसी समुद्र या महासागर से घिरा हुआ है। यह उत्तर में भूमध्य सागर, पश्चिम में अटलांटिक सागर, पूर्व में लाल सागर तथा हिन्द सागर से घिरा है। पहले इस महाद्वीप का उत्तर-पूर्वी भाग सिना प्रायः द्वीप से एशिया के साथ जुड़ा था, अब वह सुवेज नहर से अलग हो गया है। जिब्राल्टर जलसंधि से यूरोप महाद्वीप तथा लाल सागर से अरेविया प्रायद्वीप, अफ्रिका से अलग है। संधि अफ्रिका महाद्वीप का समुद्री किनारा 30,500 कि.मी. लम्बा है।

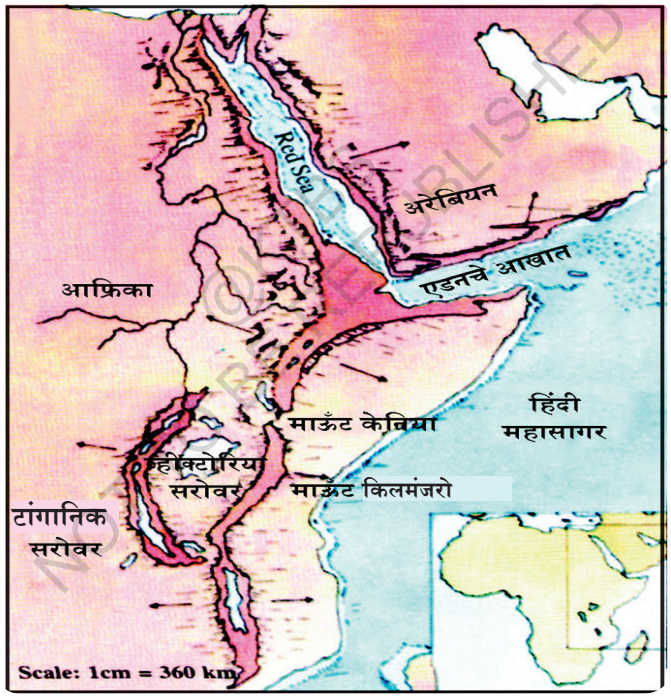
NOT TO BE REPUBLISHED @KSEEB



अफ्रिका का स्थान तथा भौगोलिक परिस्थिति

2. प्राकृतिक विशेषताएँ

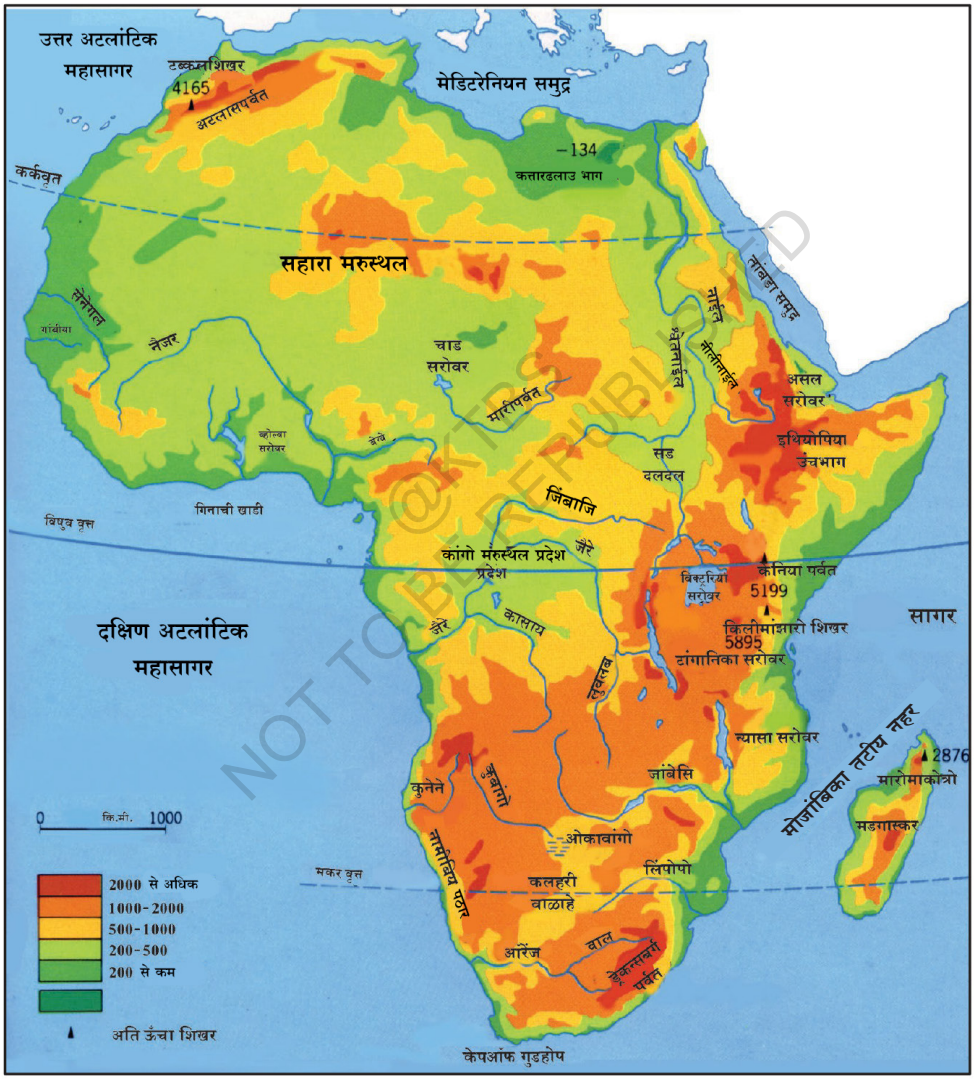
अफ्रिका महाद्वीप की प्राकृतिक उसकी आंतरिक रचना का प्रतिबिंब है। सम्पूर्ण महाद्वीप को ही विशाल पठार के रूप में माना गया है। वह प्राचीन स्फटिक शिलाओं से रचित है। वह लघु समुद्री किनारे से अंत में पठार के रूप में खड़ा है। इस कारण इस महाद्वीप के आंतरिक प्रदेश में प्रवेश करना कठिन है। पठार दक्षिण-पूर्वी भाग में ऊँची तथा उत्तर-पूर्वी भाग में ढलाऊ बनी है। अफ्रिका महाद्वीप को उसके विस्तार से तुलना करने पर वह अन्य महाद्वीपों से कम ऊँचे पर्वत तथा मिचले मैदानों से युक्त है।



महाफटी घाटी

अफ्रिका का समुद्री किनारा लगभग सीधा है। वह कुछ ही बड़े निचले मैदान, स्वाभाविक बंदरगाह, ज्वार नदीमुख से युक्त है। वहाँ कोई खाडी (Bay) तथा आंतरिक फैलाव नहीं है। इसके अलावा समुद्री किनारे का भीतरी भाग गहराई से कटा हुआ है।

महाफटी घाटी : दो सामान्य स्तरभंग अथवा दो ढलाऊँ भू-भाग धँस जाने से निर्माण होने वाली सपाट थल वाली घाटी को 'फटी घाटी' कहते हैं। अफ्रिका की महाफटी घाटी काफी लम्बी (6900 कि.मी.) है। इस कारण इसे महाफटी घाटी कहते हैं।



आफ्रिका की प्राकृतिक विशेषताएँ

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS

अंग्रेजी के अक्षर Y आकार में अति बड़ी पटी नहर अफ्रिका महाद्वीप की स्पष्टतः दिखाई देनेवाला प्रकृतिक विशेषता है। यह दक्षिण के मोजांबिक से प्रारंभ होकर मालवी, तांजीनिया, कीन्या तथा इथियोपिया से होकर लाल सागर तक फैली है। वहाँ से आक्युबा खाड़ी, मृत समुद्र तथा गालिली समुद्र से होते हुए जोर्डान के सिरिया खाई में अंत होती है।.

अफ्रिका के ढलाऊ प्रदेश : अफ्रिका में पाँच ढलान (निचला) प्रदेश हैं। उनका विवरण निम्नलिखित है-

1. **सुड़ान के ढलाऊ प्रदेश :** यह सफेद तथा नील नैल नदियों के बहने का प्रदेश। विश्व में ही अति विस्तार वाली इस भूमि को सूड़ (**Sudd**) कहते हैं।

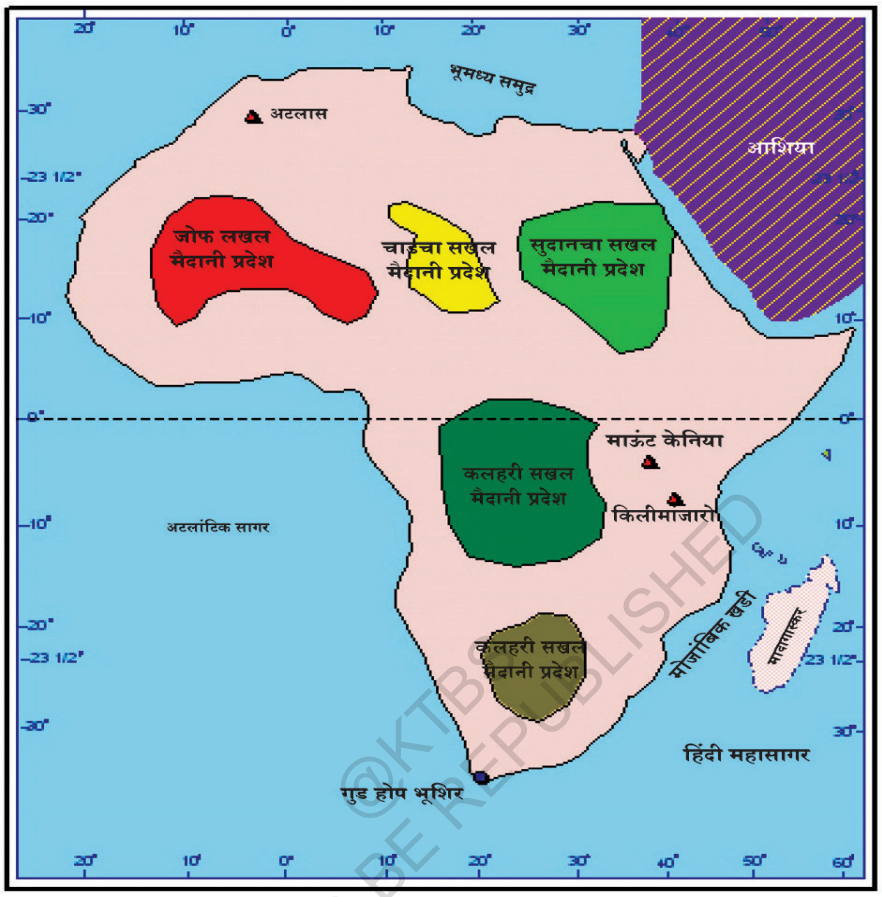
2. **चाड़ के ढलाऊ प्रदेश :** यह चाड़ सरोवर से आवृत्त है। यह गीले भू-भाग है। तरह है, यह सहारा मरुस्थल से आवृत्त है।

3. **जोफ (Djout) ढलाऊ प्रदेश:** यह सहारा मरुस्थल के पश्चिम भाग से युक्त है तथा मारिटानिसमाली सीमा के सुदूर विस्तृत है। यहाँ से नैजर नदी बहती है।

4. **कांगो (जैरे) के ढलाऊ प्रदेश:** यह एक रचनात्मक भू-स्वरूप होने के साथ वह पठार से घिरा हुआ है। यहाँ काँगो तथा उसकी उप नदियाँ बहती हैं। यह एक वन प्रदेश है।

5. **कलहरी ढलाऊ प्रदेश:** यह अधिकतर मरुस्थल और स्टेप्पी घास वाला भाग है। यह पठारों से घिरा हुआ है।

©KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



आफ्रिका के ढलाऊ क्षेत्र

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

सरोवर : अफ्रिका महाद्वीप, आर्थिक सामर्थ्य को बढ़ाने वाले अनेक सरोवरों को प्राप्त किया है। उनमें आठ मुख्य हैं। पूर्व आफ्रिका में अति बड़े तथा गहरे सरोवर हैं। ये सभी साधारण फटी कंदराओं से सम्बन्ध रखते हैं। कही फटी कंदराओं के पश्चिम में अल्बर्ट, एडवर्ड, किवु टाँगानिका तथा न्यास सरोवर है। इसके अलावा फटी कंदरा के पूर्व में रुडोल्फ (टुर्कान) नटून और इयासी सरोवर है। टाँगनिका सरोवर गहराई. की दृष्टि में दुनिया के दूसरा बड़ा सरोवर है। इसकी गहराई 1436 मी. है। इसके फटी कंदरा के दोनों श्रेणियों के मध्य स्थित विक्टोरिया सरोवर



किलिमंजारो पर्वत

अफ्रिका का अति बड़ा सरोवर है। वह करीब 69,481 चौ. कि.मी. विस्तृत है। यहाँ से नील नदी का उगम होता है।

पर्वत : अफ्रिका महाद्वीप में कई पर्वत हैं। अफ्रिका के समतल मैदान को तोड़ने में यहाँ कुछ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। उनमें अटलास, ड्रेकेन्सबर्ग पर्वत तथा किलिमांजरो पर्वत श्रेणियाँ प्रमुख हैं।

अटलास श्रेणी : ये हमारे भारत के हिमालय पर्वत की तरह ही परतदार या मोड़दार पर्वत हैं। ये दक्षिण यूरोप के पर्वतों का अगला भाग है। माउन्ट टाब्कास ऊँची चोटी है। अटलास श्रेणियाँ अल्जीरिया, मोराको तथा ट्यूनीशिया में फैली हैं।

ड्रेकेन्स बर्ग पर्वत श्रेणी : ये अफ्रिका के दक्षिण-पूर्वी समुद्री किनारे भर फैले हैं। ये नाममात्र के पर्वत है। ये पठारों के तिरछे तट हैं।

किलिमंजारो पर्वत : ये पर्वत श्रेणियाँ अफ्रिका के पूर्वभाग में है। इसमें अफ्रिका के अत्यन्त उन्नत शिखर है। उसकी ऊँचाई 5,895 मीटर है। यह भूमध्य रेखा के नजदीक होते हुए भी इसका शिखर सदा हिमाच्छादित रहता है। इसका कारण उसकी ऊँचाई है।

उपर्युक्त के अलावा आहाग्गार, टिबेस्टी, रुवेन्ज़ोरी केप श्रेणी तथा पूर्व अफ्रिका श्रेणियाँ आदि अफ्रिका के अन्य पर्वत हैं।

अफ्रिका का अत्यंत ऊँचा शिखर किलिमंजारो तथा अत्यंत निचला प्रदेश असल (जिबौति) सरोवर है।

सूयेज थलसंधि : दो विशाल भूभागों को जोड़ने और दो जलराशियों को अलग करने वाला लघु भूभाग ही 'भूडमरुमध्य भूमि या थलसंधि' है। सूयेज थल संधि या भूडमरुमध्य भूमि सुप्रसिध्द है ।

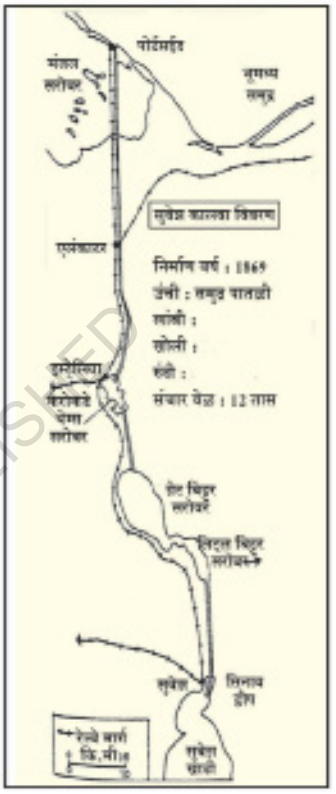
सुयेज थलसंधि या भूडमरुमध्य भूमि भूमध्यसागर तथा लाल सागर के बीचवाला लघु भूभाग है। वह अफ्रिका तथा एशिया महाद्वीप को जोड़ता है। प्रस्तुत अफ्रिका महाद्वीप के देशों में एक देश में ये थलसंधि भाग मिला हुआ है तथा अफ्रिका के उत्तर-पूर्वी भाग में है। उसे सूयेज नहर निर्माण करने के लिए

@KAPS NOT TO BE REPUBLISHED

खोदा गया है। यह नहर असाधारण मानव निर्मित था। वह भुमध्य सागर व लाल सागर से सम्पर्क जोडता है। यह विश्व में अधिक जहाज संचार का प्रमुख सागर मार्ग है और यूरोप तथा एशिया को कम अन्तर से सम्पर्क करता है।



सुयेज भूडमरुमध्य या थलसंधि



सुयेज नहर

© KRS NOT TO BE REPUBLISHED

3. जल संसाधन

अफ्रिका की नदियाँ :

अफ्रिका की नदियाँ अपनी ही कुछ विशेषताओं से युक्त हैं। अधिकांश नदियों ने अपनी सतह पर गहरी कंदराओं का निर्माण किया है। जलप्रपात, तेजी से बहते हैं। ये ऋतुमान की वर्षा के वितरण फलस्वरुप ऋतुकालिक बहती है। नौकायान हेतु योग्य नहीं है। सर्वकालिक नदियाँ कम हैं। यहाँ अंतर्देशीय नदियाँ ही अधिक हैं।

अफ्रिका महाद्वीप में चार प्रमुख नदियाँ है। वे हैं-नील, कांगो (जैरे), नैजर तथा जाम्बेजी । अफ्रिका की अन्य नदियाँ है सेनेगल, आरेंज तथा लिंपोपो ।

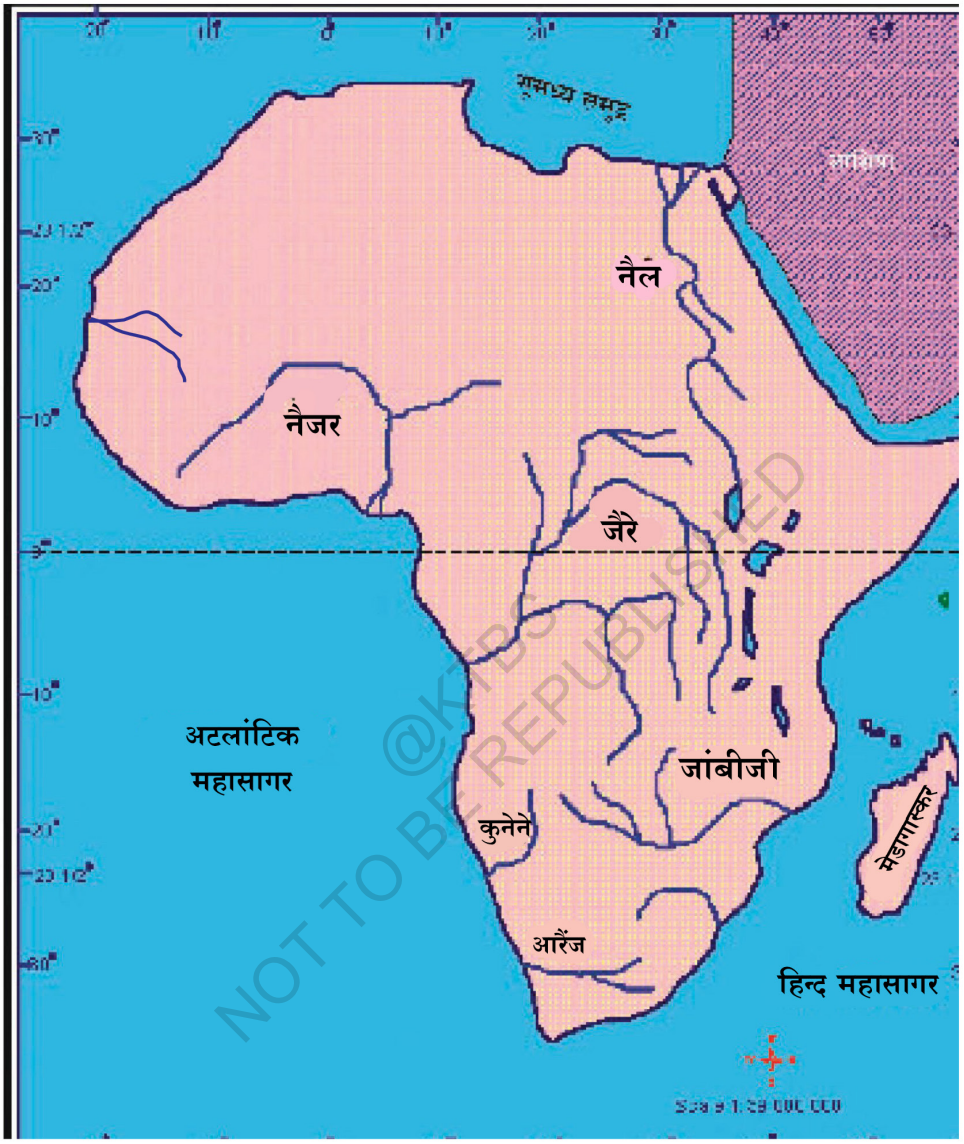
नीला नदी : नील नदी संसार की अत्यन्त लबीं नदीं है। यह 6,650 कि.मी बहती है। जो विक्टोरिया सरोवर में उगम होकर सहारा मरुस्थल की ओर उत्तराभिमुख बहकर मेडिटरेनियन समुद्र में संगम होती है। नैल नदी का मैदानी प्रदेश अत्यंत उपजाऊ है। हजारों लोगों के जीवन के लिए सहायक है। लोग उसका पानी सींचाई के लिए उपयोग कर जीवन बिता रहे हैं। अल्-गजल नामक बायीं तट की उपनदी तथा सूबत, नीलीनैल तथा अट्टार नामक दायेंतट की उपनदियाँ हैं।

नीली नैल नदी थाना सरोवर में (इथोपिया) उगम होती है। तथा कार्टूम में सफ़ेद नैल नदी से (जुड़ती) मिलती। नैल नदी ने संसार में प्रसिद्ध मुहाने का निर्माण किया है। इस नदी पर निर्मित बाँधों में आस्वान बाँध बड़ा है।

काँगो नदी : काँगो या जैरे नदी अफ्रिका की दूसरी लंबी नदी है। आफ्रिका के लोग इस नदी को अनेक नामों से पुकारते हैं। इसके उगम स्थान में इस नदी को लुआपुला नाम से तथा सभी स्थानों में लुआलाब कहा जाता है।

काँगो नदी भूमध्य रेखा वृत्त के समीप उगम होकर पहले उत्तर में, बाद में पश्चिमी दक्षिण में 4640 कि.मी. दूर बहते अटलांटिक सागर से मिलती है। यह आफ्रिका के मध्यभाग में भूमध्य रेखा के अरण्यों के बीच बहती है। प्रसिद्ध लिविंग्सटन जलप्रपात का निर्माण करती है। लेकिन नदी का मुहाना नहीं है।

©KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



अफ्रिका की नदियाँ

नैजर नदी : यह अफ्रिका की तीसरी लंबी नदी है। यह नदी पश्चिम तटवर्ती के ऊंचे भाग में उगम होती है। यह भी अटलांटिक महासागर से मिलती है। यह वर्षभर बहनेवाली नदी नहीं है। इस की लंबाई 4000 कि.मी. है।

जांबेजी नदी : यह अफ्रिका की चौथी प्रमुख नदी है। यह अफ्रिका के दक्षिण भाग की महत्वपूर्ण नदी है। यह केंद्र अफ्रिका में उगम होकर दक्षिण-पर्व की ओर बहती है। हिन्दू महासागर से मिलती है। यह अपने पात्र की लंबाई में अधिक बाढ़ तथा जलप्रपातों का निर्माण करती है। उनमें अत्यंत विशिष्ट है विक्टोरिया जलप्रपात। यह नदी अनेक गहरी कंदराओं के जरिए बहती है। नदी की लंबाई 3500 कि.मी है।



विक्टोरिया जलप्रपात

सेनेगल नदी : यह गिनिया घौटा जाल्लौन पठार में उगम होती है। बाद में पश्चिमी - उत्तर की ओर लगभग 1640 कि.मी. बहकर, अंत में अटलांटिक सागर से मिलती है। मारिटानिया तथा सेनेगल प्रात्यों के बीच सीमा बनकर बहती है।

4. जलवायु, स्वाभाविक वन तथा प्राणि संपत्ति :

जलवायु : अत्यंत लंबा चौड़ा अफ्रिका महाद्वीप उत्तरार्ध गोल तथा दक्षिणार्धगोल में फैला है।

इसे केंद्रस्थान भूमहाद्वीप के नाम से जाना जाता है। इस भूमहाद्वीप के मध्यभाग में भूमध्य रेखा होकर गुजरती है। सूर्य की किरणें लंबवत प्रसारित होती हैं। इसलिए इस महाद्वीप में उष्णकटिबंधीत जलवायु है। साथ ही और भी अनेक अंश अफ्रिका के जलवायु पर प्रभाव डालते हैं ।

उदा: ऊँचे पर्वतों की कमी से सागरीय धाराएँ, पूर्व-पश्चिम में अधिक विस्तार तथा परिवेश। सहारा के पश्चिम के तट में लंबाई तक बहनेवाला (केनरी प्रवाह) तथा कलहरि के पश्चिम तटवर्ती में मिलकर बहनेवाला शीतसागर (बंग्वुला-प्रवाह) प्रवाह तटवर्ती की खाई प्रदेशों में मिले हुए भागों का उष्णांश कम करता है। दोनों शीत प्रवाह से अधिक आर्द्रता नहीं होती। लेकिन दक्षिण-पूर्वी तटवर्ती से मिलकर (जुड़कर) बहनेवाला मोसांबिक उष्णसागर का प्रवाह अधिक आर्द्रता लाने से बारिश लाता है।

@KTRS NOT TO BE REPUBLISHED

ऊँचे पर्वत न रहने से तथा जलवायु के अन्य विभाजकों की कमी यहाँ उष्णकटिबंधीय हवा की मुक्त बहाव की अनुमति देता है। इस प्रकार जलवायु में परिवर्तन को धीमा कर देता है।

अफ्रिका की जलवायु में वर्षा का बँटवारा महत्वपूर्ण पात्र रखता है। भूमध्य रेखा के समीप वर्षा अधिक होती है। इस प्रदेश में वार्षिक, अनुमानित वर्षा 200 से. मी. होती है तथा भूमध्य रेखा की ओर जाने पर कम होती है। सहारा, कलहरी तथा नमीबिया प्रदेशों में वर्षा केवल 15 से.मी होती है। फिर भी क्याम रून, अफ्रिका का अत्यंत शीत प्रदेश होने से 1016 से.मी वार्षिक वर्षा पाता है।

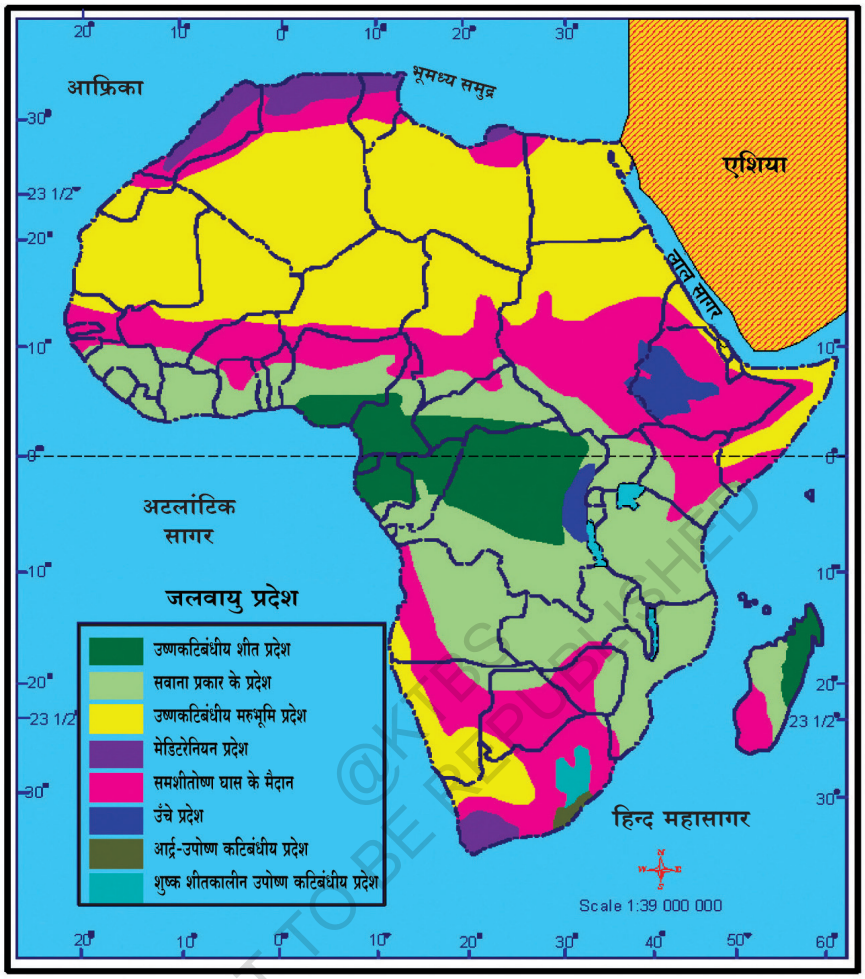
जलवायु के आधार पर अफ्रिका महाद्वीप को निम्नलिखित 8 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है:

1. भूमध्य रेखीय शीत प्रदेश
2. सवन्ना प्रकार के प्रदेश
3. उष्णकटिबंधीय मरुभूमि प्रदेश
4. मेडिटेरियन प्रदेश
5. समशीतोष्ण घास का मैदान
6. ऊंचे प्रदेश
7. आर्द्र-उप-उपोष्णकटिबंधीय प्रदेश
8. शुष्क शीतकालीन उपोष्णकटिबंधीय प्रदेश

1. भूमध्य रेखा के शीत प्रदेश : यह भूमध्य रेखा के दोनों तरफ फैला ढलाऊ प्रदेश तथा काँगो मैदान से गिनी प्रदेश तक फैला है। यहाँ का मौसम वर्ष भर बहुतगर्म और बारिश वाला होता है। यहाँ हमेशा दुपहर को वर्षा होती है। वह संवहनीय वर्षा है। बहुत गर्मी और आर्द्रता का यह मौसम हितकारी नहीं होता ।

2. सवन्ना प्रकार के मौसमी प्रदेश : यह सोमालिया, इथियोपिया, सुडान, चाड तथा नैजर प्रांत्य के भाग से आवृत्त है। इस प्रकार का मौसम अधिकतः सुडान में दिखाई देता है। इसे 'सुडानी मौसम' भी कहा जाता है। यहाँ उष्णांश अधिक रहता है। वह ढलाऊ प्रदेश से भी पूर्वभाग के ऊँचे प्रदेश में कम, ग्रीष्म ऋतु में अधिक वर्षा होती है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



आफ्रिका के जलवायु प्रदेश

NOT TO BE REPUBLISHED @KSEEB

3. उष्णकटिबंधीय रेगीस्तान प्रदेश : अफ्रिका महाद्वीप के उत्तर भाग तथा दक्षिण भागों में रेगीस्तान है। इस प्रदेश में ग्रीष्म अति उष्ण और शीतकाल ठंडा रहता है। ग्रीष्म तथा शीतकाल से भी दिन तथा रात के उष्णांश के वितरण में अधिक अंतर रहता है। बारिश बहुत कम होती है। आकाश में बादलों का बनना अत्यंत दुर्लभ है।

4. मेडिटरयिन प्रदेश : अफ्रिका महाद्वीप के उत्तरीय तटवर्ती प्रदेश तथा दक्षिण के किनारे भागों में ऐसे मौसम दिखाई देते हैं। इस प्रदेश में मोराको, उत्तर अल्जेरिया तथा केप प्राँत जुड़े हुए हैं। अति उष्ण तथा शुष्क ग्रीष्म तथा शीत और वर्षा युक्त शीतकाल इस मौसम के मुख्यलक्षण है। यही एक शीतकाल में वर्षा वाला जलवायु प्रदेश है।

5. समशीतोष्ण घास का मैदान : इसे उन्नत वेल्ड प्रदेश भी कहा गया है। डच भाषा में वेल्ड (Veldts) का अर्थ 'क्षेत्र' होता है। यह जलवायु प्रदेश दक्षिण अफ्रिका के आंतरिक प्रदेश में दिखाई देता है। यह समुद्र तट से दूर है। इससे शीतकाल तथा ग्रीष्मकाल के उष्णांश की मात्रा में अधिक अंतर रहता है। ग्रीष्म में तापमान अधिक तथा शीतकाल में ठंडा रहता है। इन दोनों में वर्षा की मात्रा कम होती है।

6. ऊँचे प्रदेश : इथोपिया का ऊँचाई भाग तथा पूर्व अफ्रिका का भाग है। समुद्री सतह से भी अधिक ऊँचे इस प्रदेश में शीतल मौसम रहता है। वर्षा का बँटवारा कम तथा यह ग्रीष्म में ही होती है।

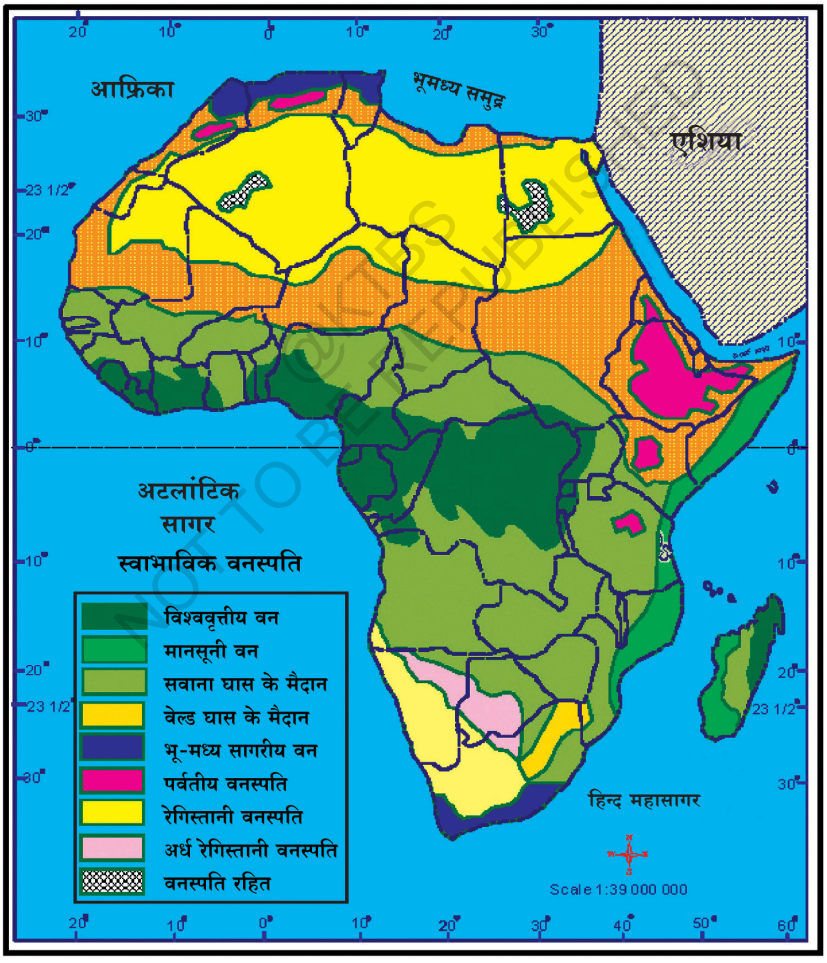
7. आर्द्र - उपोष्णकटिबंधीय प्रदेश : यह प्रदेश ड्रेकन्सबर्ग पर्वत भाग तथा मेडगास्कर द्वीप से युक्त पूर्व तट तक फैला है। यहाँ के मौसम में ग्रीष्म अधिक ताप तथा वर्षा युक्त होता है। तथा शीतकाल ठंडा तथा शुष्क होता है।

8. शुष्क शीतकालीन उपोष्णकटिबंधीय प्रदेश : यह अफ्रिका का दक्षिण-पूर्वी भाग से युक्त है। अधिक ताप तथा वर्षा होने के ग्रीष्म तथा सौम्य और शुष्क शीतकाल इस मौसम के लक्षण हैं। भूमध्य रेखीय प्रदेश की शुष्क जलवायु तरह वर्षा का वितरण यहाँ दिखाई देता है। लेकिन ऊंचे तथा घने बर्फ से उष्णांश के बंटवारे में परिवर्तन होता है।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

स्वाभाविक वनस्पति

अफ्रिका की स्वाभाविक वनस्पति में विविधता है। क्योंकि वनस्पति तथा प्राणिवर्ग पर जलवायु, मिट्टी, सतहीलक्षण तथा मानव के प्रदेशों के परस्पर पूरक प्रभाव-सीधा दिखाई देते हैं। इस महाद्वीप के अधिकांश भागों में वनस्पति का स्वरूप मानव की क्रियाओं से बदल गया। ज्यादातर अरण्य तथा घास मैदान विविध उद्देश्यों के लिए नाश किये गये तथा जलाये गये हैं। इस तरह अफ्रिका महाद्वीप की प्रस्तुत वनस्पति में सबकुछ 'स्वाभाविक नहीं' है।



स्वाभाविक वनस्पति

विशेष लक्षण युक्त प्रजाति के पेड़ यहाँ अधिक मात्रा में है। फिर भी उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के कीमती मजबूत पेड़ रबड, शीशम, बीटी, एबोनी, सिंकोन, सागवान, ताल, कालापेड आदि पालते हैं। मंग्रोव पौधे भी समुद्र की गहराई में मिलते हैं।

भूमध्य रेखा का अति उष्णांश तथा आर्द्रता युक्त मौसम वहाँ घने जंगल बढ़ने के कारक तत्व हैं। पेड़ ऊँचे उगते हैं। समभाजक वृत्त के हमेशा हरे भरे जंगल के लक्षण है वे चौड़े पत्तों वाले हैं तथा अप्पुसस्य (अधिसस्य) गुण वाले हैं ।



बेयोबाब पेड़

@KSEBS NOT TO BE REPUBLISHED

सदाबहार हमेशा हरे भरे भूमध्य रेखा के जंगलों से उत्तर तथा दक्षिण भागों में बबूल तथा बेयोबाब पेड़ों से आवृत्त सवन्ना के जंगल हैं। वर्षा कम होने के प्रदेश में सवन्ना जंगल कांटों की झाड़ी तथा घास के मैदान को मार्ग बनाते हैं।

कांटों की झाड़ियों तथा पैन, जुनिफर, कार्क, सिडार, अंजूर तथा आलीव के पेड मेडिटरेनियन जलवायु प्रदेश में दिखाई देते हैं।

प्रायाद्वीपीय ऊँचे भागों में वनस्पति तथा सहर और कलहरी भागों में मरुस्थलीय वनस्पति है। दक्षिण आफ्रिका के कर्रु भाग में प्रसिद्ध छोटे वनस्पति, नैलनदी मैदान में 'सड्' नामक विशेष वनस्पति है।

प्राणिसंपदा

आफ्रिका की प्राणि संपदा में बहुत विविधता है। यहाँ की जलवायु, ऊपरी लक्षण, जंगल, मिट्टी के प्रकार तथा एशिया और यूरोप महाद्वीपों के संपर्क इस तरह की प्राणि विविधता के कारण हैं। वर्षा जंगल प्रदेश अधिक प्राणियों का आवासस्थल है। चिंपाजी, अनेक तरह के बंदर, गोरिल्ला, जंगली भैंसे, चीता तथा खुर वाले प्राणि यहाँ दिखाई देते हैं।

मगरमच्छ तथा गैंडा नदियों तथा जलावृत्त जुताई योग्य प्रदेशों में दिखाई देते हैं, तो आकर्षक विविध रंगीन पक्षी यहाँ सामान्य हैं। उदा उष्ट्रपक्षी, गरुड़पक्षी, मीनरंक (Kingfisher) आदि।



प्रमुख वन्यजीव

जीब्रा, जंगली बिल्ली, जिराफ़, गैंडा, हाथी, इंपाल, चीता तथा आफ्रिकी सिंह उष्णकटिबंधीय घास के मैदान तथा सवन्ना प्रदेशों में दिखाई देते हैं।

मरुस्थल प्रदेश में बिच्छू, ऊँट, छिपकली, मरुस्थली सियार अनेक तरह के कीट दिखाई देते हैं। इसके साथ ही हिरन जाति के सुंदर प्राणी, गधा, घोड़ा तथा बारासिंगा (Addax) दिखाई देते हैं। ऊँट अधिक महत्वपूर्ण तथा सबसे परिचित मरुस्थल प्राणि है । इसे मरुस्थल के जहाज कहते हैं।





इंपाल व अड़ाक्ष

उष्ट्रपक्षी :

आफ्रिका का मूलवासी कलहरी मरुस्थल तथा आफ्रिका के दक्षिणी मैदान में दिखाई देता है। यह विश्व का जीवित सबसे बड़ा पक्षी है। विश्व में ही सबसे बड़ा अंडा देता है। यह उड़ नहीं पाता। लेकिन, अत्यंत तेजी से दौड़नेवाला पक्षी है। अपने पैरों पर दो अंगुलियों वाला विश्व का एकमात्रा पक्षी है।



© BSKTBS NOT TO BE REPUBLISHED

5. व्यवसाय तथा उद्यम

अफ्रिका के अधिकांश देशों में कृषि अधिक लोगों की प्रधान आर्थिक गतिविधि है। लगभग 75 प्रतिशत से भी अधिक लोग खेती से जुड़े हैं।

भूमध्य रेखीय प्रदेश के बजाय अफ्रिका के अधिकांश देशों में कृषि ही जीवनाधार पेशा है। ये आधुनिक रासायनिक खाद तथा कीटनाशकों का उपयोग बहुत कम करते हैं। अधिकतर प्रदेश में कृषि मानव परिश्रम से चलता है। हर हेक्टेर फसल भी एकदम कम निकलती है।

अधिकांश कृषि प्रदेशों में खाद्य फसलें महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। मक्का, धान, बाज्रा कंदमूल शकरकंद तथा मूंगफली, मटर तथा आटे की फसले प्रधान हैं। भूमध्य रेखीय क्षेत्र के जलवायु प्रदेश में वृक्षारोपण कृषि प्रमुख है। बुरुंडी प्रदेश-निर्यात के लिये कॉफी की फसल को, कोको फसल कोटे-डी-ओरे तथा घाना में भी तथा मटर जैसे दानों को ग्गंबिया देश में उपजाता है। अफ्रिका में उपजानेवाली अन्य फसलें हैं - केला, चाय, ईख, ताडतेल की फसल तथा नींबू जाति के फल। ये सब बड़े इस्टेट तथा सींचाई के व्यवसायों में उपजाया जाता है।

सेनेगल, मारिटानिया, माली, नैजर, चाड़, उत्तरदान इथियोपिया तथा सोमालिया देश अधिकतर अकाल के शिकार बनते हैं तथा वहाँ के लोग भूख से तड़पते हैं।

अफ्रिका विविध जाति के फलों के लिए प्रसिद्ध है। मेडिटेरियन प्रदेश में नींबू प्रजाती के फल जैवून, नींबू, नारंगी, अंगूर सामान्य हैं। पूर्व आफ्रिका में काजू उपजते हैं। जांजिबार द्वीप टाँटनिया तथा लौंग की फसल के लिए प्रसिद्ध है।

यहाँ मक्का को अधिक महत्व मिला है। थोड़े से प्रदेश में धान तथा ईख की फसलें उपजाती हैं। वाणिज्यिक फसलें कॉफी, ताड, मूंगफली को मध्य तथा पूर्व अफ्रिका के अन्य भागों में उपजती हैं। कॉफी इथोपिया में हजारों वर्षों से उपजाते हैं। ईजिप्ट देश सूत (कपास) फसल के लिए प्रसिद्ध है।

यूरोपियन बसे हुए कीन्या, दक्षिण आफ्रिका तथा जिंबाब्वे में गो पालन मुख्य उद्योग है। संसार की 15 प्रतिशत गायें अफ्रिका में ही हैं।

कृषि के पिछड़ने के कारण : अफ्रिका में कृषि पिछड़ने का कारण पुरानी कृषि पद्धति, जीवनोपाय कृषि की पद्धति, पुराने कृषि उपकरणों का उपयोग, अनक्षरता, जनजाति पद्धति, पूंजी तथा विदेशी पूंजी के निवेश की कमी आदि हैं।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

उद्यमों के धीमे विकास का कारण :

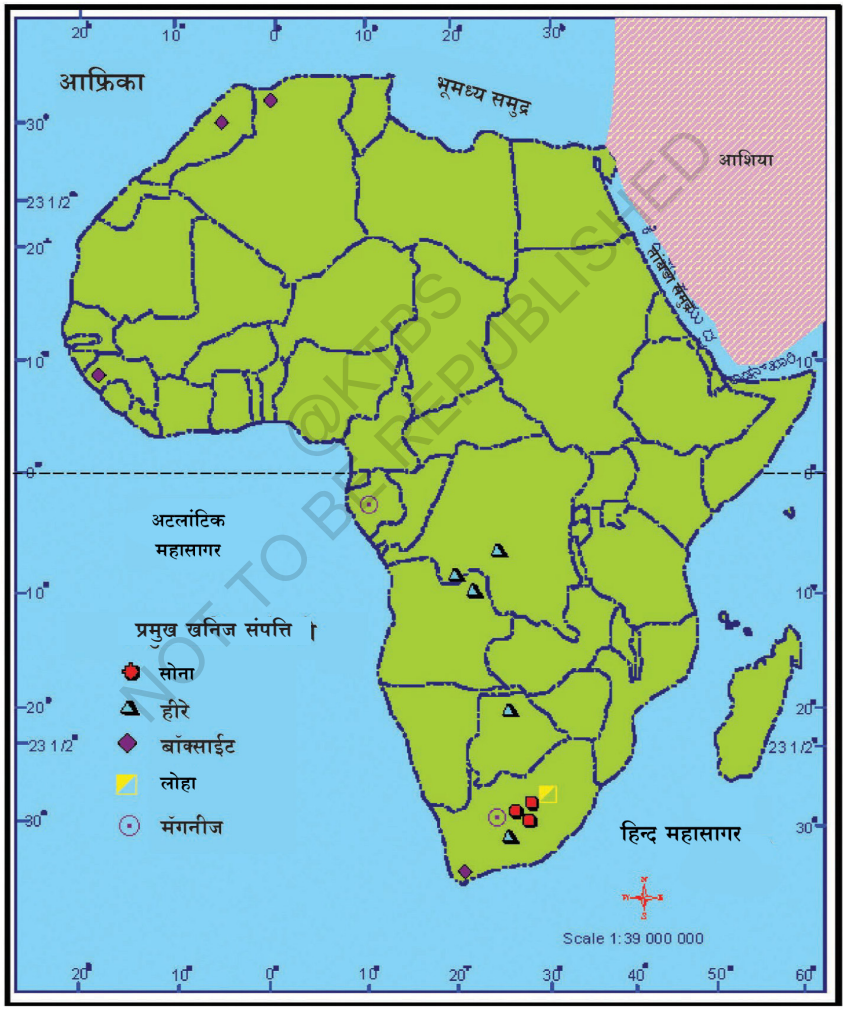
- अफ्रिका के अनेक देश पानी, जंगल तथा खनिज संपदा में समृद्ध है। यह स्वाभाविक संपदा का बँटवारा समान रूप से नहीं हुआ है। यहाँ के अधिकांश देशों की आर्थिकता कृषि पर अवलंबित गुणलक्षण पाया है।
- पिछली सदी के मध्यकाल तक अफ्रिका की स्वाभाविक संपदा यूरोपियन से लूट का शिकार बनती रही। इससे वहाँ की औद्योगिक प्रगति धीमी रही। इसके साथ औद्योगिकरण के लिए आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की कमी, तकनीकी की कमी, अनुभवी कर्मचारियों की कमी, कम खरीदने की शक्ति तथा राजनीतिक दुविधाएँ और पूंजी की कमी अफ्रिका देशों में मंदगति के औद्योगिक धीमे विकास के कारण हैं।
- पूर्व के कुछ दशकों में औद्योगिकरण के दौर से गुजरता देश है -जिंबाब्वे, नैजीरिया, इजिप्ट, अल्जीरिया तथा दक्षिण अफ्रिका। स्वतंत्रता के बाद अधिकांश अफ्रिका के देश छोटे औद्योगिक विकास में उत्साहित हैं। कपड़ा उद्यम, औषध तथा आहार संस्करण और पेय उद्यम विकसित हो रहे हैं।
- बृहत उद्यम् लोहा और इस्पात, सीमेंट, रबड तथा पेट्रोरासायनिक उत्पादन केंद्र दक्षिण अफ्रिका में केंद्रीकृत हो रहे हैं। अल्जेरिया, ट्युनिसिया, इंजिप्ट तथा जिंबाब्वे देशों में लोहा तथा इस्पात के उद्यम बंटे है। अफ्रिका के अन्य प्रमुख उद्यम हैं विद्युतयंत्र, परिवहन उपकरण, ट्रैक्टर निर्माण तथा युद्ध उपयोगी विमान का जोड़ना ।

@KIRS NOT TO BE REPUBLISHED

6. कीमती खनिज

हीरा तथा सोना: अफ्रिका महाद्वीप अधिक मात्रा में खनिज संपत्ति से समृध्द है। लेकिन कीमती खनिज हीरा, सोना तथा प्लाटिनम् का अधिक उत्पादन करते हैं।

हीरा (वज्र) : संसार के कुल हीरों के निक्षेप में 80 प्रतिशत भाग अफ्रिका में ही दिखाई देता है। बोट्सवान, जैरे तथा दक्षिण अफ्रिका अत्यधिक वज्र उत्पादक देश हैं। अंगोला, नामीबिया, घाना अन्य वज्र उत्पादक देश हैं। वज्र को कंकर वज्र तथा औद्योगिक वज्र नाम से विभाजित किया गया है। औद्योगिक वज्र को मुख्यत घिसनेवाले कागज़ तथा काँच काटने के उपकरण बनाने में उपयोग किया जाता है।



प्रमुख खनिज

©KEBS NOT TO BE REPUBLISHED

सोना : संसार का आधाभाग सोने के निक्षेप दक्षिण अफ्रिका में ही दिखाई देते हैं। सोना बँटवारे के मुख्यस्थान हैं-विट्वॉटर्सरैंड (ट्रॉन्सवाल) तथा आरेंज फ्री स्टेट राज्य हैं। इस महाद्वीप के कुल सोने के उत्पादन का 50 प्रतिशत से भी अधिक भाग दक्षिण अफ्रिका, जिंबाब्बे तथा कांगो (जैरे) गणतंत्र से आपूर्ति होती है।

7. जनसंख्या विकास, बंटवारा तथा घनत्व

यह माना गया है कि संसार में सर्वप्रथम मानव का दिखाई देना तथा उपकरणों का उपयोग करना अफ्रिका में ही सीखा है। मानवशास्त्रज्ञ तथा वैज्ञानिकों के मतानुसार होमोसेपियन अफ्रिका के कीन्या तथा इथियोपिया के पूर्व सरोवर के पास दिखाई दिये।

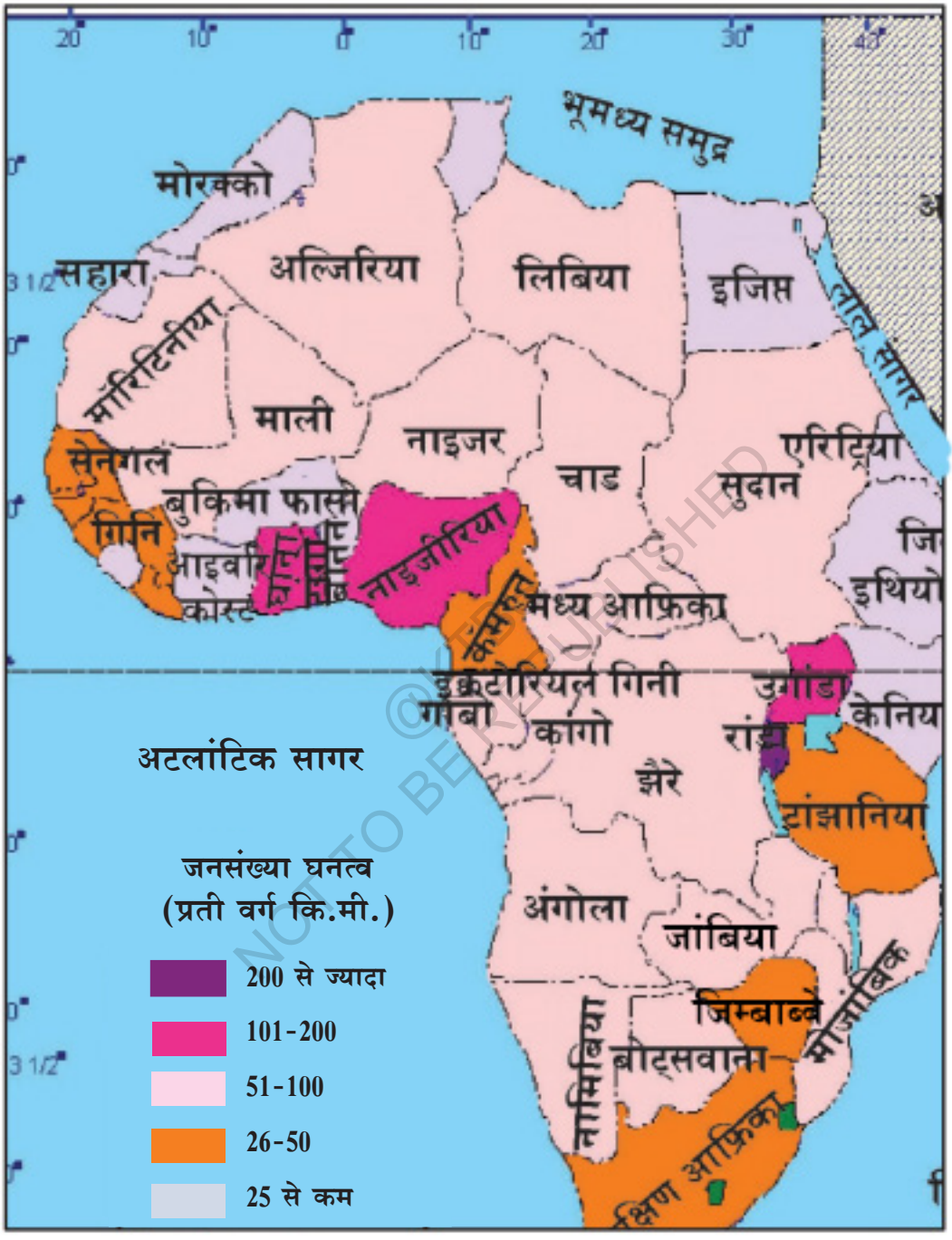
मुख्यतः नीग्रो तथा उनके मूल निवासी झुंड़ों से बने हैं। अब अफ्रिका विविध जन जाति तथा कुलवर्गों से युक्त है। इस महाद्वीप में विविध लोग, भाषा तथा संस्कृतियों का मिलन हुआ है।

लगभग 1051 मिलियन लोग अफ्रिका में रहते हैं। नैजीरिया, ईजप्ट, इथियोपिया, जैरे और दक्षिण अफ्रिका में बहुत जनघनत्व है। पिछले तीन दशकों में मृत्यु दर में कमी हुई है। इसका कारण अधिक खाद्य उत्पादन, दवा की आपूर्ति और स्वच्छता के प्रबंधन में सुधारण ही है। लेकिन जन्म दर की अधिकता, अधिक जन घनत्व के कारण है। अफ्रिका की बढ़ती हुई आबादी का दर, दुनिया के औसत से अथवा उससे भी ज्यादा है ।

कुछ देशों में जैसे सोमालिया, इथियोपिया, चाड़, नैजीरिया, माली में जीवितावधि बहुत कम है अर्थात् केवल 50 वर्ष मात्र है ।

विशेष बात यह है कि जनसंख्या का बंटवारा असमान है। अत्यधिक जनसंख्या अफ्रिका के गिनिया तटवर्ति प्रदेश, नैल नदी का खाई प्रदेश, पूर्व अफ्रिका का ऊँचे प्रदेश और मेडगास्कर तथा उत्तर के तटवर्ती दक्षिण अफ्रिका, जिम्बाब्वे तथा जैरे नगर खनन प्रदेशों में भरे हैं।

@KSEEB NOT TO BE REPUBLISHED



जनसंख्या वितरण

© KER PUBLISHED NOT TO BE REPUBLISHED

कम जनघनत्व मरुस्थल, पर्वत प्रदेश तथा भूमध्य रेखा के संरक्षित वन भागों में दिखाई देता है। लिबिया का सहारा तथा अल्जीरिया में कम जनघनत्व है। यहाँ की जनघनत्व हर क्षेत्रफल कि. मी. के लिए 15 जन है।

अफ्रिका के लोगों को चार भागों में विभजित कर सकते हैं -

1) पिग्मी, बुशमेन तथा मसाई, ये सहारा भूमि के दक्षिण भाग में निवास करते हैं ।
2) अरब, उत्तर अफ्रिका में निवास करते हैं।
3) इंडियन: दक्षिण तथा पूर्व अफ्रिका में निवास करते हैं।
4) यूरोपियन, दक्षिण अफ्रिका में तथा अन्य उपजाऊ मुहानों में निवास करते हैं ।

नये शब्द :

प्राय:द्वीप, खाड़ी, मरुस्थल, फटी कंदरा, सरोवर, जीवितावधि, जनघनत्व, भूमध्य रेखा, भूडमरुमध्य (थलसंधि), कर्कवृत्त, मकरवृत्त, सवन्ना ।

©KSEBS NOT TO BE REPUBLISHED

आपको ज्ञात रहे :

- नैल नदी का अधिकांश भाग सहारा मरुभूमि में बहता है। फिर भी वह कभी भी नहीं सूखता। इसका कारण है नैल नदी के जलान्वयन प्रदेश में अधिक वर्षा है।
- विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल सहारा है। यह अफ्रिका के उत्तर भाग को आवृत्त है।
- लिबिया के अल-अजीजिया में संसार में सबसे अधिक उष्णांश 50 सेल्सियस दाखिल होता है।
- बारहसिंगा नामक प्राणी, लंबे मुडे हुए सिंगों वाला हिरन है। यह पानी नहीं पीता, बदले में आवश्यक पानी को खाने के घास तथा वनस्पति से पाता है।

- अफ्रिका में बोयोबाब नामक पेड़ है। यह बोतल के आकार का होते हुए इसका तक पानी का संग्रह के लिए उभरा होता है। यह 1000 से 12000 लीटर पानी संग्रह करता है। जिन यात्रियों को पानी की आवश्यकता होती है। वे कभी-कभी इस पेड़ के पानी का उपयोग कर लेते हैं।
- संसार का 24 प्रतिशत भाग कॉफी का उत्पादन अफ्रिका से होता है।
- संसार का 50 प्रतिशत भाग से अधिक कोको का उत्पादन अफ्रिका करता है।
- पिग्मी संसार में ही सबसे अधिक नाटे कद के लोग हैं। वे कांगो कंदराओ में निवास करते हैं।
- अफ्रिका महाद्वीप के लोगों की प्रजनन शक्ति अधिक है। लेकिन उनकी अपेक्षित उम्र कम है।
- अफ्रिका महाद्वीप में 800 से अधिक भाषाएँ बोलनेवाले लोग हैं।
- अफ्रिका में ग्रामीण जनसंख्या अधिक है। यह कम नगरीकरण का महाद्वीप है।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उचित शब्दों से भरिए :

1. अफ्रीका को एक _____ महाद्वीप कहा जाता है ।
2. अफ्रीका की सबसे लम्बी नदी _____ है ।
3. अफ्रीका की सबसे ऊँचा शिखर _____ है ।
4. अफ्रीका का सबसे बड़ा पक्षी _____ है ।
5. सवन्ना मॉडल जलवायु क्षेत्र को _____ जलवायु क्षेत्र कहते हैं ।

II. समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए :

6. अफ्रिका को केंद्रीय भूमहाद्वीप कहते हैं। क्यों ?
7. भूडमरुमध्य भूमि या थलसंधि किसे कहते हैं? अफ्रिका का भूडमरुमध्य भूमि कौन-सा है?
8. अफ्रिका का खाई प्रदेश का नाम बताइए ।
9. अफ्रिका के अत्यंत ऊँचा पर्वत शिखर कौनसा है ?
10. अफ्रिका महाद्वीप के विविध वनस्पतियों को बताइए ।
11. अफ्रिका के प्रमुख खाद्य फसलें कौनसी है?
12. वज्र निक्षेप दिखाई देनेवाले आफ्रिका के देश कौन-कौन से है?

गतिविधियाँ

1. अफ्रिका महाद्वीप के कटी-फटी कंदरओं में स्थित प्रमुख सरोवरों को मानचित्र में पहचानिए ।
2. अफ्रिका की प्रमुख नदियाँ तथा पर्वतों को पहचानिए ।
3. कर्नाटक में बोयोबाब (बोतल के आकार का) वृक्ष के चित्र का संग्रह कीजिए।
4. अफ्रिका का बाराहसिंगा तथा हमारे भारतीय हिरन से तुलना कर लिखिए।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED